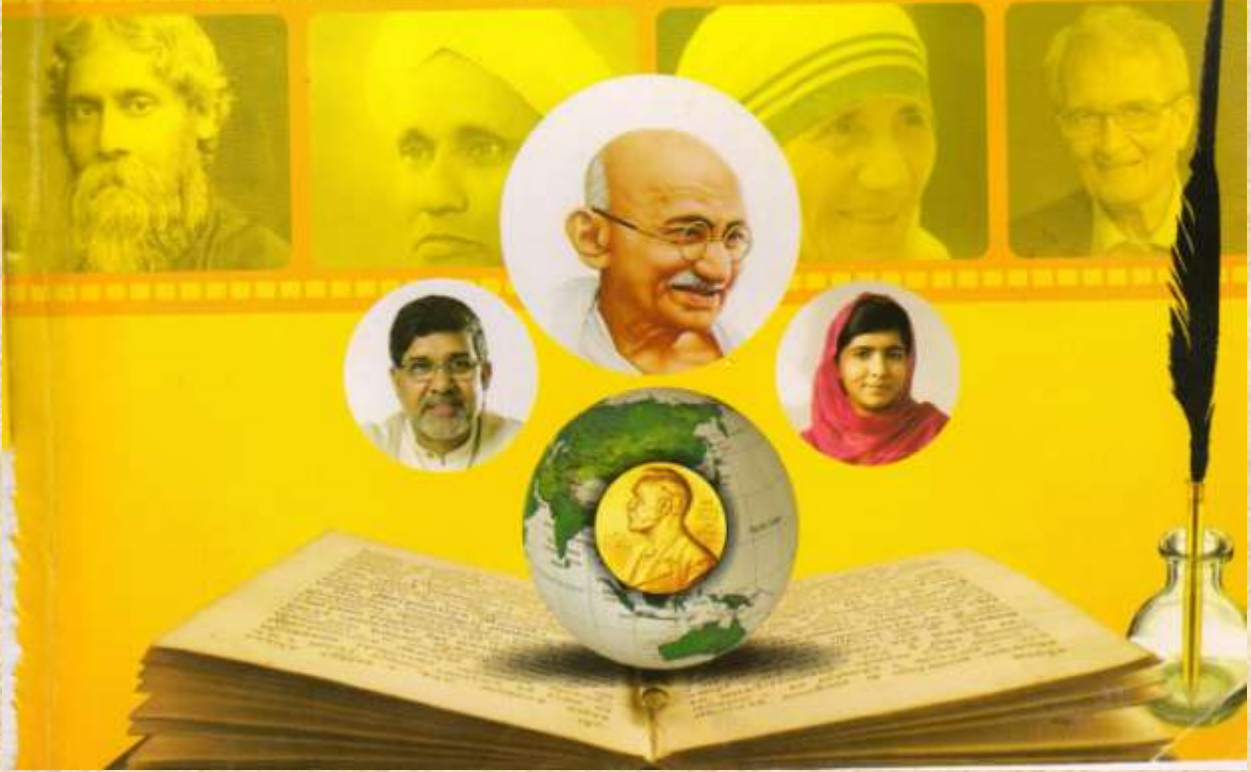




श्री.स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था कोल्हापूर, संचालित

**लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज ऑफ आर्ट्स,  
सायन्स अँड कॉमर्स, सातारा**

बहादुरीय २०१४-२०१५





## १३ वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभ ०२



प्रमुख पाहुण्या थोर समाजसेविका  
सौ.सिंधुताई सपकाळ (माई) यांचा सत्कार करताना  
प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



पारितोषिक वितरण समारंभ प्रसंगी विद्यार्थी-विद्यार्थिनींना  
सुसंस्कारपर मार्गदर्शन करताना  
मा.सौ.सिंधुताई सपकाळ (माई)



प्रमुख पाहुण्यांची ओळख करून देताना  
समारंभ कार्याध्यक्ष प्रा.डॉ.भरत सगरे



अध्यक्षीय भाषण करताना प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



पारितोषिक वितरण करताना आदरणीय सौ.सिंधुताई  
सपकाळ (माई) सोबत प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



समारंभ प्रसंगी उपस्थितांचे आभार व्यक्त करताना  
विद्यापीठ प्रतिनिधी-श्री.गौरव गाडे





श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर, संचालित  
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

# बहादुरीय

वार्षिक नियतकालिक २०१४-२०१५

## संपादक मंडळ

अध्यक्ष - प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ

प्रमुख संपादक - प्रा. बाळासाहेब जगताप

## विभागीय संपादक मंडळ

### वरिष्ठ महाविद्यालय

प्रा. बाळासाहेब जगताप .....	मराठी	प्रा. डॉ. विठ्ठल नाईक .....	हिंदी
प्रा. सचिन कांबळे .....	इंग्रजी	प्रा. श्रीमती डॉ. सुहासिनी राजेभोंसले ..	संस्कृत
प्रा. बसवराज माळी .....	अहवाल	प्रा. शेखर मोहिते .....	फोटो

### कनिष्ठ महाविद्यालय

प्रा. अरुण पोवार .....	मराठी	प्रा. शुभांगी निकम .....	हिंदी
प्रा. वैभव आगळे .....	इंग्रजी	प्रा. विद्या अंबवले .....	संस्कृत
प्रा. ज्योती इनामदार .....	अहवाल	प्रा. गीतांजली साळुंखे .....	फोटो
श्री. नेताजी साठे.....	प्रशासकीय सहाय्यक	श्री. एल. एन. कुंभार.....	वितरण व्यवस्था

मुद्रक-नॅशनल प्रेस, सातारा + संगणक-टाईप इनोव्हेटर्स, सातारा



## संस्थेची प्रार्थना



हरे राम हरे राम राम हरे हरे ।  
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

राम, कृष्ण, रहीम, ख्रिस्त, बुध्द, झरतुष्ट्र ।  
महावीर मानव संत मानव्यांचे दीपस्तंभ  
लीन दीन होऊन त्यांचे वंदूया चरण ॥

सत्य, शील, प्रामाणिकता,  
त्याग पिळवणुकीस आळा ।  
मानव्याचे अधिष्ठान  
ईशतत्त्व दर्शन ।



यांचे ज्ञान नि विज्ञान हाच सुसंस्कार ।  
विवेकाच्या आनंदाचा लाभ शिक्षणात ॥

शिक्षणमहर्षी प.पू.डॉ.वापूजी साळुंखे

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्  
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।  
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो  
भूयिष्ठां ते नमः उक्तिं विधेम ॥

ईशावारस्योपनिषद्



## श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

२१३०, ई वॉर्ड, ताराबाई पार्क, कोल्हापूर. फोन : (०२३१) २६५४६५३, १६५२७२०

### विश्वस्त मंडळ २०१२-२०१५

- |  |       |              |
|--|-------|--------------|
| ● मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे          | ..... | कार्याध्यक्ष |
| ● मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी मुरलीधर गावडे | ..... | सेक्रेटरी    |
| ● मा.पुंडलिक शामराव चव्हाण               | ..... | सहसचिव अर्थ  |
| ● मा.रा.कृ.कणबरकर                        | ..... | सदस्य        |

### व्यवस्थापक मंडळ

- |   |       |                            |
|---|-------|----------------------------|
| ● मा.नामदार आर.आर.पाटील (आबा)             | ..... | अध्यक्ष (१६-२-२०१५ पर्यंत) |
| ● मा.माजी.खा कलाप्पाण्णा बाबूराव आवाडे    | ..... | उपाध्यक्ष                  |
| ● मा.रघुनाथ मनोहर शेते                    | ..... | उपाध्यक्ष                  |
| ● मा.प्राचार्य अभयकुमार गोविंदराव साळुंखे | ..... | कार्याध्यक्ष               |
| ● मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी मुरलीधर गावडे  | ..... | सेक्रेटरी                  |
| ● मा.अशोक आबा करांडे                      | ..... | सहसचिव (प्रशासन)           |
| ● मा.पुंडलिक शामराव चव्हाण                | ..... | सहसचिव (अर्थ)              |
| ● मा.संपतराव रामचंद्र जेधे                | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.रवींद्र रामचंद्र चव्हाण              | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.रामचंद्र यशवंत पाटील                 | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.अविनाश दिनकर पाटील                   | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र विश्वनाथ शेजवळ | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.प्राचार्य डॉ.युवराज अंबादास भोसले    | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.सिताराम महारु गवळी                   | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.भूपाल शंकर कुंभार                    | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.प्राचार्य डॉ.हिंदूराव बाबूराव पाटील  | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.अशोक विठोबा रामुगडे                  | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.चंद्रकांत जयराम कालेकर               | ..... | सदस्य                      |
| ● मा.अविनाश नामदेव कदम                    | ..... | सदस्य                      |





शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे

## श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

२१३०, ई वॉर्ड, तारु बाई पार्क, कोल्हापूर. फोन : (०२३१) २६५४६५३, १६५२७२०

### आजीव सेवक मंडळ

● मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र विश्वनाथ शेजवळ	.....	अध्यक्ष
● मा.पुंडलिक शामराव चव्हाण	.....	सेक्रेटरी
● मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी मुरलीधर गावडे	.....	सदस्य
● मा.प्राचार्य डॉ.अशोक आबा करांडे	.....	सदस्य
● मा.अजित शंकर देसाई	.....	सदस्य
● मा.भूपाल शंकर कुंभार	.....	सदस्य
● मा.महादेव निवृत्ती गरुड	.....	सदस्य
● मा.डॉ.युवराज अंबादास भोसले	.....	सदस्य
● मा.अरुण बहिर्जी सुळगेकर	.....	सदस्य
● मा.सिताराम महारु गवळी	.....	सदस्य
● मा.भाऊसाहेब नानासाहेब सांगळे	.....	सदस्य





शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित  
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

**स्थानिक व्यवस्थापन समिती**

१.	मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे	.....	कार्याध्यक्ष
२.	मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी गावडे	.....	सचिव
३.	मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ	.....	पदसिध्द सचिव
४.	मा.आमदार शिवेंद्रसिंहराजे भोसले	.....	स्थानिक प्रतिनिधी
५.	मा.प्राचार्य पी.यू.शेट	.....	स्थानिक प्रतिनिधी
६.	मा.डी.आर.जाधव	.....	स्थानिक प्रतिनिधी
७.	मा.प्रा.डॉ.डी.आर.भुटीयानी	.....	प्राध्यापक प्रतिनिधी
८.	मा.प्रा.एस.ए.मोहिते	.....	प्राध्यापक प्रतिनिधी
९.	मा.प्रा.एम.बी.रासकर	.....	प्राध्यापक प्रतिनिधी
१०.	मा.एन्.बी.पाटील	.....	शिक्षकेतर प्रतिनिधी



प्रकटन

भारत सरकारच्या १९५६ प्रेस अॅण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्सच्या कायद्यातील ८ व्या नियमाप्रमाणे 'बहादुरीय' चे अधिकृत प्रकटीकरण

प्रकटन स्थळ	:	लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा.
प्रकटन काळ	:	वार्षिक
मुद्रकाचे नांव	:	स्वप्निल यादव
राष्ट्रीयत्व	:	भारतीय
पत्ता	:	नॅशनल ऑफसेट प्रेस, सातारा
प्रकाशकाचे नांव	:	प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ
पत्ता	:	लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा.
राष्ट्रीयत्व	:	भारतीय
संपादकाचे नाव	:	प्रा.बाळासाहेब जगताप
राष्ट्रीयत्व	:	भारतीय
पत्ता	:	लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा
मुखपृष्ठ संकल्पना	:	प्रा.मानवेंद्र जाधव
संगणकीय अक्षररचना	:	श्री.प्रशांत गुजर
राष्ट्रीयत्व	:	भारतीय
पत्ता	:	टाईप इनोव्हेटर्स, १९५, सदाशिव पेठ, सातारा.
नियतकालिकाची मालकी	:	मा.प्राचार्य, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा

मी डॉ.राजेंद्र शेजवळ प्राचार्य, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा जाहीर करतो की, सोबत दिलेली माहिती माझे माहिती प्रमाणे व समजुतीनुसार पूर्णपणे खरी आहे.

प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ

प्रकाशक

या अंकात व्यक्त झालेल्या मतप्रवाहाशी संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही. शिवाय या अंकातील साहित्य कृतीच्या स्वतंत्रतेची अन्य जबाबदारी संबंधित लेखकांची / लेखिकांची आहे.

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा.



## LAL BHADUR SHASTRI COLLEGE, SATARA

### SENIOR COLLEGE STAFF 2014-2015

#### ■ CHEMISTRY

- 1 Prin.Dr.R.V.Shejwal
- 2 Prof.Dr.C.P.Mane
- 3 Prof.Dr.A.M.Nalawade
- 4 Prof.Sou.R.A.Nalawade
- 5 Prof.D.V.Rupanwar
- 6 Prof.M.K.Sakate
- 7 Prof.P.M.Gaikwad
- 8 Prof.Miss N.S.Jadhav
- 9 Prof.Miss A.C.Sakpal
- 10 Prof.Miss P.S.Kadam

#### ■ ENGLISH

- 1 Prof.D.G.Salunkhe
- 3 Prof.P.P.Lohar
- 4 Prof.S.A.Kamble
- 5 Prof.M.S.Jadhav
- 6 Prof.S.G.Gurav

#### ■ MARATHI

- 1 Prof.B.S.Jagtap
- 2 Prof.A.M.Kasture

#### ■ SANSKRIT

- 1 Prof.Dr.Smt S.S.Rajebhonsale

#### ■ HINDI

- 1 Dr.B.D.Sagare
- 2 Prof.Dr.V.S.Naik

#### ■ GEOGRAPHY

- 1 Prof.M.B.Raskar
- 2 Prof.B.B.Bagal
- 3 Prof.B.M.Mali

#### ■ HISTORY

- 1 Prof.P.C.Chikmath
- 2 Prof.D.S.Jadhav

#### ■ SOCIOLOGY

- 1 Prof.H.V.Chame

#### ■ PSYCHOLOGY

- 1 Prof.S.M.Mestry

#### ■ ECONOMICS

- 1 Prof.I.B.Ahire
- 2 Prof.S.P.Kudale
- 3 Prof.R.P.Madane

#### ■ COMPUTER SCIENCE

- 1 Prof.Smt.S.S.Sawant

#### ■ POLITICAL SCIENCE

- 1 Prof.Mrs.S.P.Bainwad
- 2 Prof.D.S.Aawale

#### ■ COMMERCE

- 1 Prof Dr.D.R.Bhutyani
- 2 Prof.G.R.Waske
- 3 Prof.S.D.Borate
- 4 Prof.Smt.A.V.Horkeri

#### ■ STATISTICS

- 1 Prof.D.P.Wattamwar
- 2 Prof.S.K.Suryawanshi

#### ■ BOTANY

- 1 Prof.P.S.Jadhav
- 2 Prof.S.A.Mohite
- 3 Prof.R.R.Sabale

- 4 Prof.Smt.V.U.Nikam

- 5 Prof.Miss N.H.Ahiwale

#### ■ ZOOLOGY

- 1 Prof.Dr.R.G.Patil
- 2 Dr.V.B.Supugade
- 3 Prof.Miss.T.A.Jadhav
- 4 Prof.Miss S.M.More

#### ■ MATHEMATICS

- 1 Prof.Dr.S.M.Pawar
- 2 Prof.Miss.A.G.Jadhav
- 3 Prof.Miss M.P.Gite

#### ■ PHYSICS

- 1 Prof.Dr.A.E.Korade
- 2 Prof.Dr.N.L.Tarwal
- 3 Prof.S.A.Rasal

#### ■ MICROBIOLOGY

- 1 Prof.V.S.Patil.
- 2 Prof.N.A.Kadam.
- 3 Prof.V.B .Bhosale

#### ■ LIBRARIAN

- 1 Shri.L.N.Kumbhar

#### ■ PHYSICAL DIRECTOR

- 1 Prof. Dr.V.A.Jadhav

#### ■ M.LAW

- 1 Prof.S.S.Ghadge

#### ■ ENVIRONMENT

- 1 Prof.V.M.Bansode
- 2 Prof.A.B.Bhosale



**LAL BHADUR SHASTRI COLLEGE, SATARA**

**JUNIOR COLLEGE STAFF 2014-2015**

■ **ENGLISH**

- 1 Shri.S.U.Patil
- 2 Shri.S.N.Patil
- 3 Shri.S.B.Pawar
- 4 Shri .V.P.Agale
- 5 Shri.R.S.Koli
- 6 Miss. S. H. Khandait

■ **HISTORY**

- 1 Shri.G.G.Nimbekar

■ **ECONOMICS**

- 1 Shri.R.D.Yadav
- 2 Shri.L.G Badne

■ **MARATHI**

- 1 Smt.P.N.Harnol
- 2 Sou I.P.Pawar
- 3 Shri.A.G.Powar
- 4 Sou.J.P Inamdar (P.T.)
- 5 Shri.A.H.Khatal
- 6 Sou.D.S.Phalle

■ **HINDI**

- 1 Sou.S.S.Nikam

■ **SANSKRIT**

- 1 Smt.V.A.Ambavale

■ **GEOGRAPHY**

- 1 Shri B.S.Koli
- 2 Shri R.A.Lokare.( P.T.)
- 3 Smt.B.S.Nagane

■ **SOCIOLOGY**

- 1 Shri.U.H.Kamble

■ **POLITICAL SCIENCE**

- 1 G.S.Salunkhe

■ **COMMERCE**

- 1 Shri.V.S.Vahagaonkar
- 2 Shri.A.B.Khurd
- 3 Shri.P.M.Mhetre

■ **PHYSICAL  
EDUCATION**

- 1 Shri.V.V.Bhoi

■ **PHYSICS**

- 1 Shri.N.M.Karbhari
- 2 Shri.S.B.Patil
- 3 Smt.A.A.Thorat
- 4 Smt.U.M.Shelar
- 5 Miss V.V.Kanase
- 6 Sou.S.Y.Dusane

■ **CHEMISTRY**

- 1 Smt.S.K.Nimbalkar
- 2 Shri.M.D.Somjal
- 3 Shri S.A.Musale
- 4 Smt.V.S.Shinde
- 5 Shri.K.J.Inamdar

- 6 Smt.A.S.Bhosale

- 7 Sou.M.K.Powar

■ **BIOLOGY**

- 1 Sou.S.Y.Patane
- 2 Sou.M.S.Patil
- 3 Smt.J.S.Shinde
- 4 Smt.R.D.Pise
- 5 Shri S.S.Patil

■ **ENVIRONMENT  
SCIENCE**

- 1 Shri.P.D.Koli

■ **MATHEMATICS**

- 1 Shri.N.V.Patil
- 2 Smt.S.A.Shirke

■ **VOCATIONAL  
+ 2 STAGE**

- 1 Shri B.L.Surve (Ele)
- 2 Shri.S.S.Chavan
- 3 Mrs.P.Y.Kaware
- 4 Mrs.M.A.Kadam

■ **ELECTRONICS**

- 1 Miss S.S.Shinde
- 2 Miss S.M.Nalawade



**LAL BHADUR SHASTRI COLLEGE, SATARA**

**NON TEACHING STAFF 2014-2015**

■ **REGISTRAR**

1 Shri Sathe N.T.

■ **SUPRITENDENT**

1 Shri Patil N.B.

■ **HEAD CLERK**

1 Shri Sawant V.K..

■ **JUNIOR STENO**

1 Miss Bhosale A.B.

■ **SENIOR CLERK**

1 Shri Kadam D.E.

■ **JUNIOR CLERK**

1 Shri Mane S.B

2 Shri Kagwade A.B

3 Shri Ithape G.S.

■ **LABORATORY ASSISTANTS**

1 Shri Kadam A.N.

2 Shri Barge T.V.

■ **ASSISTANT LIBRARIAN**

1 Shri Damale R.G

■ **LIBRARY CLERK**

1 Shri Kumbhar H.J.

■ **LIBRARY ATTENDENT**

1 Shri Kamble D.L.

2 Shri Sutar M.A.

3 Shri Mane P.K.

4 Shri Mahadik P.B.

5 Shri Sabale P.A.

6 Shri Gaikwad V.J.

7 Shri Mane M.B.

8 Shri Jadhav S.S.

■ **LABORATORY ATTENDENT**

1 Shri.Shinde G.B.

2 Shri Chavan S.S

3 Shri Waske B.S

4 Shri Shinde D.A

5 Shri Phalke Y. S.

6 Smt Pawar R.V.

7 Shri Mane S.M

8 Shri Biraje A.B

9 Shri Shinde S.S

10 Shri Khawale S.J.

11 Shri Jadhav R.P.

12 Shri Kulkarni V.H.

13 Shri Desai S.S.

■ **PEONS**

1 Shri Ubale P.H.

2 Shri Pawar P.J.

3 Smt.Dighe A.S

4 Shri Lad D.A

5 Shri Kamble P.V

6 Shri Gade R.R.

7 Shri Kadam N.J.

(MCVC)

8 Shri Sapkal V.R.

(Cont.Bas)

9 Shri Kumbhar

S.B.(Cont.Bas)



# भावपूर्ण सिद्धांती



कै. मा. ना. आर. आर. (आबा) पाटील सो.  
अध्यक्ष, श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था कोल्हापूर



कै. मा. ना. गोपीनाथजी मुंडे सो.  
केंद्रिय मंत्री भारत सरकार



कै. कॉ. गोविंदराव पानसरे  
थोर पुरोगामी विद्यारथंत

कै. जगन्नाथ भिकू कुंभार ..... आजीव सेवक श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

कै. संग्राम ज्ञानदेव पवार ..... वरिष्ठ लिपिक

कै. वसुधा शिवाजीराव चव्हाण

कै. नानासाहेब भैरु पाटील

कै. विश्वनाथ काशिनाथ आगळे

कै. वसंत बापू मल्लकमिर

कै. विमल यशवंत देशमुख

याशिवाय सामाजिक, शैक्षणिक, राजकीय व कला,  
क्रीडा क्षेत्रातील ज्या ज्ञात-अज्ञात व्यक्तींचे निधन झाले  
तसेच देशाच्या रक्षणासाठी ज्या जवानांनी प्राणांची आहुती  
दिली, त्या सर्वांच्या आत्म्यास चिरशांती लाभो हीच  
विनम्र श्रद्धांजली !





## प्राचार्यांचे मनोगत

प्रिय वाचक मित्र हो !

'बहादुरीय' हा वार्षिक नियतकालिकाचा अंक आपल्या हाती देताना मला मनस्वी आनंद होत आहे. हा अंक म्हणजे शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मध्ये महाविद्यालयाने शैक्षणिक, सामाजिक, संशोधन, क्रीडा आदी क्षेत्रात घेतलेल्या गरुडझेपेचा आस्सा आहे. या अंकात माझ्या विद्यार्थी व गुरुदेव कार्यकर्त्यांनी विविध क्षेत्रात केलेल्या कार्यांचे, यशाचे प्रतिबिंब पाहावयास मिळेल. प्राचार्य, कुटुंबप्रमुख म्हणून माझ्या महाविद्यालयीन परिवाराचे कौतुक करताना, त्यांच्या पाठीवर कौतुकाची शब्दरूपी शाबासकी देताना मला विशेष आनंद होत आहे.

शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी सालुंखे यांनी 'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार' ही शिक्षणाची संजीवनी मानून श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेच्या माध्यमातून महाराष्ट्रासह कर्नाटक राज्यात ३७६ संस्कृती केंद्रातून ज्ञानदानाचे प्रारंभ केलेले पवित्र कार्य आजही सुरु आहे. या सुसंस्कारी प्रकाशातच १९६७ सालापासून विद्यार्थ्यांना ज्ञानदानाचे पवित्र कार्य करित असलेले संस्कृती केंद्र म्हणजे सातारा येथील लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय होय.

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय हे शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, संशोधन आदी क्षेत्रात वैभवशाली परंपरा जोपासणारे महाविद्यालय आहे. महाविद्यालयात कला, वाणिज्य, विज्ञान व किमान कौशल्यावर आधारित अभ्यासक्रम अशा शाखा आहेत. संगणक, इंटरनेट इत्यादी सर्व भौतिक, मूलभूत व आवश्यक सोयी सुविधा उपलब्ध आहेत. त्यामुळे महाविद्यालयात सुयोग्य शैक्षणिक वातावरण आहे.

शिक्षणामध्ये विद्यार्थ्यांच्या अंगी असणाऱ्या कला, कौशल्याची विद्यार्थ्यांना, त्यांच्या पालकांना जाणीव करून देणे आणि कौशल्ये विकसित करून विद्यार्थ्यांना स्वतःच्या पायावर उभे करणे हे महत्त्वाचे असते. ही जाणीव ठेवून महाविद्यालयात यु.जी.सी.विद्यापीठ, कम्युनिटी कॉलेज अंतर्गत विविध कोर्सेस सुरु आहेत. यु.जी.सी.चे कॉमर्स विभाग-Income Tax, इतिहास विभाग-Human Rights, वनस्पतीशास्त्र विभाग-Biodiversity and its conservation हे कोर्सेस सुरु आहेत. विद्यापीठ व महाविद्यालय अंतर्गत Spoken English, Travel and Tourism, Beauty Parlour and Personality Development, Mushroom Cultivation, Mehandi, संस्कृत उच्चारशास्त्र मार्गदर्शन वर्ग, Environmental Awareness असे कोर्सेस सुरु आहेत.

पारंपरिक शिक्षणाबरोबर व्यवसायाभिमुख शिक्षण विद्यार्थ्यांना देण्यासाठी महाविद्यालयात कम्युनिटी कॉलेज अंतर्गत Certificate Course in Cast Iron Foundry Technology व Certificate Course in Industrial Pollution and Waste Water Treatment कोर्सेस



सुरु आहेत. यासाठी यु.जी.सी.चे एक कोटी ३४ लाख रुपयांचे अनुदान प्राप्त झाले आहे. केंद्रशासनाच्या 'दिन दयाल उपाध्याय' योजनेअंतर्गत महाविद्यालयाने नुकतेच Diploma in Health Care and Nursing, Diploma in Green House Technology and Management, Diploma in Cast iron and Foundry Technology, Diploma in Industrial Pollution and Waste Water Treatment, Diploma in Industrial Safety, Renewable Energy Technologies, Certificate Course In Bank Profession, Travel and Tourism, Soil Water Analysis आदी कोर्सेस प्रस्ताव दाखल केले आहेत. तसेच महाविद्यालयाचा CPE अंतर्गत २ कोटीचा प्रस्ताव विद्यापीठ व यु.जी.सी.कडे दाखल केला आहे.

महाविद्यालयातील विद्यार्थी व प्राध्यापकांच्या संशोधन वृत्तीस प्रेरणा व दिशा देत महाविद्यालयात संशोधनाचे कार्य सातत्याने सुरु आहे. २० प्राध्यापकांच्या संशोधन प्रकल्पास .....लाखाचे अनुदान प्राप्त झाले. १४ प्राध्यापकांनी पीएच.डी. साठी रजिस्ट्रेशन केले आहे. तर इंग्रजीचे प्राध्यापक हे टिचर फेलोशिपनुसार पीएच.डी.चे काम करीत आहेत. हिंदी, संस्कृत, कॉमर्स, रसायनशास्त्र, प्राणीशास्त्र या विषयांचे M.Phil व Ph.D. चे मार्गदर्शन या केंद्रातून केले जाते. M.Sc.Part II (Analytical Chemistry), B.Sc.(Computer Sciences) चे वर्ग नव्याने सुरु झाले आहेत. महाविद्यालयात प्राणीशास्त्र, हिंदी व मराठी विभागांच्या राष्ट्रीय स्तरावरील कार्यशाळा यु.जी.सी.च्या अनुदानातून संपन्न झाल्या. महाविद्यालयाच्या वतीने शिवाजी विद्यापीठाच्या कायक्षेत्रात सर्वप्रथम अशी आंतरराष्ट्रीय परिषद श्रीलंका येथे दि.१९ ते २१ मे २०१५ रोजी International Conference on Science and Technology या विषयावर आयोजित केलेली आहे. या कार्यशाळेच्या आयोजनाचा For Society, ICSTS-2015 अभिमान वाटतो. विद्यापीठाच्या आविष्कार संशोधन स्पर्धेमध्ये विद्यार्थी सचिव गौरव गाडे याने द्वितीय क्रमांक मिळवत राज्यस्तरीय स्पर्धेमध्ये विद्यापीठाचे प्रतिनिधीत्व केले. महाविद्यालयातील प्राध्यापकांनी राष्ट्रीय स्तरावर-१६८ व आंतरराष्ट्रीय स्तरावर ३३ शोधनिबंध सादर केले आहेत. तसेच राष्ट्रीय स्तरावर १३६ व आंतरराष्ट्रीय स्तरावर ६० शोधनिबंध प्रसिध्द झाले आहेत.

ज्या विद्यार्थ्यांना नियमित शिक्षण घेता येत नाही अशा विद्यार्थ्यांना शिवाजी विद्यापीठाच्या दूर शिक्षण विभागामार्फत बहिस्थ विद्यार्थी म्हणून महाविद्यालयात प्रवेश दिला जातो. यावर्षी या विभागात १३४८ विद्यार्थ्यांनी प्रवेश घेतला आहे. यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठात १७६० विद्यार्थी तसेच नियमित ज्युनिअर-१७५२, सिनिअर-१९७८ असे एकूण ६८३८ विद्यार्थी महाविद्यालयात ज्ञानार्जन करीत आहेत. सिनिअर व ज्युनिअर महाविद्यालयांचे निकाल विद्यापीठ व बोर्डाच्या निकालाच्या टक्केवारीपेक्षा अधिक आहेत. विशेष अभिमानाची बाब म्हणजे प्राणीशास्त्र विभागात कु.भाग्यश्री बडे हिने शिवाजी विद्यापीठात प्रथम क्रमांक मिळविला. विद्यापीठाने तिचा डॉ.ए.टी.वरुटे मेमोरियल पुस्कार देऊन गौरव केला.



महाविद्यालयात वर्षभर विविध उपक्रम राबविण्यात आले. अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत विविध विषयांवर सहा कार्यशाळा घेण्यात आल्या. विद्यार्थी, पालक व समाजाची गरज ओळखून स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन केंद्र, प्लेसमेंट सेल, नेट-सेट मार्गदर्शन केंद्रे सुरु आहेत. प्लेसमेंट सेल मार्फत यावर्षी ४ कॅम्पस इंटरव्ह्यू घेण्यात आले यामध्ये ६५ विद्यार्थ्यांची विविध कंपनी, बँकांमध्ये निवड झाली ही बाब कौतुकास्पद अशी आहे.

महाविद्यालयीन जीवनातच विद्यार्थ्यांच्या अंगी असणाऱ्या कला, कौशल्ये, सुप्त गुणांचा विकास व्हावा, त्यांना योग्य संधी मिळावी या हेतूने वर्षभर विविध विभागामार्फत अनेकविध प्रकारचे उपक्रम राबविण्यात आले. सांस्कृतिक विभाग, विद्यार्थ्यांची विकास मंडळ, आविष्कार संशोधन समिती, प्राध्यापक प्रबोधिनी आदी महाविद्यालयांतर्गत विविध समित्यांनी आपापल्या विकासाचे कामकाज यशस्वीपणे पार पाडले. शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे राज्यस्तरीय वक्तृत्व, निबंध, चित्रकला, टॅलेंट सर्च परीक्षा या स्पर्धांना, विवेकानंद सप्ताह, जय जवान, जय किसान व्याख्यानमाला इ.उपक्रमांनाही उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला. इतिहास विभागाने आयोजित केलेला इतिहास महोत्सव, राज्यशास्त्र विभागाची विद्यार्थी संसद, ग्रंथालय विभागाचे-ग्रंथप्रदर्शनाचे सर्वांनी कौतुक केले.

राष्ट्रीय सेवा योजनेचा विद्यापीठात वेगळा असा नावलौकिक आहे. या विभागाने राबविलेल्या समाजोपयोगी उपक्रमाचा सर्वत्र वेगळा ठसा आहे. यावर्षी रस्ता सुरक्षा अभियानांतर्गत राबविलेल्या विविध उपक्रमांची दखल महाराष्ट्र शासनाने घेतली आणि या विभागास रस्ता सुरक्षा अभियानाचा उत्तेजनार्थ पुरस्कार प्राप्त झाला. एन.सी.सी. विभागाने यावर्षी ११ कॅम्प मध्ये भाग घेतला. युवा महोत्सवामध्ये जिल्हास्तरीय स्पर्धेमध्ये सुगमगायनास द्वितीय तर मूकनाट्य, समूहगीत, वादविवादमध्ये तृतीय क्रमांक मिळाला. मध्यवर्ती युवा महोत्सवासाठी दोन विद्यार्थ्यांची निवड झाली. विशेष म्हणजे कु.स्वराली लोटेकर हिला हार्मोनियममध्ये आंतरविद्यापीठीय स्पर्धेमध्ये सुवर्णपदक मिळाले. राज्यस्तरीय वक्तृत्व स्पर्धेत अमोल पाटील याने द्वितीय क्रमांक मिळविला. तसेच विद्यापीठस्तरीय प्रश्नमंजूषा स्पर्धेत महाविद्यालयास द्वितीय क्रमांक मिळाला. या सर्व विद्यार्थ्यांच्या यशामध्ये प्राध्यापकांचे, पालकांचे सहकार्य व मार्गदर्शन मोलाचे ठरले.

महाविद्यालयाचा क्रीडा विभाग नेहमीच दैदिप्यमान व उल्लेखनीय यश प्राप्त करित असतो. ज्युनिअर कॉलेजच्या प्रदीप सुळ याने कुस्ती, प्रतिका चोरट हिने आर्चरी या खेळांमध्ये सिल्व्हर पदक मिळविले. ज्युनिअरच्या ५ खेळाडूंनी राज्य, ०२ खेळाडूंनी राष्ट्रीय तर या खेळाडूंनी विभागीय स्पर्धांमध्ये सहभाग घेत यश मिळविले. सिनिअरच्या खेळाडूंना बॉक्सिंगमध्ये २ गोल्ड, जलतरण-५ सिल्व्हर, अॅथलेटिक्स-१ ब्रॉँझ, तायक्वांदो-१ सिल्व्हर अशी पदके मिळाली. वर्षभरात महाविद्यालयातील १०७ खेळाडूंनी विविध खेळांच्या स्पर्धांमध्ये सहभाग घेतला.

ज्युनिअर शास्त्र विभागाच्यावतीने सर्व विद्यार्थ्यांसाठी वर्षभर CET कोचिंग व क्रेँश कोर्सद्वारे अभिनव असा 'बहादुरीय पॅटर्न' सुरु केला आहे. महाविद्यालयातील ग्रंथालयात ६५



नियतकालिके, १५ वर्तमानपत्रे येतात. ग्रंथालयात ७१ हजार पुस्तके व ४० हजार संदर्भ ग्रंथ आहेत. ग्रंथालयात प्राध्यापक व विद्यार्थ्यांसाठी INFLIBNET सुविधा उपलब्ध असून ६ हजार ई-जर्नल्स व ७५ हजार ई-बुक्सचा उपयोगही वाचकांना होत आहे. ग्रंथालयातील कमवा आणि शिक्षा, बेस्ट वाचक पुरस्कार, बुक बँक या योजनाही उल्लेखनीय आहेत.

महाराष्ट्रातील प्रसिध्द समाजसेविका सिंधूताई सपकाळ यांच्या हस्ते वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभ झाला. यावेळी गुणवंत विद्यार्थी व खेळाडूंना गौरविण्यात आले. विविध कार्यक्रमांच्या निमित्ताने वर्षभरात महाविद्यालयात मा.श्री.खा.छ.उदयनराजे भोसले, मा.आ.श्री.छ.शिवेंद्रसिंहराजे भोसले, सिनेअभिनेते समृद्धी जाधव, नितीन देसाई, बाळकृष्ण शिंदे, मा.प्र.कुलगुरु डॉ.अशोक भोईटे, इत्यादींनी सदृच्छा भेट देऊन मार्गदर्शन केले.

महाविद्यालय व संस्थेच्या शैक्षणिक व सामाजिक प्रगतीत मोलाचे सहकार्य करणारे, सर्वांना आपले वाटणारे संस्थेचे माजी अध्यक्ष कै.आर.आर.आबा आपल्यात नाहीत. त्यांची या निमित्ताने आठवण होते. ईश्वरइच्छेपुढे कोणाचे काही चालत नाही हेच खरे. महाविद्यालयाच्या प्रगतीसाठी संस्थेचे कार्याध्यक्ष मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे, सचिव मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी गावडे यांचा मोलाचा वाटा आहे. त्यांच्या प्रेरणा व स्फूर्तीमुळेच महाविद्यालयाची वाटचाल प्रगतीपथावर चालू आहे. संस्थेचे सहसचिव (प्रशासन) प्राचार्य डॉ.अशोक करांडे, सहसचिव (अर्थ) प्राचार्य पी.एस.चव्हाण यांच्यासह आजिव सेवकांचे, विद्या समितीतील पदाधिकाऱ्यांचे वेळोवेळी मार्गदर्शन लाभत आहे.

'बहादुरीय' अंकाच्या माध्यमातून विद्यार्थी व गुरुदेव कार्यकर्त्यांना त्यांनी केलेल्या कार्याचा गौरव केला जातो. विद्यार्थी व गुरुदेव कार्यकर्त्यांना विविध क्षेत्रात कार्य करण्यासाठी हा अंक प्रेरणादायी ठरेल असे वाटते.

अंकाचे प्रमुख संपादक प्रा.बाळासाहेब जगताप आणि त्यांचे सहकारी संपादक मंडळ यांनी अत्यंत परिश्रमपूर्वक, चिकाटीने तसेच चोखंदळपणे लेख, कविता, कथा व चित्रे यातील नाविन्यता जपत 'बहादुरीय-२०१५' तयार केला आहे. यामधूनच उद्याचे भावी नवोदित कवी, लेखक, चित्रकार, कलाकार घडतील अशी मला आशा आहे. हा अंक आपल्यासमोर सादर करताना मला मनापासून आनंद होत आहे. आजपर्यंतच्या 'बहादुरीय' अंकाचे विद्यार्थी, पालक, गुरुदेव कार्यकर्त्यांनी उत्स्फूर्त स्वागत केले, प्रतिसाद दिला. त्याप्रमाणे या अंकाचेही आपण मनःपूर्वक स्वागत आणि कौतुक कराल ही अपेक्षा ! धन्यवाद !

**डॉ. राजेंद्र शेजवळ**

**प्राचार्य**

**लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा.**



## संपादकीय

प्रिय रसिक वाचक.....

श्री.स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित, लालबहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा या महाविद्यालयाच्या शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मधील 'बहादुरीय' या नियतकालिकाचा अंक आपल्या हाती देताना मला मनस्वी आनंद होत आहे.

“ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार” या तत्त्वज्ञानपर घेव्याच्या पायावर भक्कमपणे उभी असलेली श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था महाराष्ट्रातील खेड्यापाड्यातून, दऱ्याखोऱ्यातून, गोरगरीबांच्या झोपडीतून अज्ञानाच्या अंधाराला तिलांजली देऊन ज्ञानाचा दीप अखंडपणे तेवत ठेवणारी तसेच महाराष्ट्राला ज्ञानी, सुसंस्कारीत नागरिक देणारी एक महत्त्वपूर्ण संस्था आहे. सत्य, चारित्र्य, प्रामाणिकपणा, पिळवणूक प्रवृत्तीस आळा, सेवा आणि त्याग या जीवनमूल्यांची पूजा करून संस्थेतील गुरुदेव कार्यकर्ते ज्ञानदान करून राष्ट्रसेवा करित असतात. १९५४ साली स्थापन झालेल्या संस्थेने आज विशाल रूप धारण केलेले आहे. आज बापूजींचा वारसा घेऊन त्यांचे सुपुत्र आदरणीय मा.प्राचार्य अभयकुमार सालुंखे, कार्याध्यक्ष या नात्याने तर मा.प्राचार्या सौ. शुभांगीताई गावडे, सचिव या नात्याने अहोरात्र कार्यरत आहेत.

छत्रपतींच्या पदस्पर्शाने पुनित झालेल्या सातारा या ऐतिहासिक नगरीमध्ये आपल्या देशाचे माजी पंतप्रधान अमृतपुत्र लाल बहादूर शास्त्री यांच्या नावाने १९६७साली या महाविद्यालयाची मुहुर्तमेढ रोवली गेली. गेली ४७ वर्ष हे महाविद्यालय शास्त्रीजींच्या चारित्र्याचा व कर्तृत्वाचा आदर्श युवा पिढीपुढे अखंडपणे ठेवण्याचे कार्य करित आहे.

'बहादुरीय' नियतकालिक महाविद्यालयाचा आरसा आहे. सन २०१४-१५ या वर्षातील उपक्रमांचे, कामकाजाचे तसेच विद्यार्थी-विद्यार्थिनींच्या प्रतिभेचे ठसठशीत प्रतिबिंब बहादुरीयमध्ये पहावयास मिळते. बहादुरीय या नियतकालिकेच्या प्रत्येक पानापानात युवा ऊर्जा जाणवत राहते. भारतासारख्या देशाला समृद्ध करण्यासाठी तरुणांचे योगदान मोलाचे आहे. हे सांगत असताना “माझ्या तरुण मित्रांनो तुम्ही जर भूतकाळ उगाळीत बसलात तर अधुगतिकडे वाटचाल करा. याउलट भविष्य काळावर नजर ठेवून वर्तमान काळ निट जगलात तर तुमच्या भविष्यकाळाचा सुर्योदय विलोभनीय असणारच. मात्र हे सगळे करण्याकरिता आपल्याला सामर्थ्यवान, तेजस्वी व आत्मविश्वासपूर्ण तरुणांची पलटण उभारणे गरजेचे आहे. प्रत्येक भारतीयाने केवळ सुशिक्षित न बनता सुसंस्कृत बनले पाहिजे.” स्वामी विवेकानंदांच्या या विचाराप्रमाणे प्रत्येक विद्यार्थी आज आचाराने आणि विचाराने सुसंस्कृत बनलेला आहे. असे त्यांच्या लेखणीत दिसते तसेच सामाजिक, राजकिय, आर्थिक बदलाचे वारे लेखणीचा विषय बनतो आहे. आजचा विद्यार्थी परिस्थितीशी जागृत असल्याचे स्पष्ट होते. जीवन जगत असताना प्रश्नांची आलेली जाण आणि परिस्थितीचे राखलेले भान भविष्य काळात तरुण पिढी एक नवी वाङ्मयीन चळवळ नव्या प्रश्नांचे बळ घेऊन लेखन करेल, असा मला आत्मविश्वास वाटतो.



विद्यार्थ्यांच्या सुप्त कलागुणांचा बोलका आविष्कार म्हणजेच 'बहादुरीय' नियतकालिक होय. भविष्याचा वेध घेणारे अनेक साहित्यिक शोध यासारख्या अंकाच्या माध्यमातून पुढे येतात. बहादुरीय २०१४-१५ या अंकासाठी गतवर्षीप्रमाणे चालूवर्षीही महाविद्यालयातील नवोदित लेखक-कवींचा आम्हाला उदंड प्रतिसाद मिळाला. संपादक म्हणून एकच खंत व्यक्त करावी वाटते की 'बहादुरीय' अंकासाठी पृष्ठांची मर्यादा असल्याने 'निवडक' साहित्यच आपल्या समोर ठेवता आले. ज्या लेखन कलेचा समावेश या अंकात करता आला नाही अशांची संपादक मंडळ दिलगीरी व्यक्त करित आहे. ललित साहित्य, वैचारिक साहित्य व वैज्ञानिक साहित्य या त्रिवेणी संगमातून हा अंक प्रवाही होतो आहे, साकारतो आहे.

मराठी, संस्कृत, हिंदी, इंग्रजी या भाषांमधील संकलन व संपादन कार्यात या अंकाच्या विभागीय संपादकांनी मोलाचे योगदान दिलेले आहे. प्रा.डॉ. सुहासिनी राजेभोंसले, प्रा.डॉ. विठ्ठल नाईक, प्रा.डी.जी. साळुंखे, प्रा. सचिन कांबळे, प्रा. शेखर मोहिते, प्रा. बसवसराज माळी, प्रा. अरुण पोवार, प्रा. गीतांजली साळुंखे, प्रा. वैभव अगळे, प्रा. ज्योती इनामदार, प्रा. शुभांगी निकम, श्री. एल.एन. कुंभार तसेच प्रशासकीय सहाय्यक श्री. नेताजी साठे या सर्वांचा मी मनःपूर्वक आभारी आहे.

भविष्य काळाला यशाचे उज्वल पंख देणारे संस्थेचे कार्याध्यक्ष मा. प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे व सचिव प्राचार्या सौ. शुभांगी गावडे यांच्या प्रेरणेतून 'बहादुरीय'चा हा अंक साकारत असल्याने मी त्यांचा मनापासून ऋणी आहे. ज्ञान, विज्ञान, कला व साहित्य, प्रतिभा आणि उत्कृष्ट प्रशासक यांचा सुख संगम असणारे महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ यांच्या अचूक मार्गदर्शनाखाली वर्षभरात जे जे उपक्रम राबविले गेले त्याचे स्पष्ट प्रतिबिंब प्रस्तुत अंकात दिसते आहे.

अंक दर्जेदार होण्यासाठी मुखपृष्ठाच्या मौलिक सुचनेसाठी प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ, प्रा.डॉ.आर.जी. पाटील, प्रा. मानवेंद्र जाधव यांचा मी व्यक्तीशः आभारी आहे. छायाचित्र वेळेत उपलब्ध करून दिल्याने पिंटो फोटोचे शैलेश शिंदे याचा मी आभारी आहे. अंकाची मुद्रण व्यवस्था नॅशनल ऑफसेट प्रेसचे मालक श्री. स्वप्निल यादव आणि टाईप सेटिंग करणारे टाईप इनोव्हेटर्सचे श्री. प्रशांत गुजर यांचे हार्दिक आभार !

महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ तसेच वरिष्ठ व कनिष्ठ विभागातील सर्वच प्राध्यापकांनी मला या अंकाच्या संपादन कार्यात मौलिक सुचना व मार्गदर्शन केलेले आहे. त्याचबरोबर शिक्षकेतर कर्मचारी वर्गानेही या कार्यात मोलाची मदत केलेली आहे. सन २०१४-१५ मधील 'बहादुरीय' या अंकाचे रसिक वाचक उत्स्फूर्तपणे स्वागत करतील असा मला विश्वास वाटतो. जय बापूजी !

सर्वांचेच मनःपूर्वक आभार ! धन्यवाद !!

प्रा.बाळासाहेब जगताप  
प्रमुख संपादक 'बहादुरीय'



संस्थामाता



श्रीमती सुशीलादेवी गोविंदराव उर्फ बापूजी साळुंखे

कार्याध्यक्ष, श्री.स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर

जन्म : 08/09/1928

महानिर्वाण : 22/10/2013



**संस्था पदाधिकारी**  
श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर



संस्था अध्यक्ष  
मा.ना.आर.आर.पाटील (आबा) (१६/०२/२०१५ पर्यंत)  
गृहमंत्री, महाराष्ट्र राज्य



उपाध्यक्ष  
मा.खासदार कलाप्पाणा आवाडे



उपाध्यक्ष  
मा.श्री.रघुनाथ शेते



## संस्था पदाधिकारी

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर



कार्याध्यक्ष

मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे



सेक्रेटरी

मा.प्राचार्या सौ.शुभांगी गावडे



सहसचिव-प्रशासन

मा.प्राचार्य डॉ.अशोक करांडे



सहसचिव-अर्थ

मा.श्री.पुंडलिक चव्हाण



महाविद्यालयाचे कृतिशील प्राचार्य



प्राचार्य डॉ. राजेंद्र व्ही. शेजवळ

'बहादुरीय' संपादक मंडळ



अभिनेंदन



प्रा. डॉ. आर. जी. पाटील  
धामलंब (पट्टणा) येथील  
आंतरराष्ट्रीय परिषदेत शोधनिबंधाचे वाचन



प्रा. डॉ. भरत सगरे  
हिंदी साहित्य अकादमी मुंबई उत्कृष्ट शोधनिबंध  
प्रथम पुरस्कार व डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन  
'शिकार रत्न' पुरस्कार नागपूर



प्रा. डॉ. विकास जाधव  
शिवाजी विद्यापीठाची शारीरिक शिक्षण  
विषयात पीएच.डी. प्राप्त



## ३) शैक्षणिक सहल



भूगोल विभाग - शैक्षणिक सहल  
दक्षिण भारत (जोग वॉटरफॉल)



इंग्रजी विभाग - शैक्षणिक सहल  
पांचगणी, महाबळेश्वर



अर्थशास्त्र विभाग - 'वर्षा सहल'  
कासपठार (सातारा)



भौतिक शास्त्र विभागाच्या वतीने म्हैसूर,  
बेंगळूरु, उटी या शैक्षणिक सहलीमध्ये सहभागी  
विद्यार्थी-विद्यार्थिनी व प्राध्यापक



वनस्पती शास्त्र विभागाची शैक्षणिक सहल दापोली  
कृषी विद्यापीठ येथे रबर झाडाविषयी माहिती  
विद्यार्थ्यांना देताना - प्रा.आर.आर.साबळे



समाजशास्त्र विभागाच्या वतीने पांचगणी, महाबळेश्वर,  
प्रतापगड सहलीमध्ये सहभागी विद्यार्थी व प्राध्यापक



## विद्यार्थी संसद

सचिव



श्री. गौरव गाडे  
विद्यापीठ प्रतिनिधी (सांस्कृतिक विभाग)



कु. अश्विनी शिंदे  
वर्ग प्रतिनिधी बी.ए. ३



कु. पूजा शेळके  
वर्ग प्रतिनिधी बी.ए. भाग. २



श्री. सूरज बनसोडे  
वर्ग प्रतिनिधी बी.ए. १



कु. शीतल वाघ  
वर्ग प्रतिनिधी बी. कॉम. ३



श्री. भाग्योदय फडतरे  
वर्ग प्रतिनिधी बी. कॉम. २



कु. गीता माने  
वर्ग प्रतिनिधी बी. कॉम. १



श्री. स्वप्निल देशमुख  
वर्ग प्रतिनिधी बी. एस्सी. ३



श्री. निखिल नेलेकर  
वर्ग प्रतिनिधी बी. एस्सी. २



कु. आदिती देवर्षी  
वर्ग प्रतिनिधी बी. एस्सी. १



श्री. किरण नावडकर  
वर्ग प्रतिनिधी एम. एस्सी. २



श्री. अक्षय पाटील  
वर्ग प्रतिनिधी एम. एस्सी. १



श्री. प्रतीक साबळे  
एन्. सी. सी. प्रतिनिधी



श्री. विक्रम मोह्रर  
एन्. सी. सी. प्रतिनिधी



श्री. रोहन जाधव  
क्रीडा प्रतिनिधी



कु. ज्योती घव्हाण  
प्राचार्य नियुक्त



कु. राजश्री दीक्षित  
प्राचार्य नियुक्त



## विद्यालयाची शान : जिमखाना विभाग



जिमखाना विभाग आयोजित 'मेजर ध्यानचंद'  
या विषयावर भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन करताना  
मा.श्री.अभय चव्हाण  
(भारतीय संघ बास्केट बॉल, मार्गदर्शक)



ऑल इंडिया आंतर विद्यापीठ फुटबॉल स्पर्धेसाठी  
शिवाजी विद्यापीठ महिला फुटबॉल संघात  
कु.पल्लवी जाधव हिची निवड झाल्याने  
प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे खेळाडूचे कौतुक करताना.



मा.श्री.अभय चव्हाण महाविद्यालयीन  
खेळाडूंना मार्गदर्शन करताना



महाविद्यालयाच्या बतीने 'क्रीडा रत्नांचा' सत्कार सोहळा-  
मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ, मा.प्रा.डॉ.विकास जाधव  
(जिमखाना विभागप्रमुख)



सातारा विभागीय 'जलतरण' स्पर्धेचे उद्घाटक-  
श्री.कन्हैयालाल राजपुरोहित मार्गदर्शन करताना



'जलतरण' स्पर्धेतील एक क्षण



## राष्ट्रीय सेवा योजना N.S.S.



राष्ट्रीय सेवा योजना उद्घाटन समारंभ प्रमुख पाहुणे  
मा.अमोल तांबे अप्पर पोलीस अधीक्षक सातारा



शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांच्या स्मृती दिनानिमित्त  
राष्ट्रीय सेवा योजनेचे स्वयंसेवक रक्तदान करताना  
विद्यार्थ्यांची विचारपूस करताना-प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



सीमेवर लढणाऱ्या जवानांना बहिणीची माया 'रक्षाबंधन'  
उपक्रम-राख्या पाठविताना राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग  
प्राचार्य, विद्यार्थिनी, प्रकल्पाधिकारी



'अर्जिक्यतारा' (सातारा) पायथ्याला वृक्षारोपण करताना  
स्वयंसेवक, प्रकल्पाधिकारी व प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



'एडस् जनजागृती' उपक्रमांतर्गत  
मार्गदर्शन करताना-प्रा.डी.जी.साळुंखे



'राष्ट्रीय रस्ता सुरक्षा' सप्ताहानिमित्त  
विद्यार्थी स्वयंसेवक प्रशिक्षण घेताना



## राष्ट्रीय सेवा योजना N.S.S.

-विशेष श्रमसंस्कार शिबीर मौजे रेणावळे ता.जि.सातारा-



विशेष श्रमसंस्कार शिबीर मौजे रेणावळे उद्घाटक,  
मा.श्री.जितेंद्र सावंत-जि.प.सदस्य, सातारा  
प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ, प्राचार्य डॉ.अरुण गाडे



प्रा.डॉ.सुधीर इंगळे सामाजिक प्रबोधनपर  
आपले विचार व्यक्त करताना



विशेष श्रमसंस्कार शिबीरामध्ये  
'श्रमदान' करताना स्वयंसेवक



मौजे रेणावळे येथे 'वृक्षारोपण' करून स्मृती  
ठेवताना स्वयंसेवक व प्रा.डॉ.आर.जी.पाटील



नेत्रतपासणी करून सामाजिक बांधिलकी जोपासताना  
राष्ट्रीय सेवा योजनेचे स्वयंसेवक व डॉ.भंडारे



राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या समारोप प्रसंगी-श्री.किरण साबळे पाटील  
(जि.प.सदस्य, सातारा) यांचे स्वागत करताना स्वयंसेवक,



## राष्ट्रीय छात्र सेना N.C.C.



प्रा.सचिन कांबळे  
एन.सी.सी.  
विभागप्रमुख



कॅ.अमित रासकर  
सिनिअर  
अंडर ऑफिसर



कॅ.अश्विन निकम  
ज्युनिअर  
अंडर ऑफिसर



कॅ.अमर वेंदे  
ज्युनिअर  
अंडर ऑफिसर



कॅ.किरण मोकाशी  
एन.आय.सी.कॅम्प  
सहभाग (दिह्ली)



कॅ.राहुल सावंत  
बेस्ट कॅडेट



महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेनेसोबत मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ  
तसेच विभागप्रमुख प्रा.सचिन कांबळे



महाविद्यालयात एन्.सी.सी.व एन्.एस.एस. आयोजित  
'रक्तदान' शिबीरात रक्तदान करताना एन्.सी.सी.कॅडेट्स



'ए.एल्.सी कॅम्प आग्रा' येथे निवड झालेले राष्ट्रीय  
छात्रसेनेचे श्री.अमित रासकर, अमर वेंदे



महाविद्यालयाचे राष्ट्रीय छात्र सेनेचे आधारस्तंभ  
समवेत मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ,  
उपप्राचार्य प्रा.डॉ.आर.जी. पाटील  
तसेच विभागप्रमुख प्रा.सचिन कांबळे समवेत



## ३) भित्तिपत्रिका प्रकाशन ३



भित्तिपत्रिका प्रकाशन मराठी विभागाच्या वतीने शिक्षणहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांच्या स्मृती दिनानिमित्त 'मायबोली' भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन करताना-मा.प्रा.गीतांजली साळुंखे



भौतिकशास्त्र विभागाच्या वतीने भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन करताना-प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



संस्कृत विभागाच्या वतीने गुरुपौर्णिमेनिमित्त 'व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम' या भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन करताना मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



'मानसशास्त्र' विभागाच्या वतीने 'आभाळमाया' या भित्तिपत्रिकेचे जिल्हा वृध्दाश्रमात प्रकाशन करताना-मा.सौ.उषा जाधव (संचालिका)



भूगोल विभागाच्या वतीने 'भूमिपात' या भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन करताना-मा.हरिष पाटणे (दै.पुढारी)



राज्यशास्त्र विभागाच्या वतीने 'महाराष्ट्र रत्न' भित्तिपत्रिकेचे प्रकाशन करताना-प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



## अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत आयोजित कार्यशाळा



शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर व लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय सातारा यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित कार्यशाळा मार्गदर्शन करताना विद्यापीठ परीक्षा विभागप्रमुख मा.श्री.महेश काकडे



रसायनशास्त्र विभाग आयोजित अग्रणी योजनेअंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाळेचे उद्घाटन करताना वाय.सी.कॉलेज सातारचे प्राचार्य डॉ.नानासाहेब गायकवाड, प्रा.गजानन राशीनकर व इतर



अग्रणी योजनेअंतर्गत राज्यशास्त्र विभाग आयोजित 'स्पर्धा परीक्षा व राज्यशास्त्र' कार्यशाळेत मार्गदर्शन करताना प्रा.लॉरेन्स एम्.ए.



कॉमर्स विभाग आयोजित कार्यशाळेचे उद्घाटन करताना-प्रमुख पाहुणे-मा.श्री.डॉ.शरद साळुंखे



अग्रणी योजनेअंतर्गत कॉमर्स व इंग्रजी विभाग आयोजित- 'मुलाखतीचे तंत्र' कार्यशाळेत या विषयावर मार्गदर्शन करताना-मा.श्री.डॉ.एस्.एस्.भोला



'महिला सक्षमीकरण' या विषयावर कार्यशाळेत मार्गदर्शन करताना-डॉ.अपर्णा सदावर्ते



## १० असे वक्ते - असे विषय 'विचारमंथन'



“जय जवान जय किसान”  
‘शेती हीच खरी दौलत’  
या विषयावर ‘कृषीभूषण निसर्गकन्या  
कु.कुसुमताई करपे विचार व्यक्त करताना

लाल बहादूर शास्त्री स्मृती  
व्याख्यानमाला ‘जय जवान  
जय किसान’ उपस्थित श्रोते,  
गुरुदेव कार्यकर्ते व विद्यार्थी

‘स्वप्न आणि वास्तवता’ या विषयावर  
विचार व्यक्त करताना  
मा.कर्मल एस्.ए.वर्धन  
प्राचार्य सैनिक स्कूल, सातारा



इंग्रजी विभाग-शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे  
वाङ्मय मंडळ उदघाटन प्रसंगी-मा.प्राचार्य सुहास साळुंखे



संस्कृत विभाग-‘गीता जयंती’ निमित्त मार्गदर्शन  
वक्ते-मा.प्रा.आण्णासाहेब शिंदे



मराठी विभाग-मराठी वाङ्मय मंडळ उदघाटन  
उदघाटक-मा.शाहीर कवी थळेंद्र लोखंडे



‘तरुणांपुढील आव्हाने’ या विषयावर आपले विचार व्यक्त  
करताना-सुप्रसिध्द सिने अभिनेते मा.समृध्दी जाधव



## महाविद्यालयाचे लाल



कु.स्वराली लोटेकर  
'इंद्रधनुष्य' युवा महोत्सव संघात निवड  
हार्मोनियम वादन प्रकारात  
सुवर्ण पदक (ऑल इंडियापीठ)



श्री.सागर कुलकर्णी  
'इंद्रधनुष्य' युवा महोत्सव  
'बासरी वादन' निवड



श्री.अभिजीत बर्गे, बी.एस्सी.१  
ऑल इंडिया आंतर विद्यापीठ  
फुटबॉल स्पर्धेत म्वाल्हेर येथे निवड



श्री.गौरव गाडे  
'आदिष्कार' विद्यापीठ  
पातळीवर द्वितीय क्रमांक



कु.पल्लवी जाधव, बी.एस्सी.२  
ऑल इंडिया आंतर विद्यापीठ  
फुटबॉल स्पर्धेसाठी जयपूर येथे निवड



श्री.तुषार तरडे, बी.कॉम.३  
ऑल इंडिया आंतर विद्यापीठ  
बॉक्सिंग स्पर्धेसाठी जालंदर येथे निवड



श्री.ओमकार जाधव, बी.एस्सी.१  
ऑल इंडिया आंतर विद्यापीठ  
बॉक्सिंग स्पर्धेसाठी जालंदर येथे निवड



श्री.आधिराज शेळके, बी.एस्सी.१  
ऑल इंडिया आंतर विद्यापीठ  
सायकलिंग स्पर्धेसाठी अमृतसर येथे निवड



श्री.रोहन जाधव, बी.ए.२  
इंटर झोनल तायबवांदो  
स्पर्धेत सिल्व्हर मेडल



श्री.हरिश्चंद्र कारंडे, बी.ए.१  
झोनल कुरती स्पर्धेत ब्रॉझ मेडल



श्री.महेश डोणे, बी.ए.३  
झोनल स्विमींग स्पर्धेत द्वितीय



कु.सना शेख, बी.ए.१  
इंटर झोनल बॉक्सिंग स्पर्धेत ब्रॉझ मेडल



श्री.विष्णु कदम, बी.एस्सी.१  
इंटर झोनल आर्चरी स्पर्धेत पाचवा



श्री.अनिकेत बोडके, बी.एस्सी.१  
झोनल जलतरण ४×१०० फ्री स्टाईल रिले द्वितीय



श्री.समीर साबळे, बी.ए.३  
उत्कृष्ट कबड्डी खेळाडू



श्री.विजय चव्हाण, बी.कॉम.३  
झोनल जलतरण ४×२००  
फ्री स्टाईल रिले द्वितीय



श्री.शुभम घाडगे, बी.कॉम.१  
झोनल जलतरण स्पर्धेत  
५० मी फ्री स्टाईल द्वितीय



श्री.रुदल कदम, बी.ए.१  
झोनल अॅथलेटिक्स  
गोळाफेक तृतीय क्रमांक



कु.सुप्रिया खापे, बी.कॉम.३  
सातारा जिल्हा क्रिकेट संघात निवड



## विविध उपक्रम



सेवा निवृत्तीच्या निमित्ताने सेवा गौरव समारंभामध्ये सत्कार स्वीकारताना-प्रा.रमेशराव ओहोळ - मा.छत्रपती शिवाजीराजे भोसले यांच्या शुभ हस्ते



सेवा निवृत्तीपर 'सेवा गौरव' समारंभामध्ये सत्कार स्वीकारताना-प्रा.आर.ए.पाटील मा.प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ यांच्या शुभ हस्ते



५ सप्टें 'शिक्षक दिन व 'गुरुदेव गौरव सोहळा प्रसंगी मार्गदर्शन करताना मा.प्राचार्य अशोकराव भोईटे प्र.कुलगुरु शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर



'English Language Lab.' उद्घाटन प्रसंगी मा.प्राचार्या सौ शुभांगीताई गावडे सचिवा, श्री स्वा.वि.शि.संस्था, कोल्हापूर



वाणिज्य मंडळ उद्घाटन प्रसंगी राष्ट्रपती पदक विजेते महाविद्यालयाचे माजी विद्यार्थी, श्री.ओंकार निरगुडकर



मराठी भाषा गौरव दिन प्रसंगी प्रमुख पाहुणे-प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



## १० विविध उपक्रम



भारत स्वच्छता अभियानातर्गत महात्मा गांधी जयंती निमित्त 'परिसर स्वच्छतेची शपथ घेताना' - मा.प्राचार्य व गुरुदेव कार्यकर्ते तसेच विद्यार्थी-विद्यार्थिनी



प्राणीशास्त्र विभागाच्या राष्ट्रीय चर्चासत्र प्रोसिडींगचे प्रकाशन करताना मा.आमदार शिवेंद्रराजे भोसले, मा.प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे व मान्यवर



हिंदी विभाग आयोजित राष्ट्रीय चर्चासत्राचे बीजभाषण करताना मा.डॉ.इंद्रबहादुरसिंह मिर्झापूर



माँजे रेणावळे ता.जि.सातारा या गावचे सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण करताना अर्थशास्त्र विषयाची विद्यार्थिनी



महाविद्यालयात रिलायन्स लाईफ इन्शुरन्स आयोजित प्लेसमेंट सेल कार्यक्रमात मार्गदर्शन करताना-प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



जिल्हास्तरीय आविष्कार संशोधन स्पर्धेत भाग घेतलेले स्पर्धक आणि समिती सदस्य श्री.गौरव गाडे बी.ए.भाग ३ याने सदर स्पर्धेत द्वितीय क्रमांक प्राप्त केला.



१०) वर्ग प्रतिनिधी - ज्युनियर विभाग



रविराज रमेश मोरे  
११ वी कॉमर्स



शशिकांत सुरेश सपकाळ  
११ वी आर्ट्स



कु.जान्हवी मुतालीक  
११ वी सायन्स



मुस्कान हमीद सय्यद  
१२ वी कॉमर्स



प्रमोद लहुराज सोनटक्के  
१२ वी आर्ट्स



सुहेब नईम शेख  
१२ वी सायन्स

अभिनंदन



MH-CET परीक्षेत कु.वरदा घाडगे यांनी  
प्रथम क्रमांक प्राप्त केल्याबद्दल सत्कार करताना-  
मा.माजी प्राचार्य पुरुषोत्तम शेठ  
सोबत प्रा.डॉ.राजेंद्र शेजवळ



ज्युनियर सायन्सची विद्यार्थीनी प्राची जवळकर  
हिला स्काऊट गाईडचे राष्ट्रपती पारितोषिक  
जाहीर झाल्याबद्दल प्राचार्यांच्या हस्ते सत्कार



७३ ज्युनियर विभाग - विविध उपक्रम



श्री स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताहानिमित्त  
मार्गदर्शक श्री.वासुदेव कुलकर्णी  
व डॉ.शरदचंद्र साळुंखे



श्री स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताहानिमित्त  
आयोजित कार्यक्रमात मा.डॉ.महेश गायकवाड



श्री स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताहामध्ये  
व्याख्यानाचा आनंद घेताना श्रोते



महाविद्यालयाच्या वतीने आयोजित १२ वी विज्ञान  
शिक्षक-पालक मेळाव्यात मार्गदर्शन करताना-  
मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ



महाविद्यालयाच्या वतीने आयोजित ११ वी विज्ञान  
विभागाचा शिक्षक-पालक मेळावा  
मार्गदर्शक प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



शिक्षक-पालक मेळाव्याप्रसंगी पालकांचे स्वागत करताना-  
प्रा.सौ.आय.पी.पवार, अध्यक्ष : प्रा.डी.जी.साळुंखे



## शैक्षणिक सहल व विविध उपक्रम



ज्युनियर कला-वाणिज्य विभाग  
नायगाव येथील स्मारकास भेट



शैक्षणिक सहलीदरम्यान श्रीक्षेत्र बनेश्वर येथे सहभागी  
कला-वाणिज्य विभागातील विद्यार्थी व प्राध्यापक



प्राध्यापक प्रबोधिनी - ज्युनियर विभाग 'ऐतिहासिक सातारा'  
या विषयावर बोलताना प्रा.प्रतिमा चिकमठ व ज्यु.विभाग प्रमुख  
प्रा.सौ.आय.पी.पवार, प्रा.व्ही.एस.वहागावकर आणि इतर



प्राध्यापक प्रबोधिनी अंतर्गत 'समाज क्रांतीकारक  
छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज' या विषयावर मार्गदर्शन  
करताना प्रा.उत्तम कांबळे



'सदाफुली' या भितीपत्रिकेचे उद्घाटन करताना  
प्र-कुलगुरु डॉ.अशोकराव भोईटे व  
मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ व इतर प्राध्यापक



JEE-MHCET व्याख्यान मालेत गणित विषयाचे  
मार्गदर्शन करताना प्रा.डी.बी.सुतार



## १०० ज्युनियर विभाग - विविध उपक्रम १३



श्री स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताहानिमित्त  
मार्गदर्शक श्री.वासुदेव कुलकर्णी  
व डॉ.शरदचंद्र साळुंखे



श्री स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताहानिमित्त  
आयोजित कार्यक्रमात मा.डॉ.महेश गायकवाड



श्री स्वामी विवेकानंद जयंती सप्ताहामध्ये  
व्याख्यानाचा आनंद घेताना श्रोते



महाविद्यालयाच्या वतीने आयोजित १२ वी विज्ञान  
शिक्षक-पालक मेळाव्यात मार्गदर्शन करताना-  
मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ



महाविद्यालयाच्या वतीने आयोजित ११ वी विज्ञान  
विभागाचा शिक्षक-पालक मेळावा  
मार्गदर्शक प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ



शिक्षक-पालक मेळाव्याप्रसंगी पालकांचे स्वागत करताना-  
प्रा.सौ.आय.पी.पवार, अध्यक्ष : प्रा.डी.जी.साळुंखे



## १० ज्युनियर क्रीडा वैभव १२



प्रा. व्ही. व्ही. भोई  
ज्यु. जिमखाना प्रमुख



प्रदीप सूळ  
कुस्ती राष्ट्रीय स्पर्धेत द्वितीय (दिल्ली)



कु.प्रतिक्षा चोरट  
आर्चरी राष्ट्रीय स्पर्धेत द्वितीय  
(गुवाहाटी - आसाम)



तेजस यादव  
क्रीडा क्षेत्रातील 'खाशाबा जाधव'  
पुरस्कार विजेता (सातारा)



शिवशंकर चोरट  
राज्यस्तरीय आर्चरी स्पर्धेसाठी निवड  
(नांदेड)



विकास सुळ  
राज्यस्तरीय ज्युदो स्पर्धेसाठी निवड  
(परभणी)



नामदेव कचरे  
राज्यस्तरीय कुस्ती स्पर्धेत उपविजयी (यवतमाळ)



राष्ट्रीय, राज्य, विभाग पातळीवरील स्पर्धाद्वारे  
महाविद्यालयाचा नावलीकिक वाढविणारे खेळाडू,  
मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचेसोबत



## १० ज्युनियर क्रीडा वैभव १२



आर्चरी खेळातील राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय खेळाडूंचा प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ सत्कार करताना सोबत प्रा.व्ही.व्ही. भोई व डॉ.व्ही.ए.जाधव



कुस्ती खेळातील राष्ट्रीय स्तरावर उपविजयी ठरलेला प्रदीप सुळगा सत्कार करताना प्रमुख पाहुण्या सिंधुताई सपकाळ सोबत प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ



क्रीडा क्षेत्रातील 'खाशाबा जाधव' पुरस्कार विजेता तेजस यादव यांचा प्रमुख पाहुण्या सिंधुताई सपकाळ यांच्या हस्ते सत्कार



रायफल शूटींग खेळातील राज्यस्तरीय स्पर्धेसाठी निवड झालेला प्रवीण साळुंखे यांचा प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या हस्ते सत्कार



सातारा येथील राज्यस्तरीय क्रिकेट-हॉकीसंग स्पर्धेसाठी निवड झालेला सोमेल कांबळे यांचा प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ हस्ते सत्कार, सोबत ज्यु.विनयाना प्रमुख प्रा.व्ही.व्ही. भोई व डॉ.व्ही.ए.जाधव



विशेष अभिनंदन !

कु.सायली दीपक जाधव

- महाराष्ट्र सामान्य समाजकल्याण विभाग पुरे विशेष गुणवत्ता पुरस्कार
- किराडी विद्यापीठ सेंट्रल स्पोर्ट्स मॅगझीन
- केंद्रशासन - हिंदी विषयाची स्पर्धास्तरीय



बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

मराठी  
विभाग

(वरिष्ठ महाविद्यालय)

विभागीय संपादक  
प्रा.वाळासाहेब जगताप

लाल बहादूर शास्त्री



'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ.वापूजी साळुंखे

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय  
सातारा



“ध्येय निश्चित होतं  
उद्देश पक्का होता  
त्यामुळे खेड्यातल्या  
खाचखळ्यांच्या  
काट्याकुट्यांनी भरलेल्या  
पायवाटेवरून अनवाणी  
चालत जाताना  
दुःख जाणवत होतं  
पण मस्तकावर  
आईचा आशीर्वाद होता  
आणि मनाला हातातल्या  
पुस्तकांचा आधार.  
- आर. आर. पाटील (आबा)



## अनुक्रमणिका

### गद्य विभाग

१) भ्रष्टाचारमुक्त प्रशासन	कु.गीता सुरेश माने	प्रथम वर्ष, वाणिज्य	१७
२) मी माळीण गाव...उषःकाल होता होता काळरात्र झाली	कु.पूजा अरुण स्वामी	प्रथम वर्ष, वाणिज्य	२०
३) बाप... एक वटवृक्ष !	कु.सोनाली हणमंत चव्हाण	तृतीय वर्ष, कला	२२
४) आदिम नातं	कु.मेघा हरिचंद्र संघेती	प्रथम वर्ष, कला	२४
५) भूमिपात : संकट निसर्गनिर्मित की मानवनिर्मित	कु.राजश्री धनंजय दीक्षित	तृतीय वर्ष, कला	२६
६) नैराश्य	कु.पूजा संजय चव्हाण	तृतीय वर्ष, कला	२९

### पद्य विभाग

१) रत्नपारखी	कु.अस्मिता विजय जाधव	प्रथम वर्ष, कला	२१
२) क्षण	कु.त्रिवेणी शिवाजी काळे	प्रथम वर्ष, वाणिज्य	२१
३) देवाने द्यावे आयुष्य	कु.सहेर नजीर शेख	प्रथम वर्ष, कला	२५
४) नव वधू	कु.चित्रा नंदु लोखंडे	प्रथम वर्ष, वाणिज्य	२८
५) आयुष्य	रोहीत लक्ष्मण फडतरे	प्रथम वर्ष, वाणिज्य	३१
६) स्वप्न.....	कु.उज्ज्वला महेंद्र शिंदे	प्रथम वर्ष, कला	३२
७) आयुष्याच्या वळणावर	कु.पूजा सुरेश सायनाकर	द्वितीय वर्ष, विज्ञान	३२
८) तू लढावं.....	कु.सोनाली हणमंत चव्हाण	तृतीय वर्ष, कला	३३
९) तुझ्या बांगड्यांचा आवाज	कु.कोमल अशोक माने	प्रथम वर्ष, कला	३३
१०) मायेची भूक	सुनील पंडित	प्रथम वर्ष, कला	३४
११) जीवन	कु.शीतल रमेश भिलारे	तृतीय वर्ष, कला	३४
१२) मित्र मोठे होऊ लागलेत !	मयूर प्रकाश सावंत	प्रथम वर्ष, कला	३५
१३) एक मेंढरू	अजिंक्य मच्छिंद्र शिंदे	तृतीय वर्ष, कला	३५
१४) वादळापूर्वीची शांतता.....	अतुल शामराव कुंभार	प्रथम वर्ष, एम.एस्सी	३६
१५) भीक नको पण.....	किरण श्रीरंग जानकर	द्वितीय वर्ष, कला	३६





## भ्रष्टाचारमुक्त प्रशासन

कु. गीता सुरेश माने, प्रथम वर्ष, वाणिज्य

आज समाजात अनेक प्रकारच्या समस्या निर्माण झाल्या आहेत. आज एकविसाव्या शतकात एक भस्मासूर फार माजला आहे. या भस्मासुराच्या समस्येचे नवीन नाव आहे भ्रष्टाचार !

अनेक लोकांकडून भ्रष्टाचार घडतो आहे. यशवंतराव चव्हाण यांनी आपल्या पुस्तकात युवकांना प्रेरणा देवून आव्हाने पेलण्याची ताकद निर्माण केली आहे. आजचा तरुण हा दुबळा, अपंग बनला आहे. तरुणाने नेहमी ध्येय, आव्हाने शोधत फिरले पाहिजे. आज आपल्या देशात अनेक क्षेत्रात भ्रष्टाचार माजले आहेत. त्यामुळे सामान्य माणसाला जीवन जगणे अशक्य झाले आहे. आज वर्तमान पत्रांतून तर नित्य नवा आर्थिक घोटाळा जाहीर होत असतो त्यामुळे भ्रष्टाचार हा आता समाजापुढील एक नवीन आव्हान म्हणून डोके वर काढू लागला आहे.

बदलत्या काळात या भस्मासुराने वेगाने प्रगती केल्याने अगदी खेडोपाडी, ग्रामीण भागातही हा भस्मासूर माजत चालला आहे. आज या आव्हानाची पाळेमुळे समूळ नष्ट करण्याची आपणांस गरज आहे. आज आपल्या समाजात मोठ्या प्रमाणात भ्रष्टाचार माजला आहे. त्याची कारणे कोणती ? ती शोषण्याचा कोणीही प्रयत्न करत नाही. त्याचे कारण आहे जनता. ही 'जनता' भ्रष्ट नेत्यांना निवडून देते. हे भ्रष्ट नेते रोज नवा घोटाळा करून राष्ट्राच्या एकतेस बाधा आणत आहेत. अशा या भ्रष्ट नेत्यांवर आपण आयुष्यभर डोळे झाकून विश्वास ठेवतो.

भ्रष्टाचार ही मानव समाजाला लागलेली कीड आहे. आज आपल्या समाजात असे एकही क्षेत्र, करिअर नाही की तेथे भ्रष्टाचार चालत नाही. आज समाजात बेकारी वाढली. त्याचे कारण कोणते तर भ्रष्टाचार. बेकार तरुणांना नोकरीसाठी खूप पैसा भरावा लागतो. तो पैसा मिळवताना त्यांना खूप कष्ट करावे लागतात पण पैसा भरूनही नोकरी लागेल की नाही याची शाश्वती नसते. आज ग्रामीण भागात एखादा दाखला (कागदपत्र) आणण्यासाठी तलाठी, ग्रामसेवक, सरपंच यांकडे गेले असता प्रथम त्याच्या चहापाण्याची व्यवस्था म्हणून त्यांना पैसे द्यावे



लागतात. तो गरीब अडाणी व्यक्ती आपल्या गरजेपोटी ही मागणी पूर्ण करतो. आज कोणतीही परीक्षा, नोकरी, जॉबमिशन, भरती करताना पैशाची मागणी केली जाते. त्यामुळे व्यक्ति पूर्णपणे निराश बनते.

तहसील कार्यालयात पैशांचा पाऊस पडतो. हे का ? व कशामुळे ? आज इलेक्शनला उमेदवार हा निवडून घेताना मोठं मोठी आश्वासन देतो व नंतर तो आपला खिसा भरत राहतो. पोलीस भरती करताना उमेदवाराच्या पात्रतेचा, गुणांचा विचार न करता पैशांच्या जोरावर नोकरी, प्रवेश दिला जातो. हे का व कशामुळे होते ? सरकार या भ्रष्ट अधिकाऱ्यांना पगार, वेतन देते. मग का ही पिढवणूक (अडवणूक) ?

ही पिढवणूक माणसानेच निर्माण केली. आज त्याचे प्रमाण अती झाले आहे. भ्रष्ट व्यक्तींनी आज समाज पोखरून टाकला आहे. या समाजात पूर्वी असणारे मजबूत खांब, मजबूत भिंती या भ्रष्ट अधिकाऱ्यांनी पोखरून काढल्या आहेत.

ज्यावेळी हे अधिकारी एखादे काम करतात. त्यावेळी त्यांना कामाच्या बदल्यात एखाद्या वस्तूचा पुरवठा करणे पूर्णपणे चुकीचे आहे. आज सरकारने यावर टोस पावले उचलली असली तरी त्या अधिकाराचा योग्य वापर होतो का ? हे प्रथम तपासले पाहिजे. प्रत्येक अधिकारी भ्रष्ट नसतो. कोणत्याही गोष्टीची हाव ही माणसाला लाच घेण्यास भाग पाडते. म्हणून माणसाने मोह, मत्सर, द्वेष, हेवा टाकून, महात्मा गांधींच्या विचारांप्रमाणे सत्य, अहिंसा या मार्गाचा अवलंब करावा. मानवाने आपली प्रगती स्वतःच रोखली आहे. शिक्षण, नोकरी ही फक्त श्रीमंतांचीच मक्तेदारी बनू पाहत आहे. हे आज आपण २१ व्या शतकात वास्तवता पाहत आहोत. आपण सर्व स्वतंत्र भारताचे नागरिक आहोत. आपल्या डोक्यांसमोर असणारे अनेक नेते, समाजसुधारक यांचे कार्य लक्षात घेवून आपण पुढील

पिढीला आदर्श मूल्यांची जोपासना कशी केली पाहिजे हे वर्तनातून दाखवून दिले पाहिजे.

भ्रष्टाचार करणे हा गुन्हा आहे. तो करणाऱ्याला शिक्षा ही झालीच पाहिजे. तरच सर्व क्षेत्रांत सर्वांना समान संधी मिळून आपली व आपल्या देशाची प्रगती होवू शकेल. या भ्रष्टाचारापासून समाजाला वाचवले पाहिजे तरच आपला भारत, आपला हा देश भ्रष्टाचार मुक्त होवून आपली प्रगती होईल.

एक राक्षस होता. त्याने तपस्या करून शंकराला प्रसन्न केले. शंकरानं त्याला वरदान दिले की तो जो कुणाच्या डोक्यावर हात टेवील तो जळून मरून जाईल. नंतर त्या राक्षसानं तसच चालू केलं आणि म्हणून त्याचं नाव 'भस्मासूर' पडलं.

'भ्रष्टाचार' पण तसाच एका भस्मासुराप्रमाणे आहे. आज या भ्रष्टाचारामुळे आपल्या जीवनातील श्रेष्ठ मूल्ये, आदर्श, चांगले संस्कार भस्म झालेले आहेत. आज भ्रष्टाचार सर्व क्षेत्रांत पसरलेला आहे. शिक्षणात सुद्धा भ्रष्टाचार आहे. बिना डोनेशन शाळेत मुलाला प्रवेश दिला जात नाही. आज शाळा, कॉलेज, दुकाने बनली आहेत. पैशांसाठी प्रश्नपत्रिका विकल्या जात आहेत. पैसे देऊन पास केलं जात आहे. मार्क्स वाढवले जात आहेत. हजारो-लाखो रूपये देऊन बिना परीक्षा देता आज डिग्री मिळू लागली आहे.

हे झाले शिक्षणातील. पण बाजारात सुद्धा सर्वत्र भ्रष्टाचार आहे. आज खाण्या-पिण्याच्या वस्तूत सुद्धा भेसळ आहे. दुधात पाणी आहे का, पाण्यात दूध हे कळत नाही. हे तर काहीच नाही. आज कृत्रिम दूधसुद्धा मिळू लागलं आहे.

आज सरकारने सरकारी नोकरांचा इतका पगार वाढवला तरी त्यांना तो कमीच पडतोय. कोणतेही सरकारी काम करायला कचेरीत गेलं तर द्या पैसे, लगेच



काम करतो. म्हणजेच लाच घेतल्याशिवाय त्यांचे हातपाय चालत नाहीत. आज रेल्वे स्टेशनवर तिकीट काढायला गेलं तर तिकीट कार्यालयामध्ये मिळणार नाही पण एजंटकडे लगेच मिळणार.

राजकारणात तर भ्रष्टाचाराचे नाव काढायची सोयच नाही. ज्या नेत्यांना आपण निवडून देतो, ते नेते आपलाच पैसा घशात घालतात. आता नुकताच घडलेला प्रसंग. कॉमनवेल्थ गेमचा घोटाळा. त्यात सुरेश कलमाडी IPL किंग त्यात ललित मोदी; आदर्श घोटाळा. त्यात तर एक मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण. हे लोक कोटखावधी रुपयांचा भ्रष्टाचार करतात व तो पैसा परदेशातील बँकांत ठेवतात. मतदानाच्या वेळी बोगस मतदानाचे तर नावच काढायचं नाही. आज भ्रष्टाचारामुळे आपल्या समाजाचा विकास होत नाही. देशाच्या प्रगतीला अडथळा निर्माण होत आहे.

आपल्या भारतीय संस्कृतीत डॉक्टरला परमेश्वराचे स्थान आपण दिलेले आहे. परंतु तोच डॉक्टर आज मूठभर पैशासाठी एखाद्या गरीब रुग्णाचे मूर्त्रपिंड काढून, किडन्या काढून विकताना दिसतो आहे.

भांडवलदार हा समाजाचा पुढारलेला, अग्रणी, शक्ति संपन्न व सर्वेसर्वा वर्ग मानला जातो. महात्मा गांधी म्हणाले होते की भांडवलदाराकडे जमा होणारी संपत्ती ही सर्व समाजाची आहे. ती सर्वांच्या श्रमातून तयार झाली आहे. त्यामुळे भांडवलदाराने ती संपत्ती आपली मानू नये. ती सर्व समाजाची असल्याने ती समाजहिताच्या कार्यात लागली पाहिजे. म.गांधींनी भांडवलदारांना विश्वस्ताची भूमिका पार पाडण्याचा सल्ला दिला होता पण नव उदारमतवादी व्यवस्थेत बेबंद,

बेजबाबदार व बेभान झालेल्या भांडवलदार वर्गाला हे कसे पटवून द्यावे ?

‘आम्ही भारताचे लोक’ अशी सुरुवात असलेल्या राज्यघटनेच्या प्रास्ताविकेत, आम्ही भारत कसा घडवू याचे सुंदर वर्णन करण्यात आले आहे. १९४७ साली ज्यांनी देशाचा कारभार ताब्यात घेतला, उद्योगव्यवस्थेच्या किल्ल्या ज्यांच्या हातात आल्या, राजकीय आर्थिक क्षेत्रांत नेतृत्व करण्याची संधी ज्यांना मिळाली; त्यांनी व नंतर आलेल्या त्यांच्या वासवदारांनी नेमके काय केले, याचा ताळेबंद मांडायची वेळ आता आली आहे.

अण्णा हजारेच्या नेतृत्वाखाली जनतेने जंतरमंतर येथे प्रभावशाली लढा दिला आहे. देशभरातील जनतेने त्याला अभुतपूर्व असा प्रतिसाद दिला. ही खूप समाधानाची बाब आहे. सरकारने मागण्या मान्य केल्या म्हणून सगळीकडे आनंदोत्सव साजरा करण्यात आला. परंतु एका गोष्टीचे भान सतत ठेवले पाहिजे, की ही लढाईची सुरुवात आहे. हा लढा दीर्घकालीन असणार आहे. लोकपाल कायदा झाल्याने सर्व प्रश्न चुटकीसरशी सुटतील असे नाही.

परंतु प्रत्येकाने हे ठरवले तर ते नक्की यशस्वी होईल. सेवा हमी कायदा, लोकपाल, लोकांमध्ये जनजागृती इ.ची जोपासना केली तर आपण ‘एक भ्रष्टाचारमुक्त प्रशासन’ ‘सृजनशील व विकसित भारत’ घडवू शकू यांसाठी प्रत्येकाने प्रामाणिकपणे प्रयत्न केला पाहिजे तरच आपण सर्वजण महासत्ता, भ्रष्टाचारमुक्त भारत घडवू शकू.

१९४७ साली देशाचा स्वातंत्र्य मिळाले. तेव्हापासून देशाची प्रगती असावी असा प्रयत्न होत आहे. परंतु देशाच्या प्रगतीसाठी लोकांमध्ये जनजागृती होणे गरजेचे आहे. लोकांमध्ये जनजागृती होणे गरजेचे आहे. लोकांमध्ये जनजागृती होणे गरजेचे आहे.





## मी माळीण गाव..

### उषःकाल होता होता काळरात्र झाली

कु.पूजा अरुण स्वामी, प्रथम वर्ष, बाणिज्य

मी माळीण गावं. आज मी तुम्हाला माझी कथा सांगतो. पुणे जिल्ह्यात आंबेगाव तालुक्यात भिमशंकरच्या जवळ निसर्गाच्या सानिध्यात डोंगराच्या कुशीत माझे वास्तव्य आहे किंवा आता तुम्ही होतं असं म्हणू शकता. ३ ते ४ पिढ्या विविध जाती-धर्माचे लोकं माझ्या शिवारात गुण्यागोविंदाने नांदत होते. सण-उत्सव, गावची यात्रा या सर्व गोष्टींसाठी सर्व जाती धर्माचे लोक एकत्र यायचे. मी माझ्या डोळ्यांनी गावात अनेक तरुण तरुणींचे लग्न सोहळे पाहिले. त्यांच्या संसार वेळीवर फुले उमलताना पाहिली. तीच फुले माझ्या अंगावरती मोठी होताना पाहिली. तसेच गावात राहणाऱ्या वृद्धांचे मृत्यूपण पाहिले.

वर्षानुवर्ष सर्व लोकांच्या सुख दुःखात मी खंबीरपणे उभा राहिलो. तसा माझा परिसर डोंगराच्या कुशीत निसर्गाने नटलेला. प्रचंड पाऊस. एका वाजूला डोंगर, नैसर्गिक संपत्ती मुबलक प्रमाणात. पण हे असं आनंदान फुललेलं माझं शिवार याला अचानक कोणाची तरी नजर लागल्याचे आज मला भासते. दिनांक ३० जुलै, २०१४ रोजी पहाटे गावातील सर्व लोक जेव्हा साखरझोपेत होते तेव्हा ४ ते ५ दिवस झालेल्या भुसळधार पावसामुळे डोंगराचा कडा दासळून ४४ घरांवर कोसळला. जवळ-जवळ १५० ते १७५ लोक मातीच्या ढिगाऱ्याखाली अडकून पडले. त्यांचा आक्रोश ऐकून माझे अंतःकरण पिळवटून निघाले. ज्या लोकांना वर्षानुवर्ष अंगाखांद्यावर खेळवले, त्या लोकांना मी मातीच्या ढिगाखाली तडफडताना बघत होतो. पण मी त्यांची काहीच मदत करू शकत नव्हतो. प्रशासनाकडून मातीचे ढिगारे उपासण्यास सुरुवात झाली. प्रचंड पाऊसामुळे जवानांना बचाव कार्यात अडथळे येत होते. पहिल्या दोन दिवसातच ३० ते ४० मृतदेह सापडले. माझे मन व्यथित झाले होते. अजून किती माझ्या लेकरांचे मृतदेह पहावे लागतील याचा विचार मी करीत होतो.

सलग ६ ते ७ दिवस बचावकार्य सुरू होते. १४५ ते १५० मृतदेह सापडले व काही वाचलेसुद्धा. निसर्गासमोर मानव किती हतबल आहे हे पुन्हा एकदा सिद्ध झाले. गुण्यागोविंदाने नांदणारे माझे शिवार काही सेकंदातच उध्वस्त झाले. मग केंद्रीय



गृहमंत्र्यांपासून ते उपमुख्यमंत्र्यांपर्यंत सर्वजण मला भेट देऊन गेले. माझ्या पुनर्वसनाची आश्वासने देऊन गेले. सरकारच्या व लोकांच्या मदतीने बहुदा माझे पुनर्वसन होईलही. पण त्या मातीच्या दिगाऱ्याखाली गाढले गेलेल्या घरांशी व मृत पावलेल्या लोकांशी माझे असलेले नाते कायमचेच तुटलेले होते. माझे मन खिन्नपणे विचार करत होते की, याला जबाबदार कोण ? मी असे ऐकले की, परदेशातील काही भूगर्भ शास्त्रज्ञांनी अशी घटना घडण्याचे संकेत दिले होते.

मनात असा विचार येतो की, गावातील लोकांनी केलेली जंगलतोड, मातीचा उपसा यामुळे तर ही घटना

घडली नाही ना? तसं लोक ही घटना का घडली याचा शोध तर लावतीलच. पण तोपर्यंत डोंगराच्या कुशीत बसलेली माझ्यासारखी हजारो गावे उध्वस्त झालेली बघायला मिळू नयेत ही ईश्वरखरणी प्रार्थना !

दुःख एकाच गोष्टीचे वाटते की, ज्या माझ्या लेकरांना मी अंगाखांद्यावरती वाढविले. ती माझी लेकरे आज माझ्या कुशीत 'चिरनिद्रा' घेत आहेत.

“आता उरले केवळ हुंदके.....”

...असलेला (नसलेला) माळीण गाव.

### रत्नपारखी

नात्याच्या दासळल्या भिती  
आभाळ मायेचा घेऊन डोंगर  
झालो मी बेघर.....  
वृद्धाश्रमाचे टोटवले दार.....

बरे झाले सोडून आलो घर  
इथे मायेच्याच भिती  
वयाचीच नाती-गोती  
आता माझ्या जगण्याला नाही कोणाची भिती

हृदयात साठलेली आभाळ माया  
येथे जाणार नाही वाया  
वृद्ध झाडाचीच पसस्लेली छाया  
वृद्ध झाडालाच वृद्धाची दया.....

स्वताची नाती  
आज स्वतालाच झाली पारखी  
ज्याने बांधला वृद्धाश्रम  
तोच या जगाचा रत्नपारखी.....

कु.अस्मिता विजय जाधव  
प्रथम वर्ष, कला

### क्षण

क्षणभंगूर क्षण हे सारे, क्षणा क्षणाला जाणावं,  
क्षणात कुठे काय होईल, क्षणात कुणी सांगावं.  
क्षण क्षण हा मोलाचा, क्षणा क्षणाला जपावं,  
फूलं तोडून काट्यांना, क्षणात दूर सारावं.  
क्षणा क्षणाला टिपावं, क्षणा क्षणाला वेचावं,  
वेचलेल्या क्षणातील क्षणांना, टिपून संग्रही ठेवावं.  
क्षणा क्षणाला साधावं, क्षणा क्षणाला जिंकावं,  
जिकलेल्या त्या क्षणांचं, रहस्य उलगाडत राहावं.  
क्षणात प्रेम क्षणात मत्सर, असं का होत असावं,  
अंतरी झाकून बघावं, अंतर समजून घ्यावं.  
क्षणात हेवा क्षणात कावा, का कुणाचा करावा,  
प्रीतीचा हात धरावा, भीतीलाही जवळ करावं.  
क्षणा क्षणाच नावीन्य, रे क्षणालाच ते कळावं,  
आजचा क्षण आपला, उद्याचं कुणी सांगावं.  
क्षणभर गुंतून रमावं, क्षणात बाहेर पडावं,  
क्षणभर घेवून विसावा, आयुष्य चालत राहावं.  
आयुष्य चालत राहावं.....

कु.त्रिवेणी शिवाजी काळे  
प्रथम वर्ष, बाणिज्य





## बाप... एक वटवृक्ष !

कु.सोनाली हणमंत चव्हाण, तृतीय वर्ष, कला

“आता झुकावसं वाटतंय.....  
तुमच्या पावलांवर.....  
सार झिडकारून  
कुशीत शिरावसं वाटतंय.....  
पुन्हा एकदा  
लहान व्हावसं वाटतंय.....”

हे कविता शिल्प वाचनात आलं...आणि माझ्या हृदयात, मेंदूत साठवलेला माझा बाप, की ज्यानं मला अक्षरांची ओळख देण्यासाठी कष्ट उपसलं...त्यासाठी माझी लेखणी जागी झाली...ते दोघेही आपल्या आयुष्यात बरोबर चालत असतात; पण भावनांच्या पायवाटेवर चालताना ‘तो’ मात्र कुटेतरी धोडासा मागे राहतो.....प्रत्येक जण ‘तिच्यावर’ वारेमाप लिहितो, तोंड भरून बोलतो.....पण ‘तो’ मात्र असाच कुटेतरी अबोलपणे पडद्याआड लपून राहतो. प्रसंगानुरूप ‘तिच्या’ डोळ्यातले अश्रू पाहून आपल्याला बाईट वाटतं; पण त्याच अश्रूंना तळहातावर झेलून मनातून ओघळणारा ‘तो’ मात्र उपेक्षितच राहतो.....

मित्रांनो, तुम्हाला वाटत असेल तो...तो...म्हणजे आहे तरी कोण ? तर तो म्हणजेच माझ्यासारख्या अनेक मुर्लीचा जीव. म्हणजेच माझा, आमचा मायाळू बाप. आई, ताई, दादा यांच्यापुढेही एक अतूट नातं असतं. त्याच नात्याचं नाव असतं.....बाबा.....

आईवद्दल लिहिणारे बरेच असतात पण बापावद्दल लिहिणारे क्वचितच दिसतात. असं का होतं हे कधी पाहिलंय का ? का कोण लिहित नाही बापावद्दल ? बाप समजायचा असेल तर मुलगी व्हावं लागतं. कारण मुलगी इतकं बापाला कोणीच समजू शकत नाही.

बापासाठी काही लिहावं असं खूपदा वाटलं पण तेव्हा लेखणी आमच्याकडे नव्हती आणि जेव्हा लेखणी हातात आली तेव्हा कळलं बापाचं कर्तृत्व लेखणीच्या पलीकडे आहे.



कोणीतरी म्हटलंय बापाचं महत्व कळायला आधी स्वतः बाप व्हावं लागतं. आपला बाप सांगत होता ते बरोबर होतं, हे आपल्याला नकळत जाणवायला लागतं;

अहो असंच चाललंय गल्लीपासून दिल्लीपर्यंत. कदाचित कोणीतरी त्याला अपवाद ठरतं.

मुलासाठी धावणारा असतो आपला बाप, बायकोसाठी कधी कधी होतो मात्र ताप, इच्छा असूनही त्यांना वेळ देऊ शकत नाही.

गच्च भरून आले तरी बहिरा आणत नाही.

मुलांचे कर्तृत्व कळस आभाळाला भिडण्यासाठी बापाचा जन्म जातो त्याची पायरी होण्यासाठी.

या कवितेवरून मला माझ्या आयुष्यातला एक प्रसंग सांगावासा वाटतोय.

माझ्या आयुष्यात घडलेला एक प्रसंग आहे. दोन दिवसांपासून पावसाचं धो धो वरसणं...त्या संध्याकाळीही त्या बसस्थानकावरही असाच वेड्यासारखा पाऊस बसत होता. ते बसस्थानक म्हणजे पावसाब्यातलं तळंच ! त्यादिवशी तर बसस्थानकात तब्बल गुड्याएवढं पाणी साचलं होतं. संध्याकाळची सातची वेळ. मी बसची वाट बघत थांबले होते.

इतक्यात नवरा-बायको, चौदा ते पंधरा वर्षाची मुलगी व आठ ते दहा वर्षाचा मुलगा असे चौकोनी कुटूंब समोर येऊन थांबले. सगळे चिव भिजलेले होते. हातातील बाजार केलेल्या पिशव्या कशा तरी सांभाळत हे कुटूंब उभं होतं. नवरा सातत्याने शिंकत होता. आजारी असावा. एवढ्यात त्यांच्या मुलीने सहज म्हटले, बावा मला वड खवा वाटतोय. गरम मिठले का ? हे ऐकून आईने तिला दरडावले, तुला काय कळतं का ? कधीही काहीही मागतेस, गप्प

वस.....इतक्यात तिचा बावा झपकन निघाला...बायकोनं विचारल कुठे निघाला ? आलोच.....अस सांगत तो पुन्हा स्टँडवर गुड्याएवढ्या पाण्यात शिरला.....प्रचंड पावसात. बसस्थानकानं तब्याचं स्वरूप प्राप्त केलं होतं. तसाच तो तळ पार करीत शंभर ते दोनशे मीटर अंतर पार करत गेला. २० मिनिटात येतो म्हणाले होते पण आलेच नाहीत. म्हणून बायको वडवड करू लागली. तेवढ्यांत एक पिशवी हातात घेऊन तो त्या गुड्याएवढ्या पाण्यातून रस्ता पार करत आला.....साहजिकच त्यात गरम गरम वडा होता. वडे संपलेले असताना नवीन होईपर्यंत वाट बघून तयार झाल्यानंतर त्याने वडा आणला. हे बघून बायकोचं डोकं सटकलं. तिनं पोरगीला शिथ्या द्यायला सुरुवात केली.....आजारी बापाला भर पावसात वडा आणायला पाठवलंस.....असं म्हणत पुन्हा तिची वडवड सुरू झाली. पण त्यानं तिला गप्प बसवलं. मुलगायला नि मुलीला कोपण्यात बसून वडा खायला सांगितला.....त्या बापाच्या चेहऱ्यावर कर्तव्यपूर्तीची एक समाधानाची छटा होती.....मुलांच्या छोट्या-छोट्या गरजा भागवितांना स्वतःचा सुद्धा विचार न करणाऱ्या 'बापा'कडे समाधानाने पाहताना किती वेळ सरला कळलंच नाही. पण तो प्रसंग बघून बाप म्हणजे काय असतो. याची मला पुन्हा जाणीव झाली.....नकळत कागदावर अश्रूंनीच लिहायला सुरुवात केली,

बाप एक वटवृक्ष असतो

त्याची एक एक आठवण

सावली होऊन साक्ष देते.

आयुष्याच्या चैत्रात

बाप गारवा असतो.....

खरंच किती लिहावं, बाप वटवृक्षच असतो.





## आदिम नातं

कु.मेघा हरिचंद्र संचेती, प्रथम वर्ष, कला

मेंदीभरल्या हातांनी, बावरल्या नजरेने, पायातील पेंजणाचा हळूवार आवाज करीत, लाजच्या पावलांनी नवी नवरी मृणालने घरात प्रवेश केला. ती आपला नवीन संसार पाहू लागली. इकडे तिकडे भिरीभरल्या नजरेने पहात असतानाच तिला मागील दारात उघडणारी खिडकी दिसली. अनामिक ओढीने ती खिडकीकडे गेली व डोकावून पाहू लागली. एक छोटासा मालतीचा वेल खिडकीला लगदून जणू काही तिच्याकडेच पाहात होता. नकळत ती खुदकन हसली. असं वाटलं तिच्या जीवा भावाची मैत्रिणीच भेटली. एक नातं जन्माला आलं तिच्या व मालतीच्या बेलात.

हळूहळू तिचा जीव संसारात सुखावत होता. दुपारच्या वेळेत निवांत क्षणी हळूच ती वेलीला तांब्याभर पाणी घालायची. कडक उन्हात हळूवारपणे पाण्याचा शिडकावा टाकायची. त्यामुळे वेलही जरा तरारून आली होती. दुपारच्या वेळेत कोणीही नसताना दोर्घाचंही निःशब्द हितगुज चाले. बघता बघता दिवस सुरू लागले.

सोनपावलांनी आलेला दिवस, चंदेरी स्वप्नाच्या रात्रींनी संपू लागला. मालतीचा वेल आता खूपच मोठा झाला होता. तिच्या फांद्या, पाने खिडकीच्या गजाना स्पर्श करू पहात, जणू काही पावलं उंचावून ती मृणालच्या संसारात डोकावून पहात आहे असेच वाटे.

एकाएकी मालतीच्या बेलास जडपणा आल्यासारखे वाटू लागले. मरगळल्यासारखं वाटायला लागलं. पहिल्यासारखं मालतीच्या संसारातल्या खाणाखुणा डोकावून बघावसं वाटेना. इकडे मृणालही सुकून गेली होती. भारावल्यासारख्या हालचाली होत होत्या. कुणाला काय सांगावं, काय होतंय ते, तीचं तिलाच कळेना. जडपणा कमी होवू लागला. मालतीच्या वेलालाही नवीनच बहार आल्यासारखं कोवळीक वाटू लागली. मृणालही एकदम तेजाने झळाळू लागली. नवीन चैतन्य आल्यासारखं तिला वाटू लागलं. मालतीच्या आणि मृणालच्या हितगुजाला नवीन बहार आला. किती सांगू आणि किती नको होवून गेला. मालतीचा वेलही हरखून मृणालकडे बघतच राहायचा. तिच्या तोंडावरील तेज, मंदमंद पण भारदस्त हालचाली.



आता वेलीच्या पानांनाही गडद रंग येवू लागला. खिडकीच्या गजातून आतपर्यंत येवून डोकवण्याइतपत मालतीचा वेलही आता धीट झाला होता. तांब्याभर पाण्याच्या ऐवजी आता जरा जास्तच पाण्याची जरूरी लागत होती. अंगाखांद्यावर कळ्यांचे झुंबके लोंबू लागले. मृणाल हळूवारपणे पानावरून हलकेच हात फिरवत राहायची. मालतीच्या वेलालाही अंगावरून मोरपीस फिरवल्यासारखं वाटत राहायचं. मृणालच्या घरातली वर्दळ वाढली. बायकामाणसांचा वावर वाढला होता. मालतीच्या वेलाला काय चाललय ते कळेनाच. तिला जरा हुरहुर लागली. आताशा मृणालही बाहेरच्या खोलीत जास्त येतच नव्हती. पान उंचावून, फांधा वर करून करून ती डोकावून पाहायची.

अचानक एके दिवशी मालतीचा जीव घाबराघुबरा होवू लागला. सगळ्या अंगात शिणवटा भरला. भरपूर पाणी घातलं होतं. ऊन सुद्धा लागत नव्हतं तरी तिचा जीव उमान्या-धामान्या होवू लागला. असं वाटू लागलं, आता मृणाल खिडकीशी असती तर मायेने अंगावरून हात फिरवला असता. तिला आपली व्यथा कळली असती. इतक्यात माजघरातून लहान बाळाचा टव्हें-टव्हें रडण्याचा आवाज जोरजोरात येवू लागला. मालतीच्या अंगातून एक झिरीझिरी गेली आणि तिच्या अंगावरील डुलणाऱ्या असंख्य कळ्या

एकदम उमलल्या गेल्या. सर्व आसमंत मंद सुवासाने भरून गेला.

एक निःशब्द आदिम नातं मालती आणि मृणालचं. दोन स्त्री मनाची स्त्री देहाची एकच कहाणी. निसर्गानं दिलेलं एक अनमोल देणं आणि दोघींचंच एकच गाणं

“तुझं माझं नातं एक आहे.  
तुझा श्वास माझा आहे.  
माझा रंग तुझा आहे.  
तुझा शब्द माझा आहे.  
तुझे दुःख माझे दुःख एक आहे.  
तुझा आनंद माझा आहे.  
तुला मला जगण्याचा एकच छंद आहे.  
तुझं उमलणं माझं फुलणं एक आहे.  
माझं गाणं तुझं आहे  
तुझं माझं सारं काही एक आहे  
तुझी माझी कहाणी एक आहे.  
तू निसर्गाची राणी आहे.....  
मालती मृणाल एकच कहाणी आहे.....” !

## देवाने द्यावे आयुष्य

स्वप्नांनी दिली चाहूल  
जगात वावरण्याची,  
आठवणींनी दिली आठवण  
एकत्र येण्याची.  
जगण्याची असते ओढ नेहमीच  
परंतु जिद्द असावी पुन्हा  
जन्म घेण्याची.  
इच्छा नसावी स्वार्थाची

मन असावे दुसऱ्यासाठी  
हसता यावे स्वतःसाठी  
पण रडता यावे दुसऱ्यांसाठी  
जन्म आहे माणुसकीसाठी  
आशांना सत्यात घडवण्यासाठी  
निसर्गाने दिली आहे देणगी  
आयुष्य सार्थ करण्याची  
वाटेवस्ती काटे कितीतरी असतात.

परंतु इच्छा असावी  
त्यांना फुले बनवण्याची,  
देवाने द्यावे पुन्हा  
आयुष्य हसण्यासाठी,  
काहीतरी गमवण्यासाठी आणि  
काही तरी मिळवण्यासाठी..... !  
कु.सहेर नजीर शेख  
प्रथम वर्ष, कला





## भूमिपात : संकट निसर्गनिर्मित की मानवनिर्मित

कु.राजश्री धनंजय दीक्षित, तृतीय वर्ष, कला

अलिकडच्या काळात पावसाचे प्रमाण हे व्यस्त बनलेले आहे. पूर्वी जून ते सप्टेंबर असे चार महिने नियमितपणाने पाऊस पडत असे. तसे आता होत नाही. आता पाऊस पडला की तो असा पडतो की वर्षभरातील त्याची सरासरी काही दिवसांतच भरून निघते. काही ठिकाणी अतिवृष्टी होत असताना काही ठिकाणी अजिबातच पाऊस पडत नाही. पूर्वी अशा प्रकारे अतिवृष्टी वारंवार होत नसे. ज्यावेळी अतिवृष्टी वा अधिक प्रमाणात पाऊस पडतो तेव्हा डोंगर उतारावरून ओढे, नाले इतक्या वेगाने वाहतात की, त्यामुळेही भूस्खलन होते आणि माती, दगड, धोंडे हे या प्रवाहाबरोबर वाहून जातात; परंतु अशा प्रकारे अतिवृष्टी प्रमाण वाढण्याचे, पावसामध्ये अनियमितपणा येण्याचे कारण हे ग्लोबल वार्मिंग आहे आणि तेही मानवनिर्मितच आहे, हे लक्षात घेतले पाहिजे. थोडक्यात, आपण चुकीचे वागतो. त्यांचे हे वाईट परिणाम आहेत.

३० जुलै, २०१४ रोजी माळीण गावावर कोसळलेले संकट हे नैसर्गिक भासत असले तरी त्यामागची कारणे मानवनिर्मित आहेत. मार्यानिंग किंवा विकासप्रकल्प इत्यादी कारणांसाठी जमीन उकरली जाते. माती सैल केली जाते. झाडे तोडली जातात. प्रचंड प्रमाणात निसर्गाची.....जंगलाची, झाडाची हानी होते. परिणामी अधिक पावसाच्या निमित्ताने भूस्खलन होते. दखेळी अशा घटना घडल्या की चर्चा जितक्या मोठ्या प्रमाणात होते, तितके त्यातून बोध घेऊन निसर्ग संवर्धनासाठी तसेच आपत्ती व्यवस्थापनाचे उपाय योजने गरजेचे आहेत.

वास्तविक पाहता, लँड स्लायडिंग वा भूस्खलन हा प्रकार आपल्याकडे म्हणजे महाराष्ट्रामध्ये तुलनेने कमी घडतो. भूस्खलन हे हिमालयामध्ये मोठ्या प्रमाणात घडते. याचे कारण हिमालय हा लाव्हासापासून वा खडकांपासून बनलेला नाही तर तो जमीन सरकून तयार झालेला आहे. त्यामुळे तेथे या घटना अनेकदा घडल्याची उदाहरणे दिसून येतात.



आताची जी घटना घडली आहे ती पश्चिम घाटामध्ये घडलेली आहे. खरे तर आपल्याकडे पश्चिम घाटामध्ये हे प्रकार कमी घडतात. कारण पश्चिम घाट हा कणखर आहे तो प्रामुख्याने लाव्हासपासून बनलेला आहे. तसेच बेसॉल्ट, लॅट्राईटने हा जो खडक आहे त्याची सातत्याने झीज होत असते. ही झीज होऊन त्याच्यापासून माती तयार होते आणि याच मातीवर कालांतराने वनस्पती उगवतात आणि पुढे जंगले तयार होतात. डोंगर उतारावर किंवा पर्वताच्या उतारावर ही सगळी माती घट्ट धरून टेवण्याचे काम प्रामुख्याने वृक्षांकडून किंवा जंगलाकडून केले जाते. त्याच्यावरील वनस्पतींचे, वृक्षाचे आच्छादन किंवा जंगल हे जर नष्ट करण्यात आले तर तेथील सर्व माती सैल होते आणि तेथे भूस्खलनाचे प्रकार घडतात. म्हणजेच लँड स्लार्पाईंग हे डी.फॉरस्ट्रेशनमुळे किंवा वनांचा नाश केल्यामुळे होते. आपण जर जंगले, झाडेच नष्ट केली तर माती धरून टेवण्याचे, तिची धूप रोखण्याचे काम आपोआपच खंडित होते. परिणामी ही माती खाली घसरते. या मातीबरोबर दगड, गोटे आणि इतर घटक खाली येतात.

काही नैसर्गिक कारणेही यासाठी कारणीभूत ठरतात. उदाहरणार्थ, तीव्र उतार असलेल्या टिक्राणी सतत पाण्याचा प्रवाह जात असेल तर तेथील माती सैल होते आणि भूस्खलन होऊ शकते; पण ते प्रमाण फार कमी आहे. मुख्य कारण जंगलाचा विनाश हेच आहे.

आपल्याकडे प्रामुख्याने भूस्खलन घाटांमध्ये अधिक होते असे दिसून येते. याचे कारण घाटांमधून कोकणामध्ये जाण्यासाठी रस्ते तयार करत असताना, त्यांचे रूंदीकरण करत असताना तेथील नैसर्गिक रचना बदलली जाते, तेथील खडक हलवला जातो आणि जंगलतोडही होते. परिणामी, तेथील खडक, माती खाली पडण्यास सुरुवात होते. दरवर्षी पावसाळ्यामध्ये केरळ, आंबोली, फोंडा आदी घाटामध्ये दरड कोसळण्याच्या घटना आपण ऐकत असतो ते यामुळेच.

लोकांनी लक्षात ठेवायला हवे की, मानवाचा विकास हा निसर्ग संवर्धनावरच अवलंबून आहे. निसर्ग जर अवाधित राखला नाही तर मानवी विकासावरही त्याचे वाईट परिणाम होतात आणि ते जाता दिसून येऊ लागले आहेत. त्यामुळेच जंगल संवर्धनासाठी अधिकाधिक प्रयत्न करणे. जंगलव्याप्त क्षेत्र वाढविणे ही काळाची गरज आहे.

जर उघडे, बोडके डोंगर असतील. त्यांच्यावर झाडांचे आच्छादन जर कमी असेल, तर तेथे भूस्खलनाच्या घटना घडण्याची शक्यता उरतेच.

डोंगर किंवा पर्वत उतारावरील कड्याचे भाग जड होऊन खाली कोसळणे यास 'भूमिपात' म्हणतात, यास दरड कोसळणे असेही म्हणतात.

भूमिपाताचे प्रमाण कमी-अधिक असते. भूमिपात होतात ते लहान, मोठे असतात. त्या भागातील भूचरना, खडकाचा प्रकार, उतार आणि त्या भागात पडणाऱ्या पावसाच्या प्रमाणावर हे अवलंबून असते.

भूमिपाताची काही नैसर्गिक आणि काही मानवनिर्मित कारणे पुढीलप्रमाणे -

#### नैसर्गिक कारणे

- भूकंपाचे धक्के
- ज्वालामुखीचा उद्रेक
- एकसारखे अतिपर्जन्य
- गुरुत्वाकर्षण शक्ती
- मऊ व जाड असलेले खडक

#### मानवनिर्मित कारणे :

- वृक्षतोड
- खाणकाम
- उत्खनन
- जमीन सपाटीकरण



सर्वसाधारण जर पाहिले तर, जंगल क्षेत्रामध्ये जिथे मानव जाऊन पोहचलेला आहे, मानवी हस्तक्षेप झालेला आहे, तिथे भूस्खलनाचे प्रमाण अधिक आहे. जिथे माणूस जाऊन पोहचलेला नाही किंवा जो 'अनअॅप्रोचेबल एरिया' आहे, जंगल अबाधित आहे, तिथे भूस्खलन कधीच झाल्याचे पाहायला मिळत नाही.

माळीण गावची घटना घडल्यानंतर डोक्यात एक असाच विचार आला तेव्हा कल्पनेत मी विचारले डोंगराला-

विचारले मी डोंगराला.....  
बाबा का असा कोपला..... ?  
का लेकरांचा बळी घेतला..... ?  
विश्वासाचा केला घोटाळा..... ?  
ऐकून माझा सवाल खडा.....  
कातर शब्दात मज म्हणाला.....

अघटीत होते सारे मजला.....  
नाही मारले मी कोणाला... ॥

जर्जर केलं ना तूच मला.....  
सुरूंग पेरून पोखरलं मला.....  
तुटला आधार काटीचा  
ओरबाडून नेले वनराईला... ॥

जर्जर माझ्या शरीराला.....  
नाही जमले सावरायला  
डोक्यादेखले लेकरं गेली.  
जो तो लागला कोसायला... ॥

ऐकून त्याचे कष्टी बोल.....  
घडा जाता शिकलो चांगला...  
झाडे जगवा झाडे वाचवा  
तारूप्य लाभू दे डोंगराला... ॥

### नव वधू

पदर मायेचा सोडून  
भातुकलीचा डाय मोडून  
निसर्गाची रीत पालण्या  
निघाले रीत पालण्या  
निघाले नवरी होऊन....  
हुंदका तो मायेचा  
कंठ दाटला आई बापाचा  
हातातली चिमुकली बाहुली माझी  
पेलेल का भार संसाराचा  
सोडून माहेरची आठवण  
सासरीच ती वाहिले  
हाक येता कुणाची मी घर भर धावले....  
लहान धोर कोणीही असो  
आदराने मी पाहिले

धग चुलीची सोसुनी  
घास सर्वांना भरविले  
कधी दुपारी झाडा वरी  
ते दुरून पक्षी येती  
माझ्या खुशालीचा सांगावा  
माझ्या आईला सांगाया जाती....  
सासूच्या नकारातही  
ती आपला होकार देती  
कधी पतीच्या वाटेवरती  
नजर लावून बसते  
घराचे घरकुल होण्यासाठी  
उदरात जीव जपते  
दिवा वंक्षाचा उजळण्यासाठी  
वात वनुनी जळते  
वादळात कधी दुःखांच्या

पदरात धरून लपविते  
बंदनी होऊन ती, श्वास  
मोकळा सर्वांना देती.....  
स्वतःची जाळून स्वप्ने  
कोवळ्या मुठीत आशा देते  
मुलगा असो वा मुलगी ती  
प्रेम सर्वांवर करती  
सीमा तोडून उंबऱ्याच्या  
भरारी घेण्या पदराचे पंख देती  
अशी कर्तव्य जपण्यासाठी  
आयुष्य भर तेवत राहते  
लम्नातली ती विधी सूत्रे  
कर्तव्य मुठीत देती..... !

कु.चित्रा नंदु लोखंडे  
प्रथम वर्ष, वाणिज्य





## नैराश्य

कु.पूजा संजय चव्हाण, तृतीय वर्ष, कला

सध्याचे जग हे धावपळीचे बनलेले आहे. प्रत्येक जण आपल्याला जे काही पाहिजे ते मिळवण्याचा आटोकाट प्रयत्न करीत आहे. काहीही करून मला पाहिजे ती गोष्ट मिळालीच पाहिजे असा अट्टाहास केला जाऊ लागला आहे. यातूनच सध्या विघातक स्पर्धा निर्माण झाली आहे. अशा परिस्थितीमध्ये व्यक्ती स्वतःला वास्तव पद्धतीने आणि प्राप्त परिस्थितीत न ओळखता प्रयत्न करू लागला आहे. यातूनच त्याला काही वेळा यश मिळते तर काही वेळा अपयश येते. अपयशाचे प्रमाण जर जीवनात अधिक असेल तर मनाची एक नकारात्मक अवस्था निर्माण होते, जीवन नकोसे वाटते, मनात सतत वाईट विचार येतात. व्यक्तीला कशातच रस वाटत नाही. यातूनच व्यक्तीमध्ये नैराश्य येते.

नैराश्य आलं म्हणून खचून जायचं कारण नाही. जसा माणसाला मलेरिया होतो, टायफॉईड होतो, तसं नैराश्य हा आजारही होऊ शकतो. मलेरियाचे जंतू मेले की तो बरा होतो. टायफॉईडचे जंतू मेले की तो बरा होतो. हे जंतू मरायला धोडे दिवस लागतात हे ठरलेले आहे. तसं हितं होत नाही. आपल्याला उत्साही ठेवणाऱ्या मेंदूतल्या काही घटकांची कमतरता झाल्याने आपल्याला खरं तर नैराश्य येते. त्यामुळे आपल्या हातातून काहीही घडतं. आत्महत्याचे प्रमाण खूप वाढत आहे.

अलिकडे आपल्याकडे एखाद्याने आत्महत्या केली की सर्वत्र त्याचीच चर्चा सुरू होते. ह्या आधी कोणी आत्महत्या केली होती का ? का केली होती ? पण कोणी त्यामागचे कारण समजून घेत नाही. त्याला कोणत्या गोष्टीचे नैराश्य आले होते ? काही लोकांना तर दारू पिऊन आपले नैराश्य जाईल असे वाटते. मात्र ते हळूहळू आपले आयुष्य संपवतात. यालाच आत्महत्या म्हणतात. प्रेम, प्रेमभंग, स्थान निर्माण करताना होणारी घुसमट यामुळे फार मोठ्या प्रमाणात नैराश्य येते. तसेच आजारपणाला कंटाळून, कौटुंबिक समस्या, मादक पदार्थांच्या आहारी गेल्यामुळे, परिस्थितीमुळे, हुंड्याच्या कारणामुळे छळ होणाऱ्या मुली यांचेही प्रमाण खूप वाढत चालले आहे. ही कारणे कुणी समजू शकत नाहीत. २-४ वर्षांच्या काळात 'शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या' हा आपल्या देशाच्या दृष्टीने लाजेने मान खाली घालायला लावणारा विषय आहे.



शेतकरी संकटातून मार्ग काढायचा सोडून आत्महत्या हाच श्रेवटचा मार्ग स्विकारतात. आता शालेय, महाविद्यालयातील मुला-मुलींचे नैराश्य, बेरोजगारांचे नैराश्य यांचे प्रमाण जास्त प्रमाणात वाढत चालले आहे. त्याकडे लक्ष देऊन ते कमी करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे.

**स्वतःच केलेला स्वतःचा खून :**

आता माणसे लहान-लहान गोष्टीवरून स्वतःला त्रास करून घेतात व तो सहन नाही झाला की स्वतःच आपले आयुष्य जाणीवपूर्वक संपवतात. यालाच नैराश्य असे म्हणतात. नैराश्य आल्यामुळे आपल्याकडे आत्महत्या करणाऱ्यांमध्ये सर्व साधारणपणे ९०% लोकांना मनोविकार असतो. वेळीच त्यांना मानसिक उपचार न मिळाल्यामुळे असे मनोरूपण आत्महत्येस प्रवृत्त होतात. तीव्र नैराश्य, व्यसनाधीनता, व्यक्तिमध्ये असणारे दोष, शारीरिक आजार, शैक्षणिक नुकसान आदि कारणांमुळे आत्महत्येचा विचार लोकांच्या मनामध्ये येऊ लागतो. आपल्या जीवनास काही अर्थ नाही. आता सगळे संपले असे त्यांना वाटते. त्यातून सुटका काढण्यासाठी आत्महत्या करतात. त्यांना हेच सर्वात जवळचे वाटते.

**आत्महत्येचा प्रयत्न कमकुवतपणाचे लक्षण :**

आत्महत्येचा प्रयत्न कमकुवतपणाचे लक्षण असून ती मदतीची एक हाक असते. आत्महत्या हा एक भयानक आजार आहे. कर्करोग, हृत्तरोग यांसारख्या भयानक आजार असणाऱ्या लोकांवर डॉक्टर उपचार करतात. त्याचा काही फायदा नसतो. ती माणसे जास्त काळ जगणार नसतात. हे डॉक्टरांना माहित असूनही ते त्यांच्यावर उपचार करतात. याउलट आत्महत्येची प्रवृत्ती ऐन तारुणाच्या उंबरठ्यावर उभी असते. त्यांनी तर आयुष्य म्हणजे काय ते पाहिलेले नसते. आत्महत्या का करतो हे ही त्यांना समजत नाही. त्यांना प्रेम, सहानुभूती मिळत नाही. उलट त्याची हेटाळणी केली जाते. ती व्यक्ती चेष्टेचा विषय बनते. मूर्ख, पळपुटी, भित्री अशी उपमा दिली जाते.

**मनात डोकवायला शिकलं पाहिजे :**

व्यक्तिच्या मनात काय चाललं आहे हे पाहिलं पाहिजे. कारण त्यातूनच समजतं की व्यक्तिच्या मनावर कशाचं दडपण आहे ? का ताण आहे ? का ती नैराश्यात आहे ? या व्यक्ती बोलत बोलत असं बोलतात की माझ्या जगण्यात काही अर्थ नाही किंवा त्या व्यक्ति कुटुंबाची, भविष्याची काळजी करतात. त्यावेळी तिला योग्य तो सल्ला दिला पाहिजे. आयुष्य खूप सुंदर आहे याची जाणीव करून दिली पाहिजे. जे काही आपल्याकडे आहे त्यातच समाधान मानले पाहिजे.

**अशी वेळ जर टाळायची असेल तर -**

आपल्यातील किंवा आपल्या जवळच्या लोकांमध्ये असणाऱ्या मानसिक समस्यांकडे दुर्लक्ष न करता लवकर मानसोपचारतज्ज्ञांचा सल्ला घेतला पाहिजे. मनोरूपांकडे वाईट नजरेनं न बघता त्यांना आधार दिला पाहिजे. त्यांच्याशी प्रेमाने, जिद्दाब्याने वागले पाहिजे. असा आधार त्यांना उपयोगी पडतो.

**आत्महत्येचा विचार मनात येऊ नये :**

यासाठी चांगल्या विचाराचा अवलंब करणे गरजेचे आहे. व्यक्तीने रोज मन शांत ठेवणारे व्यायाम केले पाहिजेत. कितीही वाईट परिस्थिती आली तरी यापेक्षा वाईट घडले नाही हे बरे झाले असे समजून आनंदात जगले पाहिजे. सगळ्यात महत्त्वाचे, आपल्या मनात असलेले विचार येतात ते दूर केले पाहिजेत.

पेन्सिलने लिहिल्या नंतर जसे चुकल्यानंतर खोडता येते, तसेच आपल्या आयुष्यात काही घडल्यानंतर ते पुसून आपण नवीन काहीतरी आपल्या आयुष्यात आत्मसात केले पाहिजे. त्यामुळे आपल्या मनात कोणते विचार येत नाहीत.

आता सध्या जगात रोज ३-४ लाख लोक दिवसाला आत्महत्या करतात. या आत्महत्येत सर्वात जास्त प्रमाण १५-२९ वयोगटामध्ये सर्वात जास्त आहे. अंधश्रद्धाळू, देवभोळे हे लोक आत्महत्या करतात, पण अलिकडच्या



काळात शहरामध्ये सर्वात मोठ्या प्रमाणात आत्महत्या होतात. यामध्ये डॉक्टर, इंजिनियर, शिक्षक यांच्या मध्येही हे प्रमाण वाढत चालले आहे. त्यासाठी १० सप्टेंबर हा 'जागतिक आत्महत्या प्रतिबंध' दिन म्हणून घोषित करण्यात आला आहे.

या सर्व चर्चेवरून असे लक्षात येते की जगात अशी कोणतीही व्यक्ती नाही की जी १००% सुखी आहे, यशस्वी झालेली आहे. आपल्या जीवनामध्ये यश मिळवणे, न मिळवणे सर्वस्वी आपल्याच हातात आहे. यासाठी आवश्यक म्हणजे व्यक्तीने स्वतःच्या क्षमता, बलस्थाने ओळखली पाहिजेत. ती अधिकाधिक विकसित केली पाहिजेत. तसेच स्वतःमधल्या दोषांकडेही लक्ष दिले पाहिजे. ते दोष जाणीवपूर्वक कमी केले पाहिजे व जीवनामध्ये

आपल्याला पाहिजे तसे घडेलच असे नाही. जे घडले आहे तसे स्वीकार करण्याची तयारी असली पाहिजे, जीवनामध्ये ज्या समस्या निर्माण होतात. ती एक नवीन शिकायची संधी आहे असा सकारात्मक दृष्टिकोन असला पाहिजे. नेहमी आशावादी विचार केला पाहिजे. भविष्यामध्ये चांगले घडेल, प्रयत्न करूया अशी मनाची समजूत काढावी.

सर्वात महत्वाचे जे जीवन आपल्याला मिळाले आहे, ते अधिकाधिक सुंदर करू असा विश्वास जर आपल्याकडे असेल तर जीवनात कितीही नकारात्मक घटना घडोत त्यातही आपण स्वतःवर नियंत्रण ठेवू शकू व आनंदाने जीवन जगू शकू व नैराश्य, आत्महत्या यापासून दूर राहू, मात्र यासाठी स्वतःच, स्वतःसाठी प्रयत्न करणे आवश्यक आहे. मग करणार ना.....

## आयुष्य

आयुष्य जगत असताना,  
क्षणभरही थांबायचं नसतं.  
रक्तबंधाळ झालो तरी,  
वाटेला रक्तात भिजवत जायचं असतं.  
काट्याकुट्यांच्या वाटेवरून,  
आयुष्यभर चालायचं असतं.  
आले कितीही उन्हाळे-पावसाळे,  
तरी आयुष्य असंच झिजवायचं असतं.  
कष्ट करून आयुष्याच्या माळरानावर,  
नंदनवन फुलवायचं असतं.  
त्या नंदनवनातील गोड फळे दुसऱ्याला देऊन,  
स्वतः सुखी व्हायचं असतं.  
आयुष्य हे स्वतःसाठी कमी,  
दुसऱ्यासाठी जास्त जगायचं असतं  
कारण स्वतःसाठी जगणाऱ्याचं,

आयुष्य मातीमोल असतं.  
आयुष्य जगत असताना,  
प्रत्येकाला त्याच्या गुणदोषांसह समजून घ्यायचं असतं.  
आयुष्य जगत असताना शेवटपर्यंत,  
माणसं जोडत रहायचं असतं.  
माणसं जोडत असताना,  
एक भान ठेवायचं असतं.  
जोडली कितीही माणसे तरी,  
शेवटी मात्र एकट्यानेच जायचं असतं.  
आयुष्य असंच जगायचं असतं.  
जगताना थोडंसं हसायचं असतं.  
पापण्यांना दोन धेंबांनी भिजवायचं असतं.  
आयुष्य असंच जगायचं असतं.....

रोहीत लक्ष्मण फडतरे  
प्रथम वर्ष, वाणिज्य





### स्वप्नं.....

स्वप्नं, स्वप्नं असतात.  
 अवती भवती  
 स्वप्नांचा विहार असतो.  
 अगदी,  
 उशापायथ्याला,  
 स्वप्नांची रास असते.  
 स्वप्नं वेवायची असतात.  
 डोळ्यांनी पाहून,  
 मेंदूनी सजवायची असतात.  
 स्वप्नांना,  
 एक दिवस पंखांचे बळ देऊन  
 आकाशात झेपावायची असतात.  
 स्वप्नं झेपावली की,  
 त्याची उंची जगाने मोजायची असते.  
 स्वप्नांना किनारा नसतो.  
 स्वप्नं.....  
 हसणारी, रुसणारी, फसणारी असली तरीही  
 स्वप्नांची पूजा बांधायची असते.  
 मनोभावेने स्वप्नांना आळवायचे असते.  
 स्वप्नं स्वप्नं असतात.  
 स्वप्नं जगणं तर असतंच  
 पण...स्वप्नं मरणही असतं.  
 कुणाच्या तरी विजयासाठी  
 स्वप्नं हरणं असतं.....

कु. उज्वला महेंद्र शिंदे  
 प्रथम वर्ष, कला



### आयुष्याच्या वळणावर

आयुष्याच्या वळणावर,  
 आयुष्य हे आयुष्य राहिले.  
 चालताना मी,  
 परतुनी माझ्या आयुष्याकडे पाहिले.  
 थोडी गहिवल्ली,  
 थोडी बावल्ली  
 तरीही पुढच्या आयुष्यासाठी  
 माझी मीच सावरली.....  
 कधी तुझ्व भरले नदी सवे  
 सांगरासवे अथांग माझे आयुष्य  
 पाहताना.....  
 स्वप्नांनीच जन्म घेतला  
 तेव्हा.....  
 माझे आयुष्य माझे न राहिले.  
 निसर्गाच्या कुशीत...  
 फुलले माझे आयुष्य.  
 आयुष्य न राहिले  
 आयुष्याच्या वळणावर  
 माझ्या आयुष्याने घेतले एक,  
 नवे वळण.  
 माझे आयुष्य माझे न राहिले.''

कु. पूजा सुरेश सायनाकर  
 द्वितीय वर्ष, विज्ञान



तू लढावं.....

तुझी लढाई  
देशासाठी  
माणसासाठी  
तुझी लढाई माणुसकीसाठी.....  
तुझी लढाई.....  
आकाशात झेपावणाऱ्या.....गरूडासाठी.....  
पंख तुटले तरी  
उतुंग झेपावण्यासाठी.....  
तुझी लढाई.....  
विजयासाठी  
भारतमातेच्या नव्या गाण्यासाठी.....  
तुझी लढाई.....  
न्यायासाठी  
हरलेल्या माणसांना नव्याने जगण्यासाठी  
तुझी लढाई.....  
तुझी लढाई  
शस्त्राविन लढण्यासाठी.....  
इतिहासाच्या नव्या अंकुरासाठी.....  
तुझी लढाई.....  
तुझी लढाई  
आई-बापासाठी.....  
थकलेल्या आत्म्याच्या  
घरट्यासाठी.....  
तुझी लढाई.....  
आयुष्यभर लढण्यासाठी.....  
.....तुझीच लढाई !

कु.सोनाली हणमंत चव्हाण  
तृतीय वर्ष, कला



तुझ्या बांगड्यांचा आवाज

आई.....  
आजही तुझ्या बांगड्यांचा आवाज  
पाऊला पाऊलाला साद घालतो.  
मी बालपणात जाऊन गोंधळते.  
उड्या मारते...डोळे खेळतात,  
लपाछपीचा खेळ.....तुला शोधत  
थकतात.....  
उदास पाऊस कोसळतो  
अश्रूंच्या डबक्यात  
तुझं प्रतिबिंब दिसल्याचा भास होतो.  
तुला शोधण्यानी एक नवा श्वास येतो.  
आकाशात तूच चमकते.  
वाऱ्यावर स्वार होऊन वाहते.  
जाई-जुईच्या फुलांतून तूच दरवळते.  
अंगणातल्या चाफ्यात तूच हसते...रुसते.  
चैत्राच्या उन्हात.....  
सावली होऊन तूच येते.  
पहाट होऊन तूच गाते.  
आई.....  
आई...शाळेत कविता होऊन शिकवते.  
आजही तुझ्या बांगड्यांचा आवाज  
पाऊला पाऊलाला गुरू होतो.  
माझ्या थकलेल्या ज्ञानासाठी तरू होतो.  
तुझ्या बांगड्यांचा आवाज.....बांगड्यांचा आवाज !

कु.कोमल अशोक माने  
प्रथम वर्ष, कला



### मायेची भूक

“तुझा हात हवा होता  
माझ्यासाठी.....  
थोपटून मला झोपवायला.  
मी दचकतो, जागा होतो  
तुझ्यासाठी.....  
तू सोडून गेलीस.....  
तेव्हापासून माझी भूक  
भूक होऊन मला छळते  
आयुष्यभर.....  
मी उपाशीच राहणार  
तुझ्या दुधाविना मला कळते.....  
पोरकेपणाच्या जाळत  
मी पाऊला पाऊलाला  
जळतो आहे.  
तू नाहीस हा फोड,  
तळहातावर जपतो आहे.  
तू नाहीस या वेदनेत खपतो आहे.  
मी रडत नाही,  
हे मला सांगता येत नाही.  
डोळ्यातल्या पाण्याचं वाहणं थांबत नाही.  
अंधरूणात लपलो तरी,  
तुला शोधणं थांबत नाही.  
आई.....पोट भरतं रोज  
पण...टेकर कधीच येत नाही.  
तुझ्या मायेची भूक.....मायेची भूक  
आयुष्यभर.....तशीच..... !”

सुनील पंडित  
प्रथम वर्ष, कला



### जीवन

जीवनाच्या या मार्गावर  
भेटते सोबतीची लाट  
दिवसांमागून दिवस जातात  
शेवटी दिसते मरणाची वाट  
सुख ही भेटते  
दुःख ही भेटते  
जीवनाच्या या मार्गावर  
सर्व काही असते.  
जीवनात कधी  
डगमगायचे नसते.  
जीवनात कधीच  
थांबायचे नसते.  
जीवनात फक्त  
चालायचे असते  
फक्त चालायचे असते.....  
चालता चालता  
संपते जेव्हा वाट  
तेव्हा पायांनी थांबायचे नाही.  
फक्त चालायचे चालायचे  
आयुष्याच्या वागेत फुलायचे.....S S !  
कु.शीतल रमेश भिलारे  
तृतीय वर्ष, कला



### मित्र मोटे होऊ लागलेत !

मित्र मोटे होऊ लागलेत,  
आणि थोडा दुरावा जाणवायला लागलाय.....  
कामाच्या SMS शिवाय,  
एकही विनोदी SMS येत नाही.  
मित्राच्या Call साठी आता,  
मिटींगही मोडता येत नाही.  
बहुतेक कामाचा व्यापच आता,  
सर्व जागा व्यापायला लागलाय.

मित्र मोटे होऊ लागलेत,  
आणि थोडा दुरावा

जाणवायला लागलाय.....  
पूर्वी वेळ सर्वासाठी असायचा,  
आता स्वतःसाठीच वेळ वाढायला लागलाय.  
पझेशनचा वेळ येईल तसा,  
रूममधला वडालवा दडायला लागलाय.  
ट्रिपचा रविवार आता,  
नवीन जोडीदार पाहण्यात जाऊ लागलाय.  
मित्र मोटे होऊ लागलेत आणि थोडा दुरावा  
जाणवायला लागलाय.....  
मान्य आहे स्वतःसाठीही  
जीवन जगायचं असतं.  
मग त्यासाठी कुणाला  
खरचं का दुखवायचं असतं ?  
पण हे मात्र खरं आहे की,  
मित्राबरोबर मैत्रीचा अभिमानही वाढू लागलाय.

मित्र मोटे होऊ लागलेत  
आणि थोडा दुरावा

जाणवायला लागलाय.....

मयूर प्रकाश सावंत  
प्रथम वर्ष, कला



### एक मेंढरू

“आयुष्याच्या वळणावर  
चुकलेले...  
आयुष्याच्या कळपातील  
मी मेंढरू...  
जगण्याला मुकलेले  
मी एक मेंढरू  
भांबवलेल्या वादळातील  
मी एक मेंढरू.....  
स्ता सोडून  
लांडग्याच्या जवड्यात जाऊन  
लपलेले  
मी एक मेंढरू.....  
कुणी वेडा आयुष्याच्या माळरानावर  
शिलालेख कोरतो  
‘आयुष्य एक मेंढरू मेंढरू  
अमुचा होतो लिलाव  
लांडग्याच्या जवड्यात असतो  
अमुचा मावळलेला गाव’  
हा मिरवणारे मी एक मेंढरू” !

अजिंक्य मच्छिंद्र शिंदे  
तृतीय वर्ष, कला





### वादळापूर्वीची शांतता.....

वादळापूर्वीची शांतता  
कधी अनुभवलीच नव्हती  
कारण ती भयाण शांतता  
माझं मन चिरत होती.

वादळाचं ते क्रूर रूप  
सारं काही सांगत होतं  
हे सारं संपण्यासाठीच आहे  
इतकच फक्त वरळत होतं.

आयुष्यात घराच्या रूपानं  
चांगलं करून दाखवलं होतं  
पण या वादळानं ते सुद्धा  
उधळून लावलं होतं.

वादळ-वादळ काय असतं  
हे त्यावेळी कळलं  
कारण पेटण्यापूर्वीच  
संसाराचं सारं काही जळलं.

वाटलं होतं आयुष्यात  
सुखाची सुरवात झाली  
पण तीच वादळापूर्वीची शांतता  
माझा काळ घेऊन गेली.

अतुल शामराव कुंभार  
प्रथम वर्ष, एम.एस्सी

### भीक नको पण.....

भ्रष्टाचारात हवली गेली,  
आमच्या नेत्यांची मति ।  
कशी होणार जाता,  
आपल्या देशाची प्रगती ॥ १ ॥

आपल्याच जनतेचं गिळून,  
त्यांनाच काढताय पिळून ।  
निवडणुकीत विकास वोंवा,  
नंतर काळ्या-पैशांनी झोंवा ॥ २ ॥

ज्यांच्या कुणा जीवावरती,  
होता तुम्ही भले मोटं ।  
त्यांनी दिलेल्या मतांचं,  
विश्वासाघातानं करता खोटं ॥ ३ ॥

काही बेशरमी राजकारण्यांना,  
जनतेचं आहे थोडं सांगणं ।  
विकास जाऊ द्या तेलं लावत,  
सुधारा पहिलं तुमच वागणं ॥ ४ ॥

अहो कितीही काहीही जरी,  
जनता आपली जोरडली ।  
तुमच्यावर फरक कधी न त्याचा,  
कारण तुम्ही आजचे मोगली ॥ ५ ॥

थांबवावी लागेल तुम्हाला जाता,  
सत्तेवरची टगोगिरी, निवडणुकीतला मुजरा ।  
विकास राहू द्या थोडासा आमचा,  
भीक नको पहिलं कुत्रं आवरा ॥ ६ ॥

किरण श्रीरंग जानकर  
द्वितीय वर्ष, कला



बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

INDEX



'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

**LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE  
SATARA**

"ONE IS NOT BORN A WOMAN,  
BUT BECOMES ONE."

- *Simone de Beauvoir*



**ENGLISH  
SECTION**  
(Senior College)

EDITOR :  
Prof. Sachin A. Kamble.  
Prof. Manoj S. Jadhav.

"SOME PEOPLE GO TO PRIESTS;  
OTHERS TO POETRY;  
I TO MY FRIENDS."

"LANGUAGE IS  
WINE UPON THE LIPS"

- *Virginia Woolf*



# INDEX

## PROSE SECTION

1) Nobel Prizes : 2014	Swapnil Satish Deshmukh	B.Sc.III	55
2) Impact Of SMS Language On Student's English	Gaurav Arun Gade	B.A.III	57
3) The Role of Youth In Modern India	Asiya Mulla	B.A.II	59
4) Nature	Komal Saynakar	B.A.II	61
5) What Is Love	Ashish Kamble	B.A.III	63
6) Galileo : Father of Modern Science	Priyanka Dighe	B.Sc.I	67
7) Stephen Hawking : An Extraordinary Scientist	Laxmi Pimple	B.Sc.I	68
8) Dr. C. V. Raman And His Contribution to Science	Mahesh Ramchandra Pisal	B.Sc.II	70
9) Green Synthesis of Gold From Oliver Leaf	Bhagyashri S. Ghatage	M.Sc.I	76
10) ISRO's Journey To The Mars	Deepak S. Naik	M.Sc.II	80
11) Realizing The Spirit : Swami Vivekanand	Avinash Shivaji Kamble	M.Sc.I	82
12) Green House Effect	Pallavi Pawar, Shital Sabale	M.Sc.I	83
12) 7 Scientific Ways To Catch A Lion	Akshay Anand Patil	M.Sc.I	85
12) Chemical Analysis Of Life	Atul Shamrao Kumbhar	M.Sc.I	86

## POETRY SECTION

1) Active	Ganesh Jadhav	B.A.I	81
-----------	---------------	-------	----





## Nobel Prizes : 2014

Swapnil Satish Deshmukh, B.Sc.III

### Nobel Prize in Chemistry-

Chemistry is the most important science for Alfred Nobel's own work. Chemistry is the second prize area that the Nobel mentioned in his will. The Noble Prize in Chemistry is awarded by the Royal Swedish Academy of Science, Stockholm, Sweedon.

In 1873, the microscopist Ernst Abbe stipulated a physical limit for the maximum resolution of traditional optical microscopy. It could never become better than 0.2 ulm. Eric Betzig, Stefan W.Hell and William E.Moerner are awarded the Noble Prize in Chemistry 2014 for having bypassed this limit. Due to their achievements the optical microscope can now peer into the nano-world.

Two separate principles are rewarded. One enables the method stimulated emission depletion (STED) microscopy developed by Stefan Hell in 2000. Two laser beams are utilized; one stimualtes Fluorescent molecules to glow, another cancels out all Fluorescence except for that in a nanometric-sized volume. Scanning over the sample, nanometre for nanometre, yields an image with resolution better than Abbe's stipulated limit.

Eric Betz'ig and William Moerner, working separately, laid the foundation for the second method, single molecule microscopy. The method relies upon the possibility to turn the Fluorescence of individual molecules glow each time. Superimposing these images yields a dense super image resolved at the nanolevel. In 2006 Eric Betzig utilised this method for first time.



Today, nanoscopy is used worldwide and new knowledge of greatest benefit to mankind is produced on a daily basis.

**Most Popular Chemistry Lauretes-**

- 1) Ernest Rutherford
- 2) Eric Betzig
- 3) Marie Curie
- 4) Stefan W.Hell
- 5) William E.Moerner
- 6) Linus Pauling
- 7) Fritz Haber
- 8) Irene Joliot-Curie
- 9) Dorothy Crowfoot Hodgkin
- 10) Venkatraman Ramkrishnan

**Nobel Peace Prize-**

After a very long period of 35 years and Indian citizen Kailash Satyarthi got nobel prize of peace in 2014 with Malala Usufzai. They were nominated for same prize before this. Satyarthi fight aganist child labourship and helped 80,000 childrens to get their right to live happily and by their own way. He born on 11 Jan, 1954 at Vidisha

in the state Madhya Pradesh. He is the 8<sup>th</sup> Indian to get this prize. Satyarthi left their job of electrical engineer and start working for child rights. He started his work in 1990 through the organisation 'Bachpan Bachao'. Now He is recognised worldwide as leader for a mission against child labourship.

The meaning of the world 'Malala' is sorrow. She is very young Noble laurette of age of only 17. She was born on 12 July 1997 in Pakistan. At the age of 12 she start writing in a newspaper against Talibani attacks, their cruel characters and mindsets. She was attacked by Taliban on 9 Oct.2012, she was cured and diagnosed in London. The whole world was astonished by the bravery of this little girl, Newyork Times published a newspaper named as "Class Dismiss" on her. Her words are worth inspiring for whole world in this era. She said "After a very dark night there was a bright day and we should ready to take joy of it."

**JOKES**

Teacher to students : can anyone tell a word which has more than 1000 letters in it?

Sam suddenly stands up and said "postbox" !

Teacher : John, tell me your date of birth ?

John : July 13th

Teacher : on which year ?

John : It is in every year, Ma'am !

**Ganesh Jadhav**

B.A.I





## Impact Of SMS Language On Student's English

Gaurav Arun Gade, B.A.III

Not only second language learners, but also native speakers have their problems with the English language. Quite often, teachers despair when pupil reads their text. Most mistakes are made when words are pronounced the same, e.g. their/there, its/it's etc.

When worse comes to worse, some students simply shorten their texts to SMS. For experiment, we choose a group of 10 students who were selected randomly from all faculties. Findings of this experiment stunned us.

SMS language is a term for the abbreviations and slang commonly used with mobile phone text messaging, but sometimes used with other Internet-based communication such as email and instant messaging.

**Three features of early mobile phone messaging encouraged users to use abbreviations :**

- a) Text entry was difficult, requiring multiple key presses on a small keypad to generate each letter;
- b) Messages were limited to 160 characters, and
- c) it made texting faster. Once it became popular it took on a life of its own and was often used outside of its original context. At its peak, it was the cause of vigorous debate about its potentially detrimental effect on literacy, but with the advent of alphabetic keyboards on smart phones and its use, and the controversies surrounding it, have receded. The primary motivation for the creation and use of SMS language was to convey a comprehensible message using the fewest number of characters possible.



This was due to the way in which telecommunication companies limited the number of characters per SMS, and also charged the user per SMS sent. To keep costs down, users had to find a way of being concise while still getting their message across. Further typing on a phone is normally slower than with a keyboard, and capitalization is even slower. As a result, punctuation, grammar, and capitalization are largely ignored. In many countries, people now have access to unlimited text options in their monthly plan, although this varies widely from country to country, and operator to operator. However, screens are still small, which continues to motivate short messages and the input problem persists: SMS language is still widely used for brevity. Sms language is some kind of texting language which is specially used for sending of msg.

The first text msg was sent by American telecom company in December 1992, which was one of the revolutionary experiment in the history of communication.

The reason behind choosing this topic is another one. once upon a time our student council arranged essay writing competition in our college, and

for that we asked student to write essay on different topic such as college election, your goal, what is the role of youth in society and after compiling that competition when I analyze those essays of our college student then I observed that there are so many student using SMS texting in their answer. At that time I dicided that to research on this problem and find the resone behind this kind of writing and after researching on this problem I understand that this is the impact of SMS language on students English writing.

Then I was taking interview of those all student, then I found that the student who are habitual for language they are making so much speling, grammatical as well as strucral mistakes in there writing, and the student who are not so much habitual of SMS language they are making less mistakes in their answer or in their academic writing. And by studying this research I found some remedies and suggestion on this problem. The reason behind doing this research is not only showcase to this problem but also it is an survival work to serve the language and to stop the distortion of it. Because it is our prime responsibility to protect the culture and ethics of any language.





## The Role of Youth In Modern India

Asiya Mulla, B.A.II

### Introduction :

In words of James" Youth is the joy, the little bird that has broken out of the eggs and is eagerly waiting to spread out its wings in the open sky of freedom and hope."

### Power of Youth :

Youth is the spring of Life. It is the age of discovery and dreams. India is of largest youth population in the world today. The entire world is eyeing India as a source of technical manpower. They are looking at our youth as a source of talents at low costs for their future super profits. If Indian youth make up their mind and work in close unity with working class people, they can hold the political power in their hands. Indian youth has the power to make our country from developing nation to a developed nation. Is it a dream? No, their dreams take them to stars and galaxies to the far corners of the unknown and some of them like our own. Kalpana Chawla pursue their dream, till they realize it and die for it in process,

### Hopes of Youth :

The youth hopes for a world free of poverty, unemployment, inequality and exploitation of man by man. A world free of discrimination on the grounds of race, colour, language and gender. A world full of creative challenges and opportunities to conquer them. But let us convert these hopes in reality.

### Role of Youth :

The role of youth is of most importance in today's time. It has underplayed itself in the field of politics. It



should become aspiring entrepreneur rather than mere workers. It can play a vital role in elimination of terrorism. Young participation is important because youth are the country's power. Youth recognize problems and can solve them. Youth are strong forces in social movements. They educate children about their rights. They help other young people attain a higher level of Intellectual ability and to become qualified adults.

**Problems :**

Unfortunately no one is bothered to dream any vision. Martin Luther has said, "I have a Dream" and the dream come largely true. If he had not thought of that dream he would have accomplished nothing in his life. Another problem is its indifferent attitude towards things, situation and politics. The new cool formula of "let the things be" is proving fatal to India's

development. Lack of unity and spirit is the major set back . Its time The youth, the students have to realize their power, their role, their duties and their responsibility and stand up for their rights. Now its time that instead of brain drain we should act like magnets and attract world to India.

**Conclusion :**

India can become a developed nation only if everyone contribute to the best of his or her capacity and ability.

Youth is wholly experimental and with the full utilization of the talents of the Youth, India will become a complete Nation. Let us hope for the same.

'Youth is like a fire  
It crept forward.  
A Spark at first  
Growing into a flame  
The brightening into a Blaze'

**JOKES**

Teacher to John : "John, you have 6 apples in your plate and Sam took two among them, what would you get ?"

John : "A fight" !

Jimmy to his class teacher : Ma'am, do you punish your students for things that they don't do ?

Teacher : No, Never

Jimmy : Thank you Ma'am, because I didn't do my homework !

Why the music teacher did not able to open his room ?

Because the keys were on his piano !

What will be a Math teacher's favorite dish ? - *Pi* !

What did a math book complained to another math book ?

"Oh, I have tired of lot of problems" !

**Dilip Kuley**  
B.A.I





## Nature

Komal Saynakar, B.A.II

As a famous poet said, "What is this life if, full of care, we have no time to stand and stare." We have all learned that nature is man's best friend. Does anyone find time to just sit and listen to the sounds around us ? The answer is sadly a big NO. India is a country which is adorned-with much scenic beauty. Due to the captivating geographical beauty, we have places that are called 'Gods Own Country', 'City of Garden', 'Paradise of Earth' etc. Sadly these gifts of God are slowly diminishing. There are people who go for morning walk to avoid health hazards like diabetes, cholesterol, blood pressure etc. If we watch these people closely, we can see that even when they are walking through canopy of trees in a park with sounds of birds chirping around them, they will have their headsets plugged onto their ears. It would have been better if they just listen to the music of the birds, feel the rattle of the breeze and enjoy fresh air around them. This itself can improve our health. Many a poets have described nature in its full beauty. If we live hand in hand with nature we can avoid being stressed. As we all know stress is the prime cause of all diseases. When we build villas, sky scrapers and concrete jungles around us we should also think about planting at least one tree for each building we construct. We all should find time to just stand and stare.

Nature is the natural environment which surrounds us, cares us and nourishes us every moment. It provides us a protective layer around us to prevent from the damages. We are not able to survive on the earth without nature like air, land, water, fire and sky. Nature includes



everything around us like plants, animals, river, forests, rain, lake, birds, sea, thunder, sun, moon, weather, atmosphere, mountain, desserts, hills, ice, etc. Every form of nature is very powerful which has ability to nourish as well as destroy us.

Now a day, everyone has less time to enjoy nature. In the increasing crowd we forgot to enjoy nature and improve health. We started using technological instruments for our health fitness. However it is very true that nature has power to nourish us and fit us forever. Most of the writers have described the real beauty and advantage of the nature in their writings. Nature has ability to make our mind tension free and cure our diseases. Because of technological advancement in the life of human being, our nature is declining gradually which needs a high level of awareness to keep it in balance and to conserve natural assets.

God has created everything very beautifully seeing which our eyes can never be tired. But we forgot that we too have some responsibility towards our nature to relationship between nature and human beings. How beautiful scenery it looks in morning with sunrise, songs of birds, sounds of

lakes, rivers, air and happy gatherings of friends in the evening in garden after a long day of crush. But we forgot to enjoy the beauty of the nature in just fulfilling our duties towards our families.

Sometimes during our holidays we spend our whole day by watching TV, reading news paper, playing indoor games or on the computer but we forgot that outside the door we can do something interesting in the lap of nature and natural environment. Unnecessarily we left on all the lights of home, we use electricity without need which ultimately increases the heat in the environment called global warming. Our other activities like cutting trees and forests increase the amount of CO<sub>2</sub> gas in the environment causing green house effect and global warming.

If we want to be happy and healthy always we should try our best to save our planet and its beautiful nature by stopping our foolish and selfish activities. In order to keep ecosystem in balance we should not cut trees, forests, practice energy and water conservation and many more. Ultimately we are the real user of the nature so we should really take care of it.





## What Is Love ?

Ashish Kamble, B.A.III

Love, only word creates sensation in the body. It is a feeling, a most desired feeling. When someone falls in love, he or she likes to remains alone and aloof. They are always engrossed in the world of imagination and dream. Love can mean different to different people. Many try to define love. People take love in very narrow sense. For them love means love between a man and women but this world is full of love as Kusumagraj, one of Marathi poet, in his poem "Prem Konavar Karave" says that our love should not be limited only between men and women. There is love between mother & child, between friends, love to nation, society, animals. Even he says we should love what not so beautiful.

Love is a variety of different feelings; It can refer to an emotion of a strong attraction and personal attachment. It can also be a virtue representing human kindness, compassion, and affection. The word "love" can have a variety of related but distinct meanings in different contexts. Many other languages use multiple words to express some of the different concepts that in English are denoted as "love"; Abstractly discussed love usually refers to an experience one person feels for another. Love often involves caring for or identifying with a person or thing. Several common proverbs regard love as Gottfried Leibniz said that love is "to be delighted by the happiness of another. Someone said, "Love is nothing but, chemical imbalance."

Ancient Greeks identified four forms of love kinship, friendship, romantic & divine

Love is a special and complicated emotion which is quite difficult to understand. Although most people believe



that love revolves around the heart, it actually occurs in the brain. Artists, poets and painters all epitomize the heart as the love symbol, but it's the brain that generates chemical signals to make people understand love. There are different forms and styles of expressing love. To describe these styles, the Ancient Greeks came up with four terms (Eros, storge, agape and philia) to symbolize the four types of love. Let us look at these four loves in details.

### 1. Friendship

This is an unconditional love that sees beyond the outer surface and accepts the recipient for whom he/she is, regardless of their flaws, shortcomings or faults. It's the type of love that everyone strives to have for their fellow human beings. Although you may not like someone, you decide to love them just as a human being. This kind of love is all about sacrifice as well as giving and expecting nothing in return. The translation of the word agape is love in the verb - form: it is the love demonstrated by your behavior towards another person. It is a committed and chosen love.

### 2. Divine

It refers to an affectionate, warm and tender platonic love. It makes you desire friendship with someone. It's the kind of love which develops the unselfish love. You may have an

unselfish love for your enemies. It is a committed and chosen love.

### 3. Kinship

It is a kind of family and friendship love. This is the love that parents naturally feel for their children: the love that member of the family have for each other: or the love that friends feel for each other. In some cases, this friendship love may turn into a romantic relationship, and the couple in such a relationship becomes best friends. It is unconditional, accepts flaws or faults and ultimately drives you to forgive. It's committed, sacrificial and makes you feel secure, comfortable and safe.

### 4. Romantic

It is a passionate and intense love that arouses romantic feelings; it is the kind that often triggers "high" feelings in a new relationship and makes you say, "I love him/her". It is simply an emotional and sexual love. Although this romantic love is important in the beginning of a some relationship, it may not last unless it moves higher because it focuses more on self instead of the other person. If the person "in love" does not feel good about their relationship anymore, they will stop loving their partner.

This just offers you a general understanding and description of the four types of love which promotes a good, healthy and progressive





relationship. In any relationship, you should have all these four loves working together to enable it survive for a longer time. But in some cases, a relationship may be long-lasting if partners share the same style of love.

#### **Biological basis**

Biological models of sex tend to view love as hunger or thirst. Helen Fisher, a leading expert in the topic of love, divides the experience of love into three partly overlapping stages: lust, attraction, and attachment. Lust is the feeling of sexual desire; romantic attraction determines what partners mates find attractive and pursue, conserving time and energy by choosing; and attachment involves sharing a home, parental duties, mutual defense, and in humans involves feelings of safety and security.

#### **Psychological basis**

Psychology depicts love as an intellectual and social phenomenon. Love has three different components: intimacy, commitment, and passion. Intimacy is a form in which two people share confidences and various details of their personal lives, and is usually shown in friendships and romantic love affairs. Commitment, on the other hand, is the expectation that the relationship is permanent. The last and most common form of love is sexual attraction and passion. Passionate love is shown in infatuation as well as romantic love. All forms of love are

viewed as varying combinations of these three components.

#### **Love : Religion**

##### **Christianity**

The Christian understanding is that love comes from God. The love of man and woman—eras in Greek—and the unselfish love of others (agape), are often contrasted as "ascending" and "descending" love, respectively, but are ultimately the same thing.

Christian theologians see God as the source of love, which is mirrored in humans and their own loving relationships. "Love is patient, love is kind. It does not envy, it does not boast, it is not proud. It is not rude, it is not self-seeking, it is not easily angered, it keeps no record of wrongs. Love does not delight in evil but rejoices with the truth. It always protects, always trusts, always hopes, and always perseveres."

##### **Islam**

Love encompasses the Islamic view of life as universal brotherhood that applies to all who hold faith, nobody is more loving, compassionate and benevolent than God. The Qur'an refers to God as being "full of loving kindness." A common viewpoint of Sufism is that through love, humankind can get back to its inherent purity and grace.

##### **Buddhism**

In Buddhism, Kama is sensuous, sexual love. It is an obstacle on the path



to enlightenment, since it is selfish. Karuna is compassion and mercy, which reduces the suffering of others. It is complementary to wisdom and is necessary for enlightenment. AdveSa and Metta are benevolent love. This love is unconditional and requires considerable self-acceptance. The Bodhisattva ideal in Mahayana Buddhism involves the complete renunciation of oneself in order to take on the burden of a suffering world. The strongest motivation one has in order to take the path of the Bodhisattva is the idea of salvation within unselfish, altruistic love for all sentient beings

### Hinduism

In Hinduism, kama is pleasurable, sexual love, personified by the god Kamadeva. In contrast to kama, prema -or prem - refers to elevated love. Karuna is compassion and mercy, which impels one to help reduce the suffering of others. Bhakti is a Sanskrit term, meaning "loving devotion to the supreme God." Krishna-prema is considered to make one drown in the ocean of transcendental ecstasy and pleasure. The love of Radha, a cowherd girl, for Krishna is often cited as the supreme example of love for Godhead.

### JOKES

Teacher to John : John, tell me the chemical formula of water ?

John : Yes Ma'am, it is H, I, J, K, L, M, N, O !

Teacher : No, it is wrong

John : Ma'am, yesterday you taught that the formula is H to O !

Teacher to Danny : Danny, why you are not writing ?

Danny : Ma'am, I don't has a pen

Teacher : Danny, you said a wrong sentence. The correct form is I don't have a pen, he doesn't have a pen and we don't have a pen.

Danny : oh Ma'am ! Who stole all the pens then ?

Can you find the longest table in the class room ?

Sure, it is the multiplication table !

Teacher told Johnny to write an essay of 100 words. Johnny thought for a moment and stared to write. "I went to call my puppy in for the night and I called "puppy, puppy, puppy....."!

What is the difference between a teacher and train ?

A teacher always says "spit your gum", while the train says "chew chew chew..." !

Anandrao Jadhav  
B.A.I





## Galileo : Father of Modern Science

Priyanka Dighe, B.Sc.I

Galileo was born in Pisa Italy on Feb 15 1564. He was born in an ordinary family. He was born revolutionary. In 1581, he began study in the university of Pisa. His father wanted that his son should study medicine but the university of Pisa he began studying Physics. He began reading Ancient Greek, Scientist Aristotle, Galileo questioned the Aristotelian approach to Physics. Aristotelians believed that heavier object fall faster through a medium than lighter ones. Galileo disapproved this idea by stating that all objects regardless of their destiny fall at the same rate in a vacuum.

Galileo invented many mechanical devices other than the pump, such as the hydrostatic balance. But his most famous invention was the "TELESCOPE."

Galileo made his first Telescope in 1609. He created a Telescope later the

same year that could magnify objects twenty times with his telescope. He was able to look at the moon discovered the four satellites of Jupiter observe a supernova verify the phases of Venus. His discoveries proved the copernican system which states that the earth and other planets revolve around the sun. Prior to the copernicon system, it was held that the universe was geocentric meaning the sun moves around the earth.

With his scientific revolutionary idea he was summoned before church. Galileo was found guilty and he was placed under house arrest and his moment were restricted by pope. He went completely blind in 1638 and was suffering from a painful hernia and insomnia. Such a great scientist passed away in 1642.

But it is true to say that some are born great some achieve greatness and some have greatness thirst upon them.





---

## Stephen Hawking : An Extraordinary Scientist

---

◆  
Laxmi Pimple, B.Sc.I

---

Stephen William Hawking was born on 8<sup>th</sup> January 1942. (300 years after the death of Galileo) in Oxford, England.

His house was in north London, but during the second world war, Oxford was considered as safer place to have bobbies. When he was eight, his family moved to st.Albans, a town about 20 miles north of London. At the age of eleven Stephen went to st.Albans school and then on to University college, Oxford; his father's old college. Stephen wanted to study Mathematics, although his father would have preferred medicine.

Mathematics was not available at University college. So he pursued Physics instead. After three years and not very much work he was awarded a first class honours degree in Natural Science.

Stephen then went on to Cambridge to do research in Cosmology. There beings no are working in that area in Oxford at that time. His supervisor was Denis Sciama, although he had hoped to get fred Hayle, who was working in Cambridge. After gaining his Ph.D. he become first a Research Fellow and later on a professional fellow at Geonville and Caius college. After leaving the institute of Astronomy in 1973 Stephen came to the department of Applied Mathematics and Theoretical Physics in 1979, and held the post of Lucasian professor of Mathematics from 1979 unill 2009. The chair was founded in 1663 with money left in the will of the Reverend Henry Lucas who has been Member of Parliment for the university. It



was first held by Issac Barrow and then in 1669 by Issac Newton. Stephen is still an active part of Cambridge University and retains an office at the Department for applied Maths and The critical physics. His title is now the Dennis Stanton Avery and Sally Tsui.

Hong-Avery Director of Research at the Department of Applied Mathematic and Theoretical Physics.

Stephen Hawking has worked on the basic laws which govern the universe. With Roger Penrose he showed that Einsteins's General Theory of Relativity implied Space and fine would have a begining in the Big Bang and an end in black holes.

These results indicated that it was necessary to unify General Relativity with Quantum Theory, the other great scientific development of the first half of the 20<sup>th</sup> century. One consequence of such a unification that he discovered was that black holes should not be completely black, but rather should emit radiation and eventually evaporates and disappears.

Another conjecture is that the universe has no edge or boundary in imaginary time. This would imply that the way the universe began was completely determined by the laws of Science.

His many publications include The Large Scale Structure of Spacetime with GFR Ellis, General Relativity; An Einstein Centenary Survey, with W. Israel, and 300 years of Gravity, with W. Israel. Among the popular books Stephen Hawking has published his best seller A Brief History of Time, Black Holes and Baby Universes and other Essays, The Universe in a Nutshell, The Grand Design and My Brief History.

Professor Hawking has twelve honorary degrees. He was awarded the CBE in 1982, and was made a companion of Honour in 1989. He is the recipient of many awards medals and prizes, he is a fellow of the Royal Society and a member of the US National Academy of Sciences.

Stephen was diagnosed with ALS, a form of Motor Neurone Disease, shortly after his 21<sup>st</sup> birthday. In spite of being wheelchair bound and dependent on a computerised voice system for communication Stephen Hawking continues to combine family life and his research into theoretical physics together with an extensive programme of travel and public lectures. He still hopes to make it into space one day.





## Dr. C. V. Raman And His Contribution to Science



Mahesh Ramchandra Pisal, B.Sc.II

### Introduction :

The genius who won the Nobel Prize for Physics, with simple equipment barely worth Rs.300. He was the first Asian scientist to win the Nobel prize. He was a man of boundless curiosity and lively sense of humour. His spirit of inquiry and devotion to science laid the foundation for scientific research in India and he honor as a scientist and affection as a teacher and a man.

Tiruchirapalli is a town on the banks of the river Cauvery. Chandrasekhara Ayyar was a teacher in school there. He was scholar in Physics and Mathematics. He loved music. His wife was Parvathi Ammal. The second son was born on 1888, Nov, 7. They named the boy VENKAR RAMAN. He was also called CHANDRASEKHARA VENKAT RAMAN OR C.V.RAMAN.

RAMAN grew up in an atmosphere of music, Sanskrit literature and Science. He stood first in every class and was talked about as a child genius. He joined the B.A. class of the presidency college. In the year 1905, he was the only boy who passed in the first class. He won a gold medal, too.

He joined M.A.class in the same college and choose Physics (study of matter and energy) as the main subject of study. Love of Science, enthusiasm for work and the curiosity to learn new things were natural to Raman. Nature had also given him the power of concentration and intelligence. He used to read more than what was taught in the class.



The works of German Scientist Helmholtz (1821-1891) and the English Scientist Lord Raleigh (1842-1919) on acoustics (the study of sound) influenced Raman. He took immense interest in the study of sound. When he was eighteen years of age, one of his research paper was published in the 'PHILOSOPHICAL MAGAZINE' of England. Later another paper was published in the scientific journal 'NATURE.'

#### 210, Bow Bazaar street :

One evening Raman was returning from his office in tramcar. He saw the name plate of the 'Indian Association for the Cultivation of Science' at 210, Bow Bazaar street. Immediately he got off the tram and went in. Dr. Amritlal Sircar was the honorary secretary of the Association. There were spacious rooms and old scientific instruments, which could be used for demonstration of experiments.

Raman asked whether he could conduct research there in his spare time. Sircar gladly agreed. Raman took up a house adjoining the Association. A door was provided between his house and the laboratory. During the daytime he would attend his office and carry at his duties. His morning and nights were developed to research. This gave him full satisfaction. So he continued his ceaseless activities in Calcutta.

#### The Great Teacher :

That was a time ..... Raman was completely immersed in experiments

and research. According to terms of the Palit chair, he could have remained free from teacher work, doing research only. But Raman had great pleasure in teaching. Students were inspired by his lectures. They were eager to listen to him. He would not stick to one particular textbook. His lectures brought the fragrance of fresh research. They reflected Raman's great curiosity about the secrets of nature. Usually the lecture was of an hour's duration. Forgetting the time in the discussion of the subject, Professor Raman would sometimes lecture for two or three hours. Any doubt or question from a student would stimulate new scientific ideas.

#### In England :

Raman went to England as the representative of Calcutta University. This was his first visit abroad.

Raman lectured in the 'Physics Society' of London. People came in large numbers to listen him. He was introduced to J.J. Thomson and Ernest Rutherford, the famous English Physicists. Raman visited St. Paul's Church in London. A whisper at one point of the Church tower is heard clearly at another point. This effect produced by the reflection of sound, aroused his curiosity.

#### RAMAN EFFECT :

Sometimes a rainbow appears and delights our eyes. We see it in shades of red, orange, yellow, green, blue,



indigo and violet. The white ray of the sun includes all these colours. When a beam of sunlight is passed through a glass prism a patch of these colour-bands are seen. This called a spectrum. The spectro-meter is an apparatus used to study the spectrum. Spectral lines in it are characteristic of the light passing through the prism. A beam of light that causes a single spectral line is said to be monochromatic.

When a beam of monochromatic light passed through a transparent substance ( a substance which allows light to pass through it), the beam is scattered. Raman spent a long time in the study of the scattered light....On February 28, 1928, he observed two low intensity spectral line corresponding to the incident monochromatic light. Years of his labor had borne fruit. It was clear that though the incident light was monochromatic, the scattered light due to it, was not monochromatic. Thus Raman's expt. discovered a phenomenon which was lying hidden in nature.

The 16<sup>th</sup> of March 1928 is the memorable day in the history of science. On that day a meeting was held under the joint auspices of the South Indian Science Association and The Science club of central college, Bangalore; Raman was the chief guest. He announced new phenomenon discovered by him to the world. He also acknowledged with

affection the assistance given by K.S.Krishnan and Venkateshwarn, who were his students.

The phenomenon attracted the attention of research workers all over the world. It becomes famous as the 'RAMAN EFFECCT.' The spectral line in the scattered light were known as 'RAMAN LINES.'

Is slight wave-like or particle like ? This question has been discussed from time to time by scientists. The Raman Effect confirmed that light was made up of particles known as 'photons.' It helped in the study of the molecoler and crystal structures of different substances.

#### World-Wide Interest In Raman Effect :

Investigations making use of Raman Effect began in many countries. During the first twelve yrs. after its discovery, about 1800 research paper were published on various aspects of it and about 2500 chemical compounds were studied. Raman Effect was highly praised as one of the greatest discoveries of the third decade of this century.

After the 'lasers' (devices that produce intense beams of light, their name coming from the initial letters of 'Light Amplification by Stimulated Emission of Radiation) came into use in the 1960's, it became easier to get monochromatic light of very high intensity for experiments. This brought





back scientific interest in Raman Effect and the interest remains alive to this day.

**The Nobel Prize :**

The highest award a scientist or a writer can get is the Nobel Prize. In 1930, the Swedish Academy of Sciences chose Raman to receive the Nobel Prize for Physics. No Indian and no Asian had received the Nobel Prize for Physics upto that time. At the ceremony for the award, Raman used alcohol to demonstrate the Raman Effect. Later in the evening alcoholic drinks were served at the dinner. But Raman did not touch them. He remained loyal to the Indian tradition.

**In Bangalore :**

He came to Bangalore as the Director of the Tata Institute (the Indian Institute of science) in 1933. The Tata Institute soon became famous for the study of crystal. The diffraction of light by ultrasonic waves in a liquid was elegantly by Raman and Nagendranath. This became known as the 'RAMAN-NATH' Theory.

**The Indian Academy of Science :**

In order to encourage Scientific research in India, Raman established the Indian Academy of Sciences in 1934. From that year the Science journal 'The Proceedings of the Academy' is being published every month.

The Government of Mysore granted 24 acres of land to promote the activities of the Academy. It was his

earnest desire to bring into existence a center of scientific research worthy of our ancient country. Where the keenest intellectuals of our land can probe into the mysteries of the universe.' He fulfilled his wish by establishing a Research Institute at Hebbal, Bangalore. He did not seek help from the Govt. but gave away all his property to the Institute. The Executive committee of the Academy named the center 'RAMAN RESEARCH INSTITUTE.'

**The RAMAN RESEARCH INSTITUTE :**

In 1948 this great scientist entered on one more active phase of life when he became the Director of 'Raman Research Institute.' The Institute became the center of all his activities. A garden and tall eucalyptus trees surrounded it. He used to say, "A Hindu is required to go to the forest in old age, but instead of going to the forest, I made the forest come to me." At the Institute he could concentrate on things that interested him. He was alone with his work and was happy. At the entrance to the Institute was a board bearing the words, "The Institute is not open to visitors. Please do not disturb us."

He did research on sound, light, rocks, gems, birds, insects, butterflies, sea shells, trees, flowers, atmosphere, weather and physiology of vision and hearing. His study covered such different fields of Science as Physics, Geography, Geology, Biology and

.....



Physiology. Among them sound and colours particularly attracted him. Once he even went around shops to select sarees of different colour designs.

**Delight in Colour and Light :**

Raman collected rocks and precious stones. His invaluable connection included hundreds of objects such as sand that melted due to lightning, rock. Indicating the lava flow during volcano and diamonds, rubies and sapphires.

Raman used to announce his new scientific discoveries at the annual sessions of the academy. At the Madras Session (1967) he discussed the influence of the earth's rotation on its gaseous envelope. Next year he put forward his theory of the Physiology of Vision.

**Achievements :**

He was the first Indian scholar who studied wholly in India received the Nobel Prize.

C.V.RAMAN is one of the most renowned scientist produced by India. His full name was Chandrasekhara Venkata Raman. For his pioneering work on scattering of light, C.V.Raman won the Nobel Prize for Physics in 1930.

Chandrasekhara Venkata Raman was born on 1888 Nov, 7. In Tiruchirapalli, Tamil Nadu. He was the second child of Chandrasekhar Iyer and Parvathi Amma. His father was a lecturer in Mathematics and Physics,

so he had an academic atmosphere at home. He entered presidency college, Madras, in 1902 and in 1904 passed his B.A. examination, winning the first place and the gold medal in Physics. In 1907, C.V.Raman passed his M.A. obtaining the highest distinction.

During those times there were not many opportunities for scientists in India. Therefore Raman joined the Indian Finance Department in 1907. After his office hrs, he carried out his experimental research in the laboratory of the Indian Association for the cultivation of Science at Culcutta. He carried out research in acoustics and optics.

In 1917, Raman was offered the position of sir Taraknath Palit Profesorship of Physics at Culcutta University. He stayed there for the next fifteen years. During his tenure there he received world wide recognition for his work in the optics and scattering of light. He was elected to the Royal Society of London in 1924 and the British made him a knight of the British Empire in 1929. In 1930, sir C.V.Raman was awarded with Nobel Prize in Physics for his work on scattering of light. The discovery was later christened as "Raman Effect."

In 1934 C.V.Raman became the director of the newly established Indian Institute of science in Bangalore, where two years later he continued as a professor of Physics. Other



investigations carried out by Raman were; his experimental and theoretical studies on the diffraction of light by acoustic waves of ultrasonic and hypersonic frequencies and those on the effects produced by x-ray on infrared vibrations in crystal exposed to ordinary light. In 1947, he was appointed as the first National professor by the new government of independent in 1948 and a year later he established the Raman Research Institute in Bangalore, where he worked till his death.

**Contributions and Achievements :**

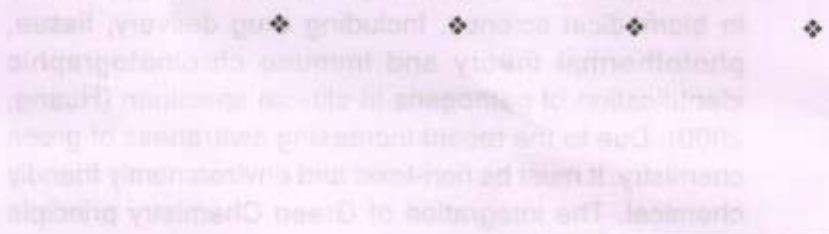
On a sea voyage to Europe in 1921, Raman curiously notice the blue colour of the glaceris and the Mediterranean. He was passionate to discover the reason of the blue colour. Once Raman returned to India, he performed many experiments regarding the scattering of light from water and transperent blocks of ice. According to result, he established the scientific explanation for the blue colour of sea-water and sky.

There is captivating event that served as the inspiration for the discovery of the Raman Effect. Raman was busy doing some work on a Dec. evening in 1927. When his student K.S.Krishnan gave him the news that

professor compton has won the nobel prize on scattering of x-rays. This led Raman to have some thoughts. He carried out some experiments to establish his Raman employed monochromatic light from mercury are which penetrated transperent materials and was allowed to fall on a spectrograph to record its spectrum. During this Raman was detected some new lines in the spectrum which were later called 'Raman line.' After a few months Raman put forward his discovery of 'Raman Effect' in a meeting of scientist at Bangalore on March 16, 1928, for which he won the Nobel Prize in 1930.

**Later Life and Death :**

Sir C.V.Raman became the fellow of the Royal society of London in 1924. A year later, he set up Raman Research Institute hear Bangalore, where he continued the scientific research until his death which was caused by strong heart attack on Nov. 21, 1970. His sincere advice to aspiring scientist was that "scientific research needed independent thinking and hard work, not equipment."





## Green Synthesis of Gold From Oliver Leaf



Bhagyashri S. Ghatage, M.Sc.I

### Abstract :

The biological synthesis of gold nanoparticle (AURIPs) and various shape (triangle, hexagonal, spherical) using not H<sub>2</sub>O olive leaf extra as reducing agent is reported size and shape of Au nanoparticle are modular by varying the ratio of metal salt and extract in react<sup>n</sup> medium only 20 min. are required for conversion into gold nanoparticle at Room temp. Suggesting a reaction rate higher or comparable to those of nanoparticales synthesis by chemical methods. The variation of the p<sup>H</sup> of the reaction medium gives AUNPs, nanoparticles of different shapes. The nanoparticle obtained are characterized by UV-vis spectrascopy, Phototuminsce transmission electron microscopy (TEM), X ray differact (XRD), FITR spectra and thermogravimetric analysis. The TEM image showed that a mixture of shape (triangular, hexagonal, spherical) structure was formed at lower leaf both concentration and high P<sup>H</sup>, while smaller spherical shapes were obtained at higher leaf broth concentration and low P<sup>H</sup>.

### Introduction :

Gold nanoparticle have been considered has an imparel of research due to their unique and tunable surface plasmon resorman (SPR) and their application in biomedical science. Including drug delivery, tissue, photothermal theory and immuno chromatographic identification of pathogens in clinical specimen (Huang, 2000). Due to the recent increasing awareness of green chemistry. It must be non-toxic and environmently friendly chemical. The integration of Green Chemistry principle



of nanotechnology is one of the key issue in nanoscience research. Since the development of the concept of green nanoparticle preparation by (raveenbran et al. 2003) there is growing the need for environmentally begining metal nanoparticle synthesis process that not use toxic chemical on the synthesis protocols to avoid adverse effect in medical application. Both Ag and Au nanoparticle are excellent-nanomaterials providing a powerful platform in biomedical application of biomolecular recognition, biosensing drug deliver and molecular imaging csperring et al. 2008 and wilson 2008. Throughtout the history of civilisation the olive plant has been important source of nutrition and medicine.

The major active components in olive leaf are known to be oleuropein and its derivatives such as hydroxy tyrosol and tyrosol, as well as coefic acid, p-coumaric acid, vanillin, luteolin, diosmetin-7-glucoside.

So for there is no report on the synthesis of nanoparticles using olive leaf extracts. In this paper we report on the synthesis of gold nanoparticles using hot water olive leaf extracts as simple low cost and reproducible method.

#### Experimental :

##### Material :

HAUCL 4.3 H<sub>2</sub>O 99.9% was purchased from Aldrich. The 1.0 gram of olive leaf broth was boiled for 15 min filtered and completed to 100 ml to get

the extract. The filtrate that was used as reducing agent was kept in the dark at 10<sup>0</sup>c to be used with in 1 week. A stock sum of HAUCL<sub>4</sub> was prepared by dissolving 1.0 g. HAUCL<sub>4</sub> in 100 ml deionized water.

##### Instrumentation :

The UV-Vis spectra were recorded at Room temp. using a > -Helios, Sp pye-unicam sptrophotometer with sample in quarlz cuvettes.

Photoluminsce speara were recorded on a Perkin-Elmer LS 50 B luminscence spectrophotometer.

Transmission electron microscopy (TEM) studies were performed using a JEOL-JEM 1200 electron microscope operating at accelarating voltage of 90 kv. for the TEM measured a drop of sol<sup>n</sup> containing the particle clew was deposited on copper grid covered with amorphous carbon. After following the film to stand for 2 min. The extra sol<sup>n</sup> was removed by means of blotting paper and the grid allowed drying before the measurement. Fourier transform infrared (FITR) spectra were recorded at Room temperature on a Nicole 6700 FITR spectromenter for the FITR measurements of cupped gold nanoparticles a small amount of gold nanoparticles (0.019) dried at 60<sup>0</sup> c for 4 hours were mixed with K Br to form around disk suitable for FITR measurement. To obtain the FITR specturm of the extract, an appropriate amount of the extract was mixed with



KBr. Thermogravimetric analyser were carried at with a heating rate of  $10^{\circ}$  c/ min. using shimadzu DT-50 thermal analyser.

#### Synthesis of Gold nanoparticles :

For the synthesis of Gold nanoparticles a certain volumes of the olive leaf extract (0.1-6ml) was added to the  $\text{HA}_4\text{Cl}$   $4.3 \text{ H}_2\text{O}$   $\text{Sol}^n$  and volume was adjusted to 10 ml with de-ionized water. The final conc. of Au was  $1.3 \times 10^{-4}$  m. The reduction process of  $\text{Au}^{3+}$  to Au nanoparticles was followed by the change in the colour of the  $\text{sol}^n$  from yellow to violet to dark pink at green depending on to the extract concentration.

The nanoparticles prepared by different  $\text{P}^{\text{H}}$  values, the  $\text{P}^{\text{H}}$  of the solution ( $1.3 \times 10^{-4}$  m  $\text{AuCl}_4$  and 2ml extract in 10 ml flask) were adjusted using 0.1 N HCl or 0.1 N  $\text{NaOH}$  solution.

#### Results and Discussion :

##### UV-Vis spectra of gold nanoparticles :

The formation of stability of gold nanoparticles were followed by UV-vis spectroscopy. The UV-vis spectra of gold nanoparticles formation using a constant.  $\text{HAUCL}_4$  conc ( $1.3 \times 10^{-4}$  m) with different concentration of the extract. The inset shows photos of the colour change of the gold nanoparticle with changing olive leaf extract conc. The violet pink to dark pink colour observed is characteristics for the surface plasmon resonance (SPR) of different size of gold nanoparticles. The

leaf both extract quantities were varied from 0.2 to 6 ml notably, in the range of low amount of the leaf extract. The absorption spectra exhibit a gradual increase of the absorbance accompanied with a shift in a  $\lambda_{\text{max}}$  from 545 to 530 nm. On the other hand, upon addition higher amounts of the extract (3-6 ml), the  $\lambda_{\text{max}}$  was shift to longer wavelength and the green colour of the AuNPs  $\text{sol}^n$  was developed. Above 5 ml there is slight decrease in the absorption and negligible change in the absorbance indicating the attainment of saturation in the bioreduction of  $\text{Au}^{3+}$ . The absorption maximum at about 545 nm attributed to the surface plasmon resonance band of the gold nanoparticles. The interaction of light having wavelength of smaller than nanoparticle size of the AuNPs. Reads to polarized of free conduction electron w.r. to the heavier ionic core of the AuNPs therefore, an electron dipolar oscillation created and a surface plasmon absorption band is formed.

##### Effect of $\text{P}^{\text{H}}$ :

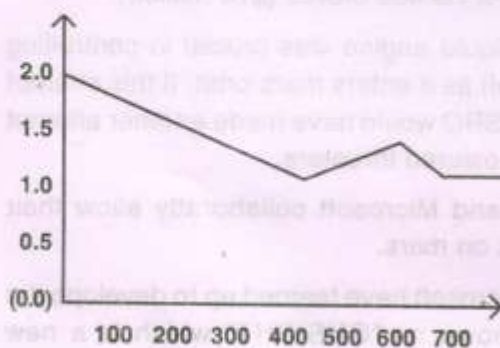
Shows the effect of the PH on the formation of gold nanoparticles. It can be seen that absorbance increases with increasing  $\text{P}^{\text{H}}$  up to  $\text{P}^{\text{H}}$  9.6 with blue shift in the spectra. The colour changed from blue in acidic medium to red purple in basic medium. At acidic  $\text{P}^{\text{H}}$ , the particle size is expected to be larger than at the basic  $\text{P}^{\text{H}}$ , as a red shift was clearly reported in SPR spectra (Haiss et al.....2007). This



result was confirmed by TEM measurements of  $P^H$  3.33 and 9.6. The size of the particle at  $P^H$  3.3 was longer while forming hexagonal structures. Further more, the particle formed in acidic medium were unstable and ppt within 12 hours. The PL-Spec-clra of AUNPs as function of increasing  $P^H$  from 2.3 to 9.0 with slight shift to longer wavelentths and then increases again at  $P^H$  10. This behaviour of in reverse to the fact that an increasing of  $P^H$  will make the capping of the nanoparticle surface more efficient and support formation of smaller nanoparticles. This again suggest that the  $P^H$  of the AUNPs depends upon the nature and structure of the capping biomolecules.

**Thermal Studies :**

The TGA plots of caped gold nanoparticles prepared using high olive leave extract showed a steady at loss in the temp range of 100-550<sup>0</sup> c. The weight loss of the nanoparticles or nanopowder due the desorption of bioingorganic compound in the A<sub>4</sub>NPs was 62.35%.



**Conclusion :**

The high phenolic extent of the Hot H<sub>2</sub>O extract of olive leaves having strong anti-oxidant proper help in the reduction of gold action of AUNPs. The characterised of AUNPs revealed that the morphology of AUNPs depends upon the extract conc. and  $P^H$  of the used madium. At higher conc. of the extract and basic  $P^H$  the Pseudo spherical particles are capped by photochemical. This method of AUNP synthesis does not use only toxic reagent and thus has great potential for the use in biochemical applications and will plays an important role in future optoelectric and biomedical device application.

**Reference :**

- A NKM war et al.2005 B.Ankamwar, M.Chaudary - M.Shastry-Gold nanotriangles.
- biological synthesised using tarmarid leaf extract and potential application in vapour sensing pp.19-26.
- Asian and Perez-Luna 2002 K.Asian, V.H.Perez-Lung surface modification of colloidal gold by chemisorption of alkane thiols in presence of nonionic surfactants. Longmuir, volume 18, 2002 PP.6059-6065.
- Haiss et al 2007 W.Haiss N.T.K.
- Thanh.S.Aveyard D.G.Ferming Determination of size and Conc. of gold nanoparticles from UV-vis spedra.





## ISRO's Journey To The Mars

Deepak S. Naik, M.Sc.II

### Importance of Successful MOM :

The former Sovietunion and the U.S., who began their mars persuits in the 1960's, as well as Japan and China, failed in their first attempt to put their spacecraft into the martian orbit. The U.S.Mariner-3 failed in 1964 and the Japanese NOZOMI did not make it in 1988, Russia's photos-grunt mission with a Chinese payload, failed in 2011.

ISRO's Mars orbiter insertion is a resounding success, making India the first country to be successful on its maiden mass mission. Nicknamed 'Mangalyaan.' The success of the mars orbiter mission has boosted India's five-decade-old space programme. Prime minister Narendra Modi congratulated ISRO's scientists and addressed the country on the historic occasion.

The 'MOM' is Indias first interplanetary mission. It was launched on November 5, 2013 from 'Shriharikota' in Andhra Pradesh with the powerful polar satellite launch vehicle (PSLV). The mission was approved by the Indian government in August 2012, and was executed in 15 months at a cost of Rs.450 crores (\$74 million).

Starting the liquid engine was crucial in controlling the velocity of craft as it enters mars orbit. If this attempt had not worked. ISRO would have made another attempt using eight fuel powered thrusters.

Now, NASA and Microsoft collaboratly allow their scientists to work on mars.

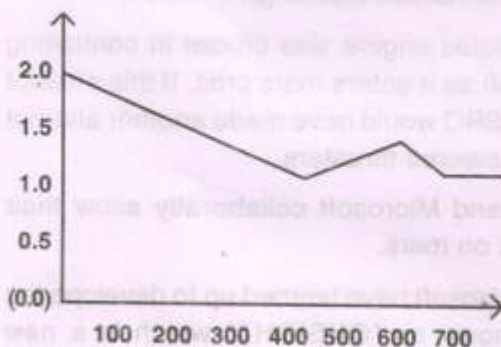
NASA and Microsoft have teamed up to develop the new software known as "ONSIGHT" which is a new



result was confirmed by TEM measurements of  $P^H$  3.33 and 9.6. The size of the particle at  $P^H$  3.3 was longer while forming hexagonal structures. Further more, the particle formed in acidic medium were unstable and ppt within 12 hours. The PL-Spectra of AUNPs as function of increasing  $P^H$  from 2.3 to 9.0 with slight shift to longer wavelenths and then increases again at  $P^H$  10. This behaviour of in reverse to the fact that an increasing of  $P^H$  will make the capping of the nanoparticle surface more efficient and support formation of smaller nanoparticles. This again suggest that the  $P^H$  of the AUNPs depends upon the nature and structure of the capping biomolecules.

**Thermal Studies :**

The TGA plots of capped gold nanoparticles prepared using high olive leave extract showed a steady at loss in the temp range of 100-550<sup>0</sup> c. The weight loss of the nanoparticles or nanopowder due the desorption of bioingorganic compound in the A<sub>4</sub>NPs was 62.35%.



**Conclusion :**

The high phenolic extent of the Hot H<sub>2</sub>O extract of olive leaves having strong anti-oxidant proper help in the reduction of gold ion of AUNPs. The characterised of AUNPs revealed that the morphology of AUNPs depends upon the extract conc. and  $P^H$  of the used medium. At higher conc. of the extract and basic  $P^H$  the Pseudo spherical particles are capped by photochemical. This method of AUNP synthesis does not use only toxic reagent and thus has great potential for the use in biochemical applications and will plays an important role in future optoelectric and biomedical device application.

**Reference :**

- A NKM war et al.2005 B.Ankamwar, M.Chaudary - M.Shastry-Gold nanotriangles.
- biological synthesised using tarmarid leaf extract and potential application in vapour sensing pp.19-26.
- Asian and Perez-Luna 2002 K.Asian, V.H.Perez-Lung surface modification of colloidal gold by chemisorption of alkane thiols in presence of nonionic surfactants. Longmuir, volume 18, 2002 PP.6059-6065.
- Haiss et al 2007 W.Haiss N.T.K.
- Thanh.S.Aveyard D.G.Ferming Determination of size and Conc. of gold nanoparticles from UV-vis spedra.





## ISRO's Journey To The Mars

Deepak S. Naik, M.Sc.II

### Importance of Successful MOM :

The former Sovietunion and the U.S., who began their mars persuits in the 1960's, as well as Japan and China, failed in their first attempt to put their spacecraft into the martian orbit. The U.S.Mariner-3 failed in 1964 and the Japanese NOZOMI did not make it in 1988, Russia's photos-grunt mission with a Chinese payload, failed in 2011.

ISRO's Mars orbiter insertion is a resounding success, making India the first country to be successful on its maiden mass mission. Nicknamed 'Mangalyaan.' The success of the mars orbiter mission has boosted India's five-decade-old space programme. Prime minister Narendra Modi congratulated ISRO's scientists and addressed the country on the historic occasion.

The 'MOM' is Indias first interplanetary mission. It was launched on November 5, 2013 from 'Shriharikota' in Andhra Pradesh with the powerful polar satellite launch vehicle (PSLV). The mission was approved by the Indian government in August 2012, and was executed in 15 months at a cost of Rs.450 crores (\$74 million).

Starting the liquid engine was crucial in controlling the velocity of craft as it enters mars orbit. If this attempt had not worked. ISRO would have made another attempt using eight fuel powered thrusters.

Now, NASA and Microsoft collaboratly allow their scientists to work on mars.

NASA and Microsoft have teamed up to develop the new software known as "ONSIGHT" which is a new



technology that will enable scientist to work virtually on mars using a wearable technology called as "Microsoft Hololens."

NASA's Jet Propulsion Laboratory in Pasadena in California has developed this. The 'Onsight' will give the scientists a means to plan and conduct science operations on the red planet, along with mars curiosity rover.

"Onsight" technology gives rover scientists the ability to walk around and explore mars right from their offices." The program executive 'Dave Lavery'

said that, "it fundamentally changes our perception of mars and how we understand Mars environment surrounding the rover.

Onsight will use real rover data and extend the curiosity missions existing. Planning tools by crating a 3-D simulation of the martian environment where scientists around the world can meet. Program scientists will be able to examine the rovers worksite from a first person perspective, plan new activities and preview the results of their work first hand.

**JOKES**

Teacher : if you had 12 apples, 10 oranges, 5 pineapples, 15 strawberries, what would you have ?

Student : A yummy fruit salad. Ma'am !

Teacher : Tony, tell me a sentence starting with "I"

Tony : I is...

Teacher : No Tony, that is incorrect, say "I am..."

Tony : Okay Ma'am, "I am the 9th letter in the English alphabet series !"

Father : What did the teacher think of your idea?

Son : She took it like a lamb

Teacher : Really ?, what did she say ?

Son : Baa !

**Ganesh Jadhav**  
B.A.I

**ACTIVE**

For the struggling way of life,  
I have to struggle till the 'Goat' is active.

For the shining rays of sun,  
I have to shine till the 'Glow' is active.

For the reflecting bay thoughts,  
I have to reflect till the knowledge is active.

For the singing world of moral  
I have to sing till the morality is active.

For the praying voice of humans  
I have to pray till the faith is active.

For the opening eyes of mine,  
I have to open the 'Heaven of truth'  
till 'The death is Active'

**Ganesh Jadhav**  
B.A.I





## Ralizing The Spirit : Swami Vivekanand

Avinash Shivaji Kamble, M.Sc.I

Worship of the Impersonal God is through truth. And what is truth ? That I am He-when I say that I am not Thou. it is untrue, when I say I am separate from you, it is a lie, a terrible lie. I am one with this universe, born one. It is self-evident to my senses that I am one with the universe. I am one with the air that surrounds me, one with heat, one with light, eternally one with the whole Universal Being, who is called this universe, who is mistaken for the universe, for it is He and nothing else, the eternal subject in the heart who say, "I am," in every heart-the deathless one, the sleepless one, every awake, the immortal, whose glory never dies, whose powers never fail. I am one with that.

Although a man has not studied a single system of philosophy, although he does not believe in any God and never has believed, although he has prayed never even once in his whole life, if the simple power of good action has brought him to that state where he is ready to give up his life and all else for others, he has arrived at the same point to which the religious man will come through his knowledge; and so you may find that the philosopher, the worker, and the devotee, all meet at one point, that one point being self abnegation.

It is degradation to worship God through fear of punishment; such worship is, if at all, the crudest form of the worship of love. As long as there is any fear in the heart, how can there be love also ? Love conquers naturally all fear.







## Green House Effect

Pallavi Pawar, Shital Sabale, M.Sc.I

### Introduction :

The term Green house effect, first coined by J. Fourier in 1827, is also called atmospheric effect, global warming or carbon dioxide problem. The earth is heated by sunlight and some of the heat that is absorbed by the earth is radiated back into space. However, some of the gases in the lower atmosphere, acting like glass in the green house, allow the solar radiation to come in but do not allow the earth.

Of the total solar flux, some portion is reflected back into space and does not contribute to the energy budget of the earth. The reflected portion consist of 6 units from earth's surface, 17 units due to clouds and 8 smoke, salt from sea spray, forest fires and volcanic ash. Thus total reflectivity of earth is 31 units or 31%. This is called Earth's albedo of the non reflecting 69 units of solar energy, 4 units are absorbed and retained within the earth's atmosphere by water droplets in the clouds and 19 units are absorbed by aerosols and gaseous species such as ozone. Hence 23% of the solar energy reaching the earth is absorbed in the atmosphere and 46% is absorbed by the land or water.

### Green House Effect :

Green house means a building made of glass, with heat and humidity regulated by plant. Atmosphere, like glass absorbs some of the long wave radiation emitted by earth and radiates the energy back to the earth. A green house is that body which allows the short wavelength incoming solar radiation to come in, but does



not allow the long wavelength outgoing terrestrial infra red radiation to escape.

In a similar way, the earth's atmosphere battle up the energy of the sun, and act like a green house where  $\text{CO}_2$  act as glass windows,  $\text{CO}_2$  and water vapour in the atmosphere transmit short wavelength solar radiation but reflect the longer wavelength heat radiation from warmed surface of the earth.  $\text{CO}_2$  molecules are transparent to sunlight but not to the heat radiation. So they trap and re-enforce the solar heat stimulating an effect which is popularly known as green house effect.

**It is defined as follows :**

- Green house effect is progressive warming up of the earth's surface due to blanketing effect of manmade  $\text{CO}_2$  in the atmosphere.
- Green house effect is the phenomenon due to which the earth retains heat.
- Green house effect means the excessive presence of  $\text{CO}_2$ ,  $\text{CH}_4$ ,  $\text{N}_2\text{O}$ , CFCs etc blocked in the IR radiation from the earth's surface to the atmosphere leading to an increase in temperature, which in turn would make life difficult on earth.

**How the Green House Effect is Produced ?**

Under normal concentration of  $\text{CO}_2$ , the temperature of the earth

surface is maintained by the energy balance of the sun rays that strike the earth and the heat that is radiated back into the outer space. However, when concentration of  $\text{CO}_2$  in the atmosphere increase, the thick envelope of this gas prevents the heat from being re-radiated out, the heated earth can re-radiate this absorbed energy as the radiation of longer wavelength.

The thick  $\text{CO}_2$  layer act like the glass panels of a green house or the window's glass of a closed car, allowing the sun rays to filter through but prevent the heat to escape. The effect is to trap the sun's warmth. Thus green house effect is based on the principle of infra red absorption characteristics of gases. Thus green higher concentration of  $\text{CO}_2$ , greater will be the absorption of thermal radiaton i.e.more IR radiation is trapped and re-emitted back to earth's surface causing heat trap and increasing global temperature.

**Green House Coefficient :**

A green house coefficient may be defined as the ratio of the surface temperature to the absolute radiation temperature of the whole system far the eath. This coefficient is  $290/255=1.137$ , while for the planet venus it appears to be  $700\text{k}/256=2.60$  venus. Thus, has a much larger green-house than earth, this is presently believed to be caused by higher concentration of sulphuric acid in the venus atmosphere.







## 7 Scientific Ways To Catch A Lion

Akshay Anand Patil, M.Sc.I

### 1) Newton's Method :-

Let the lion catch you.

For every action there is equal and opposite reaction.

Implies you caught lion.

### 2) Einstein Method :-

Run in the direction opposite to that of the lion.

Due to higher relative velocity, the lion will also Run faster and will get tired soon.

Now you can trap it easily.

### 3) Schrodinger Method :-

At any given moment, there is a positive probability that lion to be in the cage. So set the trap, sit down and wait.

### 4) Inverse Transformation Method :-

We place a spherical cage in the forest and enter it.

Perform an inverse transformation with respect to lion.

Lion is in and we are out.

### 5) Thermodynamic Procedure :-

We construct a semi-permeable membrane which allows every thing to pass through it except lions.

Then sweep the entire forest with it.

### 6) Integration Differentiation Method :-

Integrate the forest over the entire area.

The lion is some where in the result.

So differentiate the result PARTIALLY w.r.t. lion to trace out the lion.







## Chemical Analysis Of Life

Atul Shamrao Kumbhar, M.Sc.I

### Aim-

To study life and its properties.

### Defination-

Life is a mixture of various elements such as happiness, tension, disappointment, achievement, failures and dedication all put together.

### Chemical Equation-

Experience + Achievement + Struggle + Happiness + Success

### Chemical Properties of Life :-

- 1) Light that makes the world shine.
- 2) Isotope of good and bad times.
- 3) Furnishes struggles and opportunities for the same.
- 4) External support of love and friendship.

### Preparation (Laboratory Method)-

- 1) Take a sample quantity of sweet and sour experiences, disappointments and achievements.
- 2) Mix them in a round bottom flask containing the high doses of self

confidence and spiritual strength.

- 3) Then add the elixes like drams, ambitions and goals.
- 4) Allow this mixture to boil for some time. Note that the reaction can be fastened by the most readily available catalyst i.e.struggle.
- 5) After the process of heating, a homogenous mixture of life is obtained.

During the experiment, check the frustration coefficient time to time.

Strong determination must properly be mixed into the solution.

### Conclusion :-

From the above experiment, it can be concluded that life is a concoction of various ingredients. All these are very precious. Thus, life is very treasured result of all external and internal interactions.



बहादुरीय

संस्कृत



बहादुरीय

संस्कृत

संस्कृत

बहादुरीय

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

बहादुरीय

संस्कृत

बहादुरीय

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय  
सातारा

बहादुरीय

संस्कृत

संस्कृत

बहादुरीय

संस्कृत  
विभाग

(वरिष्ठ महाविद्यालय)

विभागीय संपादक

प्रा. डॉ. श्रीमती सुहासिनीदेवी

शहाजीराव राजेभोसले

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।  
नास्ति येषां यशः काये जरामरण जन्मभीः ।  
-भर्तृहरी

ज्यांच्या कीर्तिरूपी शरीराला वार्धक्य व मृत्यू  
यांच्यापासून निर्माण होणारी भीती नसते,  
असे ते पुण्यवान रसांच्या बाबतीत  
प्रवीण असलेले प्रसिध्द महाकवि श्रेष्ठ होत.



## अनुक्रमणिका

### गद्य विभाग

- |  |                     |                      |    |
|--|---------------------|----------------------|----|
| १) देववाणी - संस्कृतभाषा ।                       | कु.अर्चना पवार      | कलायां प्रथम वर्षे   | ८७ |
| २) अजातशत्रुः - 'आवा'<br>मा.आर.आर.पाटील महोदयः । | कु.पूजा शेळे        | कलायां द्वितीय वर्षे | ८८ |
| ३) विज्ञानं आनंदम् ।                             | कु.नूतन चव्हाण      | कलायां प्रथम वर्षे   | ८९ |
| ४) हर हर गङ्गे । नमामि गङ्गे ॥                   | कु.प्रणाली देशपांडे | कलायां प्रथम वर्षे   | ९० |





## देववाणी - संस्कृतभाषा ।

कु. अर्चना पवार, कलायां प्रथम वर्षे

‘यदि नो संस्कृता वाणी, यदि नो संस्कृतं मनः ।  
यदि नो संस्कृताचारः संस्कृताध्ययनेन किम् ॥

इत्यस्मिन् श्लोके संस्कृताध्ययने वाक् मनस् च आचारः  
च संस्कृतमया भवन्ति इति उक्तमस्ति ।

भारतीय संस्कृतेः प्रधानाधारः संस्कृतमेव वैदिक  
भाषायां नैके ग्रंथाः संस्कृतिमेव सूचयन्ति । अस्माकं  
संस्कृतिज्ञानं सर्वमेव संस्कृतग्रन्थे वर्तते । अस्माकं  
ऋग्वेदादिग्रन्थान् सर्वेषु विश्वेषु प्राचीनाः ग्रन्थाः । यद्यपि  
आद्यः ग्रन्थाः वर्तते । तस्य संस्कृतस्य आकलनार्थं  
आवश्यकता अस्ति । शिक्षणप्रणाल्याम् अधिकृत्य भारतीय  
वाङ्मये सर्वत्र नैके विचारा प्रतिपादिताः सन्ति । भारतीय  
भाषाणां सम्यक् ज्ञानार्थं संस्कृतस्य महत्त्वं वर्तते इति ।

जर्मन कविः मैक्सम्युलर महोदयः उवाच - San-  
skrit is the greatest language of World.

अस्माकं राष्ट्रपिता म. गांधी उवाच - “संस्कृतस्य  
अध्ययनेन विना कोऽपि जनः खलु भारतीयः ज्ञातवन्तः च  
न भवति इति ।”

भारतरत्नः डॉ. भीमराय आंबेडकर महोदयस्य  
संस्कृतस्युहा अतुलनीयमेव अस्ति । कार्यकारण्यं तथा संसदे  
तेन संस्कृतभाषा राष्ट्रभाषाः भवतु इति प्रस्तावः कारितः  
किन्तु दिष्ट्वा तस्य मतं न स्वीकृतः पारितः च ।

यतो हि एके उवाच-

‘यस्यामखिलराष्ट्रस्य सचितं ज्ञानवैभवम्  
आत्मीयत्वं च सश्रद्धं राष्ट्रभाषेति सा स्मृत ।  
प्रादेशिकीनां सर्वासां भाषाणां जन्मदायिनी  
तथा पोषणकर्त्री च राष्ट्रभाषेति सा स्मृता ॥

अधुना काले अभ्यासक्रमे शिक्षणप्रणाल्यां  
संस्कृतभाषां महत्त्वं स्थानं दत्त्वा सर्वान् जनान् चित्ते मनसि  
अस्मितां जागृतीं कर्तुम् आवश्यकमस्ति ।

न च एषा क्लिष्टा

न च कठिणा ।

एषा मधुरा देववाणी च

सुरस सुबोधा ।





## अज्ञातशत्रुः - 'आबा' मा.आर.आर.पाटील महोदयः ।

कु. पूजा शेठे, कलायां द्वितीय वर्षे

वयं सर्वे भारतीयाः । प्रजासत्ताकं राज्ये वयं सर्वे: जीवनं यापयति । अस्माकं राज्यशासनं जनैः जनान् कृतं जनेभिः चालयति । स्वातन्त्र्यप्राप्त्यर्थं अनेकान् महान् जनान् स्वबलिदानं कृतः । राष्ट्रपिता महात्मा गांधीः, स्वतंत्रः भारतवर्षस्य प्रथमं पंतप्रधानः पंडित जवाहरलाल नेहरूः, भास्तस्लनः घटनाकारः डॉ. अंबेडकरः, अयःपुरुषः सरदार वल्लभभाई पटेलः महोदयादि नैकान् जनैः महत्ततम् योगदानं स्वतंत्रराष्ट्रस्य कृते कृतवन्तः ।

भारतवर्षे अनेकान् स्वतंत्र भाषायां पन्थानां च प्रादेशिकाः राष्ट्राः सन्ति । तन्मध्ये महान् राष्ट्रः महाराष्ट्रः वर्तते । अस्माकं महाराष्ट्रे स्व. वसंतदादा पाटीलः, स्व. यशवंतराव चव्हाणः, आदि नैकान् महान् राजकर्तैः अभवत् । एषा बृहत् परंपराः । किन्तु सर्वेषां मध्ये पवित्रः 'महाराष्ट्रस्य लाल बहादूर शास्त्री' इति उपाधायेन उल्लेखितः एकः विख्यातः मनुजः वर्तते । निततरां शुद्धःचरित्रस्य स्वच्छः निर्मलः च चित्तस्य 'राजकीयः संतः' इति नामधेयेन परिचितः एकः नाम अज्ञातशत्रुः 'आबा' ! महाराष्ट्र राज्यस्य उपमुख्यमंत्रीः तथा गृहमंत्रीः च माननीयः रावसाहेबः रामरावः पाटीलः महोदयः ।

तु एकोऽत्यंतः दुःखदः वार्ता कर्णे आगत्वा हृदयं विदीर्णं करोति । स्वस्य कर्णे विश्वासः न सम्पादयति । अस्माकं परिवारस्य एकोऽपि गच्छति इति प्रतिभासते । 'आपला माणूस गेला', इति मन्ये ।

तस्य सर्वः कार्यं समाजोपयोगिनः कार्यः दृष्टिपटले आगच्छति । सर्वे एतत् जानाति सः निततराम् निर्मलः स्वभावस्य चरितस्यः । सः 'डान्सवारवंदी' विधेयकः, म. गांधी 'तंटामुक्ती अभियानः', च 'संत गाडगेबाबा स्वच्छता अभियानः' च इति नैकान् महत्तरं निर्णयस्य प्रवक्ता । तथा एतस्य संकली कृते परिपूर्णार्थम् एतेन बृहद् प्रयत्नं करोति । एतस्य कल्पकतापूर्णं निर्णयं समाजे दुष्प्रवृत्त्यां विनाशयनार्थं आवश्यकं महत्त्वपूर्णं भवति ।



‘साथी राहणी उच्च विचारसरणी’ एतत् वचनं तेनकृते सार्थं बभूव । अत्यंतं कष्टेन तं पदं आप्नोति । अस्माकं ‘श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थायां’ अध्यक्षः सः जातः । किन्तु तद् पदं रिक्तः सञ्जातः । यदि राजकियः शुद्धः पवित्रः च पाकचरित्रस्य मनुष्ये गणना भवति तन्मध्ये ‘आवा’ प्रथमं याति ।

गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठिता ‘आवा’ तदन्तस्म कोऽपि नास्ति । अयः अनामिकाः सार्थः बभूव इति अहं

मन्ये । अत्रभवान् विषये किमपि वक्तुं अहं न समर्थः भवामि । सः महान् संतः ।

एतस्मात् कारणात् तेनकृते एतत् शब्दाञ्जलिः श्रद्धापूर्वकं समर्पयामि । अथ मम् शब्दान् पूर्णविरामं ददामि माननीयः ‘आवा’ अमृतं गमय ! अमरः भवतु !!



## विज्ञानं आनंदम् ।

कु. नूतन चव्हाण, कलायां प्रथम वर्षे

विज्ञानस्य युगमिदम् । सर्वत्र विज्ञानस्य एव अप्रतिहता जययात्रा दृश्यते । अधुना कर्माणि यन्त्रयोगेन अनायासेन निमेषेण सम्पादितानि भवन्ति । पुरा भगवतः उपरि या श्रद्धा समर्पिता अभवत् अधुना विज्ञानमेव भाजनं तस्याः । विज्ञानेन आविष्कृतानां प्राकृतिकाणां नियमानां ज्ञानं विनैव केवलं विज्ञानेन समानीतानां स्वाच्छन्दानां समुपभोगे समादरं प्रदर्शयन्ति साधारणा जनाः ।

विज्ञानं केवलं समाजकल्याणाय नियोजयितुं शक्यते । किन्तु तादृशो नियोजक एव दुर्लभः, यो विज्ञानं कल्याण - सम्पादने एव नियोजयेत् । मानवस्य हितसाधने विज्ञानस्य नियोजनाय मानवचरित्रस्य संशोधनम् आवश्यकम् ।

क्रोध-लोभ-मद-मोह-मात्सर्यादीनां  
विनाशनं तथा क्षमा-दया-परदुःख कातरता-  
प्रभृतीनां गुणानाम् उद्बोधनम् आवश्यकम् ।

मनुष्यत्वस्य विकासं एव वैज्ञानिकीं समुन्नतिं समाजस्य समुपयोगिनीं संसाधयेत् । मनुष्यत्वस्य विकासं विना विफला वैज्ञानिकी समुन्नतिः । विज्ञानं आनंदं ब्रह्मम् । इति वेदान्ते कथयति एतत् सत्यम् । तद् व्यजानातु सर्वस्य कल्याणं भवतु इति ।





## हर हर गङ्गे । नमामि गङ्गे ॥

कु.प्रणाली देशपांडे, कलायां प्रथम वर्षे

भास्तवर्षे बहीषु नदीषु गङ्गा मुख्यतमा । इयं देशस्य अमृतसञ्चारिणी सञ्जीवनी शक्तिः । गङ्गायां स्नानेन दुश्चिन्तायाः विमुक्तं भवति । आशा, आनन्दः, उत्साहः च प्रसादरूपेण प्रविशन्ति अन्तरे इति वदन्ति । गङ्गायाः शितले सलिले प्रच्छन्नरूपेण किञ्चित् दिव्यं तेजो विद्यते । पापप्रणाशनो गङ्गाप्रवाहो 'विष्णुद्रव' इत्युच्यते । निन्द्रा, तन्द्रा, जडता च मलिनता च ग्लानिः आलस्य च औदासीन्यं च नास्तिक्यं च एते सर्वे तामसिका दोषाः गङ्गास्नानेन दूरीभवन्ति ।

गङ्गायादर्शनं पुण्यजनकम् । मनुजानामेव च सर्वे भूतमात्रानां उद्धारार्थं भगीरथेन अधकृ प्रयत्नेन पृथिव्याम् आनयति अवतरति च स्म । गङ्गाजलेन कृषिक्षेत्रम् उर्वरं भवति । गङ्गातीरे प्रचुराणि शस्यानि समुपतपयन्ते । सम्पन्नो भवति समाजः । अज्ञानं प्रशमयति ।

पतितानाम् उद्धाराय त्रिभिः तापैः तप्तानां सन्तानानां सान्त्वनाय सा विपुलेन वेगेन आवेगेन च अनन्यचिन्ता चलति ।

या गङ्गा सर्वस्य माता जीवनदायिना सञ्जीवनी च । सा अधुना काले अस्माकं सर्वस्य दुष्कृत्येन दूषिताः भवति । यदि एतत् स्थितिः वर्तते अस्माकं मातरं वयं सर्वे शीघ्रं मृतं करिष्यति । एतस्मात् आलस्य, तन्द्रा च अज्ञानस्य च त्यागं कृत्वा जागृतवान् भवतीति । तर्हि सततं सचला गङ्गाया गतिः महाजीवनसागरस्य अनन्तायां स्थितौ समाप्तो भवति ।

हर हर गङ्गे

नमामि गङ्गे

शिवशंकर शम्भो ॥



बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

जगदीशचंद्र



'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय

सातारा

“भूतकाळाची घेऊन शिदोरी

चालायचे आहे,

भविष्याच्या शोधासाठी

अक्षरांच्या पायरीवर ठेऊन पाऊल

शोधायची जगण्याची नवी चाहल”

अहवाल  
विभाग

(वरिष्ठ महाविद्यालय)

विभागीय संपादक  
प्रा. वसवराज माळी



## अनुक्रमणिका

१) जिमखाना विभाग	९१
२) राष्ट्रीय सेवा योजना	९३
३) विशेष श्रमसंस्कार शिबीर	९५
४) एन.सी.सी. विभाग	९७
५) ग्रंथालय विभाग	९८
६) परीक्षा विभाग	९८
७) निबंध, वक्तृत्व व चित्रकला समिती	९९
८) आविष्कार समिती	९९
९) सांस्कृतिक विभाग	१००
१०) प्लेसमेंट सेल विभाग	१००
११) अग्रणी महाविद्यालय	१००
१२) विद्यार्थिनी विकास मंडळ व लैंगिक अत्याचार नियंत्रण समिती	१०१
१३) युवा महोत्सव	१०२
१४) प्राध्यापक प्रबोधिनी	१०३
१५) मराठी विभाग	१०३
१६) हिन्दी विभाग	१०४
१७) Department of English & Dr. Bapuji Salunkhe English Literary Asso.	१०५
१८) संस्कृत विभाग	१०५
१९) समाजशास्त्र विभाग	१०६
२०) राज्यशास्त्र विभाग	१०६
२१) अर्थशास्त्र विभाग	१०७
२२) मानसशास्त्र विभाग	१०७
२३) इतिहास विभाग	१०८
२४) भूगोल विभाग	१०८
२५) वाणिज्य व व्यवस्थापन विभाग	१०९
२६) Department of Zoology	११०
२७) वनस्पतीशास्त्र विभाग	११०
२८) रसायनशास्त्र विभाग	१११
२९) Department of Physics	१११
● वैयक्तिक वार्षिक अहवाल सन २०१४-२०१५	११२



## वरिष्ठ विभाग वार्षिक अहवाल सन २०१४-२०१५

### जिमखाना विभाग

आमच्या महाविद्यालयाचा सिनिअर विभागाचा जिमखाना अहवाल म्हणजे बहादुर विद्यार्थ्यांची गौरव गाथा. शिक्षणमहर्षी बापूजी साळुंखे यांनी दिलेल्या चैतन्याचा मंत्र घेऊन आमचे खेळाडू आपल्या कर्तृत्वाचा ठसा मातीवर उमटवतात. गेले वर्षभर खेळाडूंनी जी गौरवशाली कामगिरी केली आहे, त्यांनी महाविद्यालयाची व आमच्या श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संस्थेची मान व शान वाढविली आहे. विविध क्रीडा प्रकारात यश मिळविलेल्या विद्यार्थ्यांचा सत्कार ही विद्यार्थ्यांची खरी प्रेरणा असते. या प्रेरणेतूनच पुन्हा उद्याचे नवे बहादुर खेळाडू उभे राहत असतात.

आमच्या महाविद्यालयातील खेळाडूंनी चालू वर्षामध्ये झोनल, इंटर झोनल, आंतर विद्यापीठ, ऑल इंडिया विद्यापीठ स्पर्धा या 'क्रीडा प्रकारात' यश संपादन केले आहे. या महाविद्यालयाची गौरवशाली परंपरा जोपासणाऱ्या गुणी खेळाडूंची बहादुरीय म्हणजेच जिमखाना अहवाल आपल्या पुढे सादर करित आहोत.

### ऑल इंडिया अंतर विद्यापीठ खेळाडू

- १) बर्गे अभिजीत अर्जुन, बी.एस्सी. भाग १  
अखिल भारतीय फुटबॉल स्पर्धेसाठी खाल्हेर येथे निवड, शिवाजी विद्यापीठ फुटबॉल संघाचा चौथा क्रमांक
- २) जाधव पल्लवी आनंदा, बी.एस्सी. भाग २  
ऑल इंडिया फुटबॉल स्पर्धेसाठी जयपूर येथे निवड.
- ३) तरडे तुषार सुनील, बी.कॉम. भाग ३  
ऑल इंडिया बॉक्सिंग स्पर्धेत जालंदर येथे निवड.
- ४) जाधव आंकार भरत, बी.एस्सी. १  
ऑल इंडिया बॉक्सिंग स्पर्धेत जालंदर येथे निवड.

- ५) शेळके अधिराज भानुदास, बी.एस्सी. २  
ऑल इंडिया सायकलिंग स्पर्धेसाठी अमृतसर येथे निवड, शिवाजी विद्यापीठाच्या इंटर झोनल सायकलिंग स्पर्धेत चतुर्थ क्रमांक.

### आंतर विभागीय खेळाडू

- १) जाधव रोहन बाळासाहेब, बी.ए. भाग २  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या इंटर झोनल तायक्वांदो स्पर्धेत सिल्हर मेडल, द्वितीय क्रमांक .
- २) कदम विठ्ठल चंद्रकांत, बी.एस्सी. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या इंटर झोनल आर्चरी स्पर्धेत पाचवा क्रमांक मिळविला.
- ३) निकम अक्षय राजेंद्र, बी.कॉम. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या इंटर झोनल हॉकी स्पर्धेतून विद्यापीठाच्या सराव शिबीरात निवड.
- ४) कारंडे हरिश्चंद्र भिकाजी, बी.ए. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या कुस्ती स्पर्धेत झोनल मध्ये तृतीय क्रमांक मिळविला. इंटर झोनल स्पर्धेसाठी निवड-५६-५९ वजनी गट.
- ५) घोरपडे अजित प्रदीप, बी.ए. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा अंतर्गत घेण्यात आलेल्या झोनल स्पर्धेतून उत्कृष्ट वास्केटबॉल खेळाडू म्हणून इंटर झोनल स्पर्धेत निवड.
- ६) शेख सना मुस्ताक, बी.ए. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठाच्या इंटर झोनल बॉक्सिंग स्पर्धेत ब्राँझ मेडल, तृतीय क्रमांक.
- ७) पिंपळे भाग्यश्री राजेंद्र, बी.एस्सी. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठाच्या मार्फत घेण्यात आलेल्या महिला क्रिकेट झोनल स्पर्धेतून सातारा जिल्हा क्रिकेट संघात निवड, इंटर झोनल स्पर्धेत सहभागी.



- ८) खापे सुप्रिया सत्यवान, बी.कॉम. भाग ३  
सातारा जिल्हा महिला क्रिकेट संघातून इंटर झोनल क्रिकेट स्पर्धेत सहभागी.
- ९) सावंत स्नेहल उत्तम, बी.कॉम. भाग २  
शिवाजी विद्यापीठाच्या मार्फत घेण्यात आलेल्या महिला क्रिकेट झोनल स्पर्धेमध्ये सातारा जिल्हा क्रिकेट संघात निवड, इंटर झोनल स्पर्धेत सहभागी.

**विभागीय खेळाडू :**

- १) बोडके अनिकेत विकास, बी.एस्सी. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या सातारा झोनल स्पर्धेत १५०० मी. फ्री स्टाईल स्पर्धेत द्वितीय क्रमांक ४×१०० फ्री स्टाईल रिले आता ४×२०० फ्री स्टाईल रिले द्वितीय
- २) घाडगे शुभम विजय, बी.कॉम. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या सातारा झोनल स्पर्धेत ५०मी. फ्री स्टाईल स्पर्धेत तृतीय. १०० मी. फ्री स्टाईल द्वितीय क्रमांक ४ × १०० मी. फ्री स्टाईल रिले तृतीय ४ × २०० मी. फ्री स्टाईल रिले द्वितीय
- ३) दाणे महेश मारुती, बी.ए. भाग ३  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या सातारा झोनल जलतरण स्पर्धेत ४ × १०० मी फ्री स्टाईल रिले तृतीय क्रमांक ४ × २०० मी. फ्री स्टाईल रिले द्वितीय क्रमांक
- ४) चव्हाण विजय दत्तात्रय, बी.कॉम. भाग २  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या सातारा झोनल जलतरण स्पर्धेत ४ × १०० मी. फ्री स्टाईल रिले तृतीय क्रमांक. ४ × २०० मी. फ्री स्टाईल रिले द्वितीय क्रमांक
- ५) बोडके किरण विलास, बी.एस्सी. भाग ३  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या सातारा झोनल स्पर्धेत ४ × २०० मी. फ्री स्टाईल रिले द्वितीय क्रमांक.
- ६) कदम रुदल प्रताप, बी.ए. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात आलेल्या सातारा झोनल अॅथलेटिक्स स्पर्धेत गोळाफेक मध्ये तृतीय क्रमांक  
हॅमर थ्रो मध्ये द्वितीय क्रमांक
- ७) जाधव तेजस दशरथ, बी.ए. भाग. ३  
सातारा जिल्हास्तरीय अॅथ गिर्यारोहण आणि जरेडिस्वर गिर्यारोहण स्पर्धेत प्रथम क्रमांक
- ८) यादव रविराज दयाराम, बी.एस्सी. भाग १  
महाराष्ट्र फुटबॉल असो.द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय स्पर्धेसाठी सातारा जिल्हा फुटबॉल संघात निवड.
- ९) बरेकर विक्रान्त दीपक, बी.एस्सी. भाग २  
महाराष्ट्र फुटबॉल असोसिएशन आयोजित राज्यस्तरीय फुटबॉल स्पर्धेसाठी हिंगोली येथे निवड.
- १०) मुजावर सुलतान मुबारक, बी.ए. भाग १  
२०१५ मध्ये गोवा येथे 15th WSRFI (The World Sholkon Parade Federation India) आयोजित स्पर्धेमध्ये प्रथम क्रमांक.
- ११) लोहार विक्रम विश्वनाथ, बी.एस्सी. भाग १  
शिवाजी विद्यापीठा अंतर्गत घेण्यात आलेल्या इंटर झोनल बॉडी बिल्डींग स्पर्धेसाठी निवड.
- १२) गुलमे नितिन सोमनाथ, बी.ए. भाग १  
राज्यस्तरीय कुस्ती (६१ ते ६५) वजनी गटात प्रथम क्रमांक, जिल्हा कुस्ती संघात निवड.

या व्यतिरिक्त आमच्या महाविद्यालयाने शिवाजी विद्यापीठा मार्फत घेण्यात येणाऱ्या विविध क्रीडा स्पर्धेत सहभाग नोंदविला आहे. यामध्ये टेबल टेनिस, जलतरण, क्रॉसकंट्री, फुटबॉल, ज्युदो, पॉवरलिफ्टिंग, बास्केट बॉल, बॉडीबिल्डींग, आर्चरी, अॅथलेटिक्स, हॉकी, कुस्ती, कबड्डी, खो-खो इ. स्पर्धेत झोनल आणि इंटरझोनल स्पर्धेत सहभागी खेळाडू होते.



तसेच या वर्षी सातारा विभागामार्फत घेण्यात येणाऱ्या स्वीमिंग व डायव्हिंग येथील जलतरण तलावामध्ये केले होते. महाविद्यालयास सलग ६व्या वर्षी सातारा विभागीय जलतरणाचे आयोजन करण्याची संधी प्राप्त झाली होती. या वर्षी प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री. कन्हैयालाल राजपुरोहित (सातारा शुटींग असोसिएशनचे अध्यक्ष) हे हजर होते.

तसेच २९ ऑगस्ट हा दिवस सर्व भारत देशभर क्रीडादिन म्हणून साजरा करण्यात येतो. आमच्या महाविद्यालयात २९ रोजी क्रीडादिन साजरा करण्यात आला. यावर्षी सर्व खेळाडूंनी मिळून मेजर ध्यानचंद यांची जीवनपदाची सर्व माहितीचे वॉलपेपर (प्रोस्टन प्रेझेंटेशन) तयार केले होते. या कार्यक्रमात प्रमुख पाहुणे श्री. अभय चव्हाण (भारतीय बास्केट बॉल संघाचे प्रशिक्षक) यांच्या शुभहस्ते उद्घाटन करण्यात आले.

अशा गुणवंत विद्यार्थ्यांचा सत्कार वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभावेळी मा. सिंधुताई सपकाळ यांच्या शुभहस्ते संपन्न झाला. आमच्या या यशामध्ये जिमखाना विभागास नेहमीच प्रोत्साहित करणारे महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन व सहकार्य मिळाले. तसेच वर्षभर सर्व जिमखाना सदस्यांचे सहकार्य लाभले आहे. यामध्ये डॉ. आर. जी. पाटील, प्रा. डी. जी. साळुंखे, प्रा. शेखर मोहिते, प्रा. एस. एम. मेस्वी यांचे सहकार्य लाभले आहे. तसेच सर्व शिक्षकेतर कर्मचारी, प्राध्यापक वर्ग यांचे ही सहकार्य लाभले आहे.

डॉ. विकास जाधव  
फिजीकल डायरेक्टर

### राष्ट्रीय सेवा योजना

अहवाल (२०१४-१५) रेग्युलर

शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मध्ये राष्ट्रीय सेवा योजना विभागामार्फत विविध उपक्रमांचे आयोजन करण्यात आले होते.

#### १) उद्घाटन :

महाविद्यालयातील राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचा उद्घाटन सोहळा ५ ऑगस्ट, २०१४ रोजी संपन्न झाला. या उद्घाटन समारंभास उद्घाटक मा. राजेंद्र चोरगे, संस्थापक बालाजी चॅरीटेबल ट्रस्ट, सातारा उपस्थित होते. मा. चोरगेसाहेबांचा एन.एस.एस. विभागाला सदैव पाठिंबा असतो या विभागातील तीन उत्कृष्ट स्वयंसेवक व स्वयंसेविका यांना त्यांच्या ट्रस्ट तर्फे रोख रकमेचे बक्षिस दिले गेले. या कार्यक्रमास प्रमुख पाहुणे मा. जमोल तांबे अप्पर पोलीस अधीक्षक, सातारा व अध्यक्ष म्हणून प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ उपस्थित होते.

#### २) गुरुपौर्णिमा :

१० जुलै, २०१४ रोजी एन.एस.एस. विभागातील विद्यार्थ्यांनी महाविद्यालयातील सर्व गुरुजनांचा आदर व यथोचित सत्कार करून गुरुपौर्णिमा साजरी केली.

#### ३) रक्षाबंधन :

एन.एस.एस. विभागामार्फत दरवर्षी देशाचे संरक्षण करणाऱ्या जवानांसाठी राख्या पाठविल्या जातात. याही वर्षी सहा इन्फ्रंट्री जवानांना पाचशे राख्या पाठविल्या. तसेच सातारा बाल सुधार गृहामधील विद्यार्थ्यांना राख्या बांधून खाऊ वाटप केले.

#### ४) रक्तदान शिबीर :

९ ऑगस्ट, २०१४ या क्रांती दिन व शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे स्मृती दिन ६७ स्वयंसेवकांनी रक्तदान करून साजरा केला. मा. प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ अध्यक्ष म्हणून उपस्थित होते.

या कार्यक्रमाचे उद्घाटन प्रा. डॉ. आर. जी. पाटील यांच्या हस्ते संपन्न झाले. या रक्तदान शिबीराचे प्रायोजक अध्यक्ष ब्लड बँक, सातारा हे होते.

#### ५) वृक्षारोपण :

२६ ऑगस्ट व २७ ऑगस्ट रोजी मंगळाई मंदिर परिसर अजिंक्यतारा पायथ्याला एन.एस.एस.च्या



विद्यार्थ्यांनी वृक्षारोपण केले. ११० खडे काढून ११० कडूलिवाची झाडे लावण्यात आली. या कार्यक्रमाला मा.प्राचार्य डॉ. आर.झी. शेजवळ उपस्थित होते.

**६) रस्ता सुरक्षा अभियान :**

या उपक्रमांतर्गत शिवाजी विद्यापीठाने महाराष्ट्र शासन पुरस्कृत केलेल्या रस्ता सुरक्षा अभियानात प्रत्येक महाविद्यालयाने सहभागी व्हावे असे आवाहन केले व त्यानुसार आमच्या महाविद्यालयाने उपक्रमात सहभाग घेतला.

सातारा शहर रस्ता सुरक्षा अभियानावर आर.एस.पी. प्रमुख मा.श्री. वाळवेकर, श्री. शेख, श्री. नलवडे यांचे मार्गदर्शनपर व्याख्यान व बहातुकीच्या नियमांची माहिती दिली. तसेच बहातुक कशाप्रकारे कंट्रोल करावयाची याचे प्रात्यक्षिक ट्रेनिंग दिले.

गणेश उत्सवाच्या दिनांक २९.८.२०१४ ते ८.९.२०१४ या कालावधीमध्ये पोवई नाका चौकामध्ये बहातुक सुरक्षा अभियानामध्ये विद्यार्थ्यांनी रस्ता बहातुक सुळीत करण्याचे काम पाहिले. आर.एस.पी. संघटना, सातारा यांना गणपती बंदोबस्त व बहातुक नियंत्रण कामी अत्यंत उत्कृष्ट सहकार्य केले. अनंत चतुर्थी दिवशी भित कोसळली त्याटिकाणी आपत्ती निवारण मदत तसेच चुकलेल्या मुलाला पालकांपर्यंत पोहोचविण्याचे बहुमोल काम केले.

**७) आंतरराष्ट्रीय युवक दिन :**

एड्स विरोधी जागृती करण्यासाठी व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले. दिनांक १२.८.२०१४ रोजी एच.आय.व्ही./एड्स विषयी मार्गदर्शन व युवा चर्चासत्र कार्यशाळेचे आयोजन केले. प्रमुख पाहुणे श्री. सुशील माने कार्यक्रम संसाधन अधिकारी एल.डब्ल्यू. स्कीम श्रीमती मानसी भोसले, श्रीमती सुनंदा शेठे यांनी मार्गदर्शन केले.

**८) शिक्षक दिन :**

५ सप्टेंबर, २०१४, शिक्षक दिन एन.एस.एस.च्या

विद्यार्थ्यांनी साजरा केला यावेळी विद्यार्थ्यांनी शिक्षकांविषयी आदरपर व्याख्याने दिली.

**९) चार दिवसीय व्यक्तीमत्व विकास शिबीर :**

दिनांक १०.९.२०१४ ते १३.९.२०१४ नेहरू युवा केंद्र, सातारा युवा कार्यक्रम आणि क्रीडा मंत्रालय, भारत सरकार किशोरवयीन मुलामुलींचे आरोग्य व विकास प्रकल्पाकरिता प्रशिक्षण प्रमुख पाहुणे श्री. सागर शिंदे यांचे हस्ते शिबीराचे उद्घाटन झाले. अध्यक्ष मा. प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ होते.

**१०) विधानसभा निवडणुकी निमित्त मतदार जागृती रॅली :**

मतदान जागृती अभियाना अंतर्गत मानवी साखळीचे नियोजन दिनांक १.१०.२०१४ रोजी करण्यात आले. त्यामध्ये एन.एस.एस.चे २०० विद्यार्थी सहभागी झाले होते. यामध्ये प्रा.डॉ. सुपुगडे व प्रा. वागल वी.वी., प्रा. चामे व प्रा. मदन सहभागी होते.

**११) राष्ट्रीय सेवा योजना दिन :**

२४.९.२०१४ रोजी डॉ. हमीद दाभोळकर यांचे अंधश्रद्धा निर्मूलन या विषयी व्याख्यानाचे आयोजन केले.

**१२) बहातुक नियंत्रण :**

नवरात्रोत्सव कालावधीमध्ये दिनांक २६.९.२०१४ ते ९.१०.२०१४ या कालावधीमध्ये ५० विद्यार्थी एन.एस.एस. चे पोवई नाका चौकामध्ये बहातुक नियंत्रण व बंदोबस्त कामी आर.एस.पी. सातारा समवेत काम पहात होते.

**१३) यंग इन्स्पिरेटर्स नेटवर्क :**

दिनांक १६.९.२०१४ सकाळ माध्यम सामाजिक परिवर्तनासाठी कृतीशील प्रयत्न करीत आहे. युवा पिढीचा सामाजिक कार्यात सहभाग वाढावा यातून सामाजिक व्यावसायिक व आर्थिक परिवर्तन व्हावे यासाठी सकाळने यंग इन्स्पिरेटर्स नेटवर्क या विषयावर विकास पाटील यांच्या व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले. एन.एस.एस. विभागातील विद्यार्थ्यांना त्यांनी मार्गदर्शन केले.



**१४) रस्ता सुरक्षा अभियान :**

१.१०.२०१४ मा. संजय राजत आर.टी.ओ., सातारा यांचे (उपप्रादेशिक परिवहन अधिकारी, सातारा) रस्ता सुरक्षा घ्यावयाची काळजी व नियम या विषयावर व्याख्यान आयोजित केले. एन.एस.एस.च्या विद्यार्थ्यांनी चर्चासत्रात भाग घेतला व आपल्या शंकांचे निराकरण केले.

**१५) महात्मा गांधी जयंती व**

**लाल बहादूर शास्त्री जयंती :**

२.१०.२०१४ रोजी एन.एस.एस.चे २०० विद्यार्थी महात्मा गांधी व लाल बहादूर शास्त्री जयंती कार्यक्रमास उपस्थित होते. त्याचवेळी त्यांनी स्वच्छतेची शपथ घेतली. गांधी जयंती निमित्त कॉलेज परिसर स्वच्छ करण्यात आला.

**१६) १ डिसेंबर एड्स जागृती (जागतिक) दिन :**

दिनांक १ डिसेंबर, २०१४ रोजी एड्स जागृती रॅलीचे आयोजन करण्यात आले. नाना पार्टील हॉस्पिटल, सातारा यांच्या एड्स जागृती विभागामार्फत रॅलीचे आयोजन केले होते. महाविद्यालयातील १५० एन.एस.एस. चे विद्यार्थी रॅलीमध्ये सहभागी झाले होते.

**१७) ३ डिसेंबर - चालता बोलता कार्यक्रम :**

विवेक वाहिनी, सातारा अनिस यांच्या सहकार्यातून दिनांक ३.१२.२०१४ रोजी महाविद्यालयाच्या परिसरामध्ये चालता बोलता अंधश्रद्धा निर्मूलन प्रश्नावलीचा कार्यक्रम आयोजित केला. विद्यार्थ्यांना आपले विचार अंधश्रद्धा निर्मूलन संबंधात मांडण्याची संधी मिळाली.

**१८) परिवर्तन संस्था व्यसनमुक्त समाज निर्मितीसाठी युवा निर्धार परिषद :**

३०.१२.२०१४ रोजी यशवंतराव चव्हाण इन्स्टि. ऑफ सायन्स, सातारा येथे १५० विद्यार्थ्यांचा सहभाग.

**१९) विवेकानंद जयंती :**

१२.१.२०१५ रोजी विवेकानंद जयंती साजरी करण्यात आली. या निमित्त रॅलीचे आयोजन केले गेले. त्यामध्ये एन.एस.एस. चे १७५ विद्यार्थी सहभागी होते.

**२०) रस्ता सुरक्षा जनजागृती अभियाना अंतर्गत :**

दिनांक १७.१.२०१५ रोजी मा. शिंदे पी.बी., आर.टी.ओ.कोल्हापूर यांचे व्याख्यान व चर्चासत्राचे आयोजन केले. एन.एस.एस.च्या विद्यार्थ्यांना रस्ता सुरक्षा व विद्यार्थ्यांचा सहभाग या विषयावरती सखोल मार्गदर्शन केले.

**२१) प्रजासत्ताक दिन :**

२६.१.२०१५ रोजी ६६वा प्रजासत्ताक दिनानिमित्त ध्वजारोहण कार्यक्रमास एन.एस.एस.चे विद्यार्थी उपस्थित होते.

**विशेष उल्लेखनीय :**

१) राष्ट्रीय सेवा योजना विभागास रस्ता सुरक्षा अभियान २०१४ मधील पुरस्कार प्राप्त रस्ता सुरक्षा विषयक जनजागृती करिता महामार्ग पोलीस मुख्यालय, मुंबई यांचे वतीने बक्षिसाचे ३०००/- रुपये देण्यात आले.

२) अनंत चतुर्दशी दिवशी कन्या शाळेजवळ भिंत कोसळून जी आपती निर्माण झाली. त्या कामी एन.एस.एस.च्या छात्रांनी जखमीचे प्राण वाचविले तसेच गर्दीमध्ये चुकलेला २ वर्षांच्या एका बालकाला पालकापर्यंत पोहोचविले.

या सर्व कार्यक्रमाच्या आयोजनासाठी मा. प्राचार्य डॉ.आर.झी. शेजवळ, प्रकल्प अधिकारी, डॉ.व्ही.बी. सुपुगडे, प्रा. बागल बी.बी., प्रा. प्रतिभा चिकमट, प्रा. चामे, प्रा. मदन, प्रा.डॉ. नाईक, प्रा. सकटे, प्रा. माळी, प्रा. वैनवाड तसेच श्री. केदार, श्री. महादेव सुतार, श्री. शिवाजी माने व श्री. उवाळे यांचे सहकार्य मिळाले.

प्रा.डॉ. सुपुगडे व्ही.बी.  
कार्यक्रम अधिकारी

**विशेष श्रमसंस्कार शिबीर**

सातारा : लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयाच्या राष्ट्रीय सेवा योजना विभागाचे विशेष श्रमसंस्कार शिबीर दिनांक ७.१२.२०१४ ते १३.१२.२०१४ दरम्यान रेणावळे, ता. सातारा येथे आयोजित केले होते. या शिबीरात



१२५ विद्यार्थी विद्यार्थिनी व ३ प्रकल्प अधिकारी, ५ सदस्य व २ शिक्षकेतर कर्मचारी सहभागी झाले होते. दिनांक ७.१२.२०१४ रविवार रोजी शिबीराचे उद्घाटन श्री. जितेंद्र सावंत जिल्हा परिषद सदस्य, सातारा यांचे हस्ते संपन्न झाले. या कार्यक्रमास अध्यक्षस्थानी मा.प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ हे होते. तसेच रेणावळे गावच्या सरपंच जनाताई सणस व इतर ग्रामपंचायत सदस्य व ग्रामस्थ पुरुष व महिला मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

या शिबीरात पुढील कार्यक्रम राबविण्यात आले. त्यामध्ये सर्वात महत्त्वाचे गावातून जाणारा कॅनॉल १००० मीटरचा गाळ काढण्यात आला. गावातील २००० मीटर बुजलेली गटारे खुदाई करून स्वच्छ केली. गावातील स्वच्छता करण्यात आली. या कामासाठी गावकऱ्यांनी ट्रॅक्टरची मदत केली. तसेच काळभैरव मंदिराचा परिसर स्वच्छ केला. ग्रामपंचायत, समाजमंदिर, प्राथमिक शाळा परिसर व गावातील सर्व स्तरे स्वच्छ केले. सर्व घाण गावाच्या बाहेर ट्रॅक्टरने टाकण्यात आली. शोष खट्टे काढले व रस्ता दुरुस्ती केली.

- गावच्या बाहेर असणाऱ्या माळरानात वृक्षारोपण करण्यासाठी १०० खट्टे खणले व वृक्षारोपण केले.
- नेत्र तपासणी शिबीराचे आयोजन केले होते. डॉ. संदीप भंडारे यांनी १७० नागरिकांचे नेत्र तपासले व लायन्स क्लब ऑफ सातारा युनायटेड सहकार्यातून गरजूंना चश्मे देण्यात आले.
- आरोग्य तपासणी शिबीराचे आयोजन करण्यात आले. त्यामध्ये ब्लड प्रेशर, डायबिटीस व इतर रोगांचे निदान करण्यात आले. यामध्ये डॉ. शिरीष नलवडे यांनी आरोग्य तपासणी करून औषधे देऊन पुढील उपचारासाठी सल्ला दिला. यामध्ये २४५ व्यक्तींनी सहभाग घेतला.
- पशु चिकित्सा : शिबीराचे आयोजन करण्यात आले. डॉ. माने, आसनगाव यांनी ११७ जनावरांची तपासणी करून लाळ प्रतिबंधक लसीकरण व जंतावरील औषधे देण्यात आली. तसेच शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन केले.

- महिला मेळाव्याचे आयोजन : करण्यात आले. गावातील महिला मोठ्या संख्येने उपस्थित होत्या. त्यामध्ये हळदी कुंकू, उखाणे घेणे तसेच प्राध्यापिका सौ. गीता साळुंखे यांचे महिला सबलीकरणावर व मुलगी वाचवा या विषयावर व्याख्यान झाले.
- जनजागृती रॅलीचे आयोजन : करण्यात आले. सकाळी व्यायाम व प्रार्थना घेण्यात आली. गावातील कुटुंबांचा घरी जावून विद्यार्थ्यांनी सर्व्हे केला.
- मा. बाळासाहेब श्रीकांडे यांनी सकाळी विद्यार्थ्यांना व ग्रामस्थांना योगाचे प्रशिक्षण देऊन प्रात्यक्षिके घेतली व योगाचे महत्त्व सांगितले.

विद्यार्थ्यांचे व गावकऱ्यांचे प्रबोधन व्हावे यासाठी मान्यवरांची व्याख्याने आयोजित केली होती.

- १) मोबाईलचा अतिरेक वापर - प्रा. तरवाळ व प्रा. रसाळ
  - २) स्वच्छता अभियान मध्ये ग्रामस्थांचा सहभाग - प्रा.डॉ. सुधीर इंगळे
  - ३) आधुनिक शेतीकडे वाटचाल - मा. मनोहर साळुंखे
  - ४) भारत माझा देश आहे - प्रा.डॉ. महेश गायकवाड
  - ५) रंग मनाचा संमोहन विद्या - प्रा. क्षीरसागर एस.एस.
  - ६) महिला सबलीकरण लेक वाचवा - प्रा.सौ. गीता साळुंखे
- गटचर्चा - दैनंदिन जीवनातील विज्ञान, आजच्या परीक्षा पध्दती, जाहिरातीचे युग व आजचा तरुण.

#### सांस्कृतिक कार्यक्रम :

विद्यार्थ्यांच्या कलागुणांना वाव मिळावा म्हणून मनोरंजनात्मक कार्यक्रम सादर करण्यात आले. आझाद हिंद प्रतिष्ठान, सातारा तर्फे कौटुंबिक नाटक 'कावळ्यांची शाळा' सादर करण्यात आले.

मा. सुभाष जाधव, नेले यांचे भजनी मंडळाचा कार्यक्रम आयोजित केला होता. देश भक्तीपर गीते गायली. हरे राम हरे कृष्ण मंडळातर्फे व्यक्तिमत्त्व विकास विषयावर कार्यक्रमाचे आयोजन केले.



शिबीराचा समारोप : विद्यार्थ्यांचे विविध खेळ घेण्यात आले. दिनांक १३.१२.२०१४ रोजी शिबीराचा समारोप झाला. या कार्यक्रमास प्रमुख पाहुणे मा. किरण सावळे पाटील कृषी सभापती जिल्हा परिषद, सातारा हे होते व अध्यक्ष प्रा.डॉ.आर.जी. पाटील उपस्थित होते. या कार्यक्रमास गावच्या सरपंच जनाताई सणस तसेच ग्रामपंचायत सदस्य व ग्रामस्थ मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

वरील सर्व उपक्रम यशस्वीरित्या पार पाडण्यासाठी प्रकल्प अधिकारी प्रा.डॉ. सुपुगडे व्ही.बी., प्रा. बागल बी.बी., प्रा. प्रतिभा चिकमठ, प्रा. मदने, प्रा. चामे, प्रा.डॉ.नाईक, प्रा. वैनवाड व प्रा. सकटे यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले तसेच शिबीरास श्री. महादेव सुतार व शिवाजी माने व सरपंच जनाताई सणस ग्रामपंचायत सदस्य व ग्रामस्थ यांचे सहकार्य मिळाले.

प्रा.डॉ. सुपुगडे व्ही.बी.  
कार्यक्रम अधिकारी

### एन.सी.सी. विभाग

आमच्या कॉलेजची एन.सी.सी. कंपनी कोल्हापूर ग्रुप मध्ये २२ महाराष्ट्र बटालियन एन.सी.सी., सातारा यांचे कक्षेत काम करते. या शैक्षणिक वर्षात प्रथम वर्ष व द्वितीय वर्षाच्या एकूण ६६ कॅडेट्सनी सक्रीय सहभाग घेतला.

यावर्षी १९० विद्यार्थ्यांनी एन.सी.सी. मध्ये प्रवेश घेण्याची इच्छा दाखविली. त्यापैकी २४ कॅडेट्सची निवड करण्यात आली. शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मध्ये ४० परेड्स घेण्यात आल्या त्यामध्ये कॅडेट्सच्या चारित्र्य, धाडस, मैत्रीभाव, शिस्त, नेतृत्व गुण विकास, सामाजिक बंधुभाव आणि खिलाडूवृत्ती या गुणांचा विकास करण्यावर भर देण्यात आला.

२०१४-२०१५ या वर्षामध्ये ४० एन.सी.सी. कॅडेट्सनी एकूण ११ विविध कॅम्पमध्ये सहभाग घेतला. त्यापैकी ०६ नॅशनल लेवल कॅम्प व ०५ अॅन्युअल ट्रेनिंग कॅम्पमध्ये सहभाग घेवून विशेष यश संपादन केले.

मेरठ येथे झालेल्या NIC कॅम्पमध्ये महाविद्यालयातील ०५ एन.सी.सी. कॅडेट्सनी सहभाग घेतला. त्यांचे नेतृत्व अक्षय काकडेने केले. या कॅम्पमध्ये महाविद्यालयाच्या संघाने Song Competition मध्ये प्रथम क्रमांक मिळविला.

अहमदनगर येथे झालेल्या Army Attachmet Camp मध्ये कॅडेट अश्विन निकम याने क्रॉस कंट्रीमध्ये प्रथम क्रमांक मिळविला.

महागांव येथे झालेल्या ATC कॅम्पमध्ये महाविद्यालयातील ०५ कॅडेट्सनी सहभाग घेतला. यामध्ये कॅडेट मंगेश नवघणे व गुपने कल्चरलमध्ये तृतीय क्रमांक मिळविला.

या शैक्षणिक वर्षामध्ये कॅडेट प्रतीक सावळे याची एन.सी.सी.चा प्रतिनिधी म्हणून महाविद्यालयाच्या विद्यार्थी परिषदेवर निवड करण्यात आली. व राहुल सावंत याची महाविद्यालयातील 'वेस्ट कॅडेट' म्हणून निवड करण्यात आली.

महाविद्यालयात सालावादप्रमाणे 'जय जवान जय किसान' कार्यक्रमामध्ये कर्नल जे.एस. वर्धन यांनी महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांना व एन.सी.सी. कॅडेट्सना अनमोल मार्गदर्शन केले.

महाविद्यालयात आयोजित रक्तदान शिबीर, मतदान जनजागृती रॅली, ऐतिहासिक वस्तुंचे प्रदर्शन, १५ ऑगस्ट व २६ जानेवारी दिवशी आयोजित कार्यक्रमांमध्ये उत्स्फूर्त सहभाग घेतला.

यावर्षी एन.सी.सी.चे नेतृत्व अमीत रासकर, अमर वेंदे, अश्विन निकम, किरण मोकाशी यांनी यशस्वीपणे केले. यामध्ये त्यांना बटालियनमधून कर्नल एस.के. पाडे व सुभेदार मेजर विश्वनाथ चव्हाण तसेच महाविद्यालयाचे प्राचार्य राजेंद्र शेजवळ यांनी अनमोल मार्गदर्शन केले.

प्रा.सचिन अशोक कांबळे  
एन.सी.सी. विभाग प्रमुख



## ग्रंथालय विभाग

ग्रंथालय ही एक सामाजिक संस्था आहे आणि प्रत्येक महाविद्यालयाचे ग्रंथालय हे माहिती केंद्र म्हणून कार्यरत असते. या महाविद्यालयाचे ग्रंथालय समृद्ध असून सर्व वयोगटातील वाचक याचा लाभ घेत असतात. समाजातील गरजू अभ्यासक, संशोधक, स्पर्धा परीक्षार्थी, आजी व माजी विद्यार्थी, प्राध्यापक, कर्मचारी या ग्रंथालयाचा उपयोग करून घेत असतात.

आज अखेर ग्रंथालयात ७१९४४ इतकी ग्रंथ संपदा आहे. त्याचे मूल्य ५४,०८,५२५.०० इतके आहे. चालू शैक्षणिक वर्षात खालील प्रमाणे ग्रंथ खरेदी केलेले आहेत.

क्र.	विभाग	ग्रंथसंख्या	खर्च/मूल्य
१	सिनिअर	७८९	९९,९३२
२	C.O.C./U.G.C. Comunite College	१०४ 70	१,१४,९५५ 48,536
३	ज्युनिअर	१८८	१७,४२७
४	Book Bank सिनि.	९५७	६५,७२५
५	पी.जी.	१२७	६३,३९७
६	देणगी ग्रंथ	१७३३	१९,५८,२०८
	<b>एकूण</b>	<b>३,९६८</b>	<b>५,६७,३८०</b>

अजून ग्रंथ खरेदी चालू आहे.

विविध विषयांची व संशोधनात्मक अशी ६६ नियतकालिक/जर्नल्स येत असतात. त्यावर ४५ हजार पर्यंत खर्च केला जातो. राष्ट्रीय/आंतरराष्ट्रीय, स्थानिक पातळीवरील दैनंदिन माहितीसाठी दररोज १५ वर्तमानपत्रे घेतली जातात. चालू शैक्षणिक वर्षात ७९१ विद्यार्थ्यांना बुक बँक संच वाटप करण्यात आले. ज्युनिअर विभागाकडे 'मागेल त्याला पुस्तक' हा एक उपक्रम राबविला गेला. त्यानुसार ५६० विद्यार्थ्यांनी त्याचा लाभ घेतला.

श्री. सिध्दीविनायक ट्रस्ट, मुंबई यांचे कडून या वर्षात १५०९ क्रमिक पुस्तके मिळालेली आहेत. त्याचे मूल्य १

लाख १२८९ इतके आहे. केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली यांचेकडून १८७ पुस्तके सप्रेम भेट मिळालेली आहेत. त्याचे मूल्य ५४ हजार इतके आहे. ज्येष्ठ समीक्षक मा. शंकर सारडा यांनी ५० पुस्तके देणगी म्हणून ग्रंथालयासाठी दिलेली आहेत.

चालू शैक्षणिक वर्षात तीन ग्रंथ प्रदर्शन भरविण्यात आली. बुक बँक, मोफत इंटरनेट सेवा, कमवा व शिका योजना, मुला-मुलीकरीता स्वतंत्र अभ्यासिका, गरजेनुसार मुक्त प्रवेश, विविध संदर्भ ग्रंथांचे दालन, ग्रंथालय भेट व मार्गदर्शन, विविध विषयांची कात्रणे, झेरॉक्स, वहिस्थ वाचक सेवा, विभागीय ग्रंथालय इत्यादी सेवा सुविधा ग्रंथालयात उपलब्ध केल्या आहेत. रिडर्स क्लबद्वारे वेस्ट वाचक ॲवॉर्ड डॉ.आर.जी. पाटील यांचेकडून दिला गेला. यावर्षी तो एफ.वाय. वी.एस्सी.च्या कुमारी मुलानी असिका या विद्यार्थिनीला देण्यात आला.

वर्धिष्णू असणाऱ्या या ग्रंथालयाच्या गुणात्मक वाढीसाठी नेहमी चिकित्सक वृत्तीने प्रोत्साहन देणारे मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले. ग्रंथालय कमिटी चेअरमन डॉ. दर्शन भुटियानी, प्रा. कारभारी व सन्माननीय सदस्य यांचे सहकार्य असून याबरोबरच दैनंदिन कामकाजात सहायक ग्रंथपाल श्री. दामले आ.जी., लेखनिक श्री कुंभार विवेक, श्री. कांबळे दशरथ, श्री. माने पी.के., श्री. मोहन माने, श्री. पिलाजी पवार व श्रीमती आर.व्ही. पवार यांचे सहाय्य मिळत असते. कमवा व शिका या योजने अंतर्गत श्री तेजस माने व कुमारी स्नेहल सावंत हे विद्यार्थी काम करतात.

प्रा.एन.एल. कुंभार  
ग्रंथपाल

## परीक्षा विभाग

शै.वर्ष २०१४-१५ मध्ये परीक्षा विभागा मार्फत 'शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर व लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा यांचे संयुक्त विद्यमाने



'Examinaiton Reforms and Accountability' या विषयावर सातारा जिल्ह्यातील सर्व महाविद्यालयातील प्राचार्य, परीक्षा विभाग प्रमुख व संबंधित कार्यालयीन कर्मचारी यांचेसाठी एक दिवसीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. या कार्यशाळेमध्ये १९५ संबंधितांनी भाग घेतला.

तसेच परीक्षा विभागामार्फत बी.ए.भाग १ चे (मूल्यमापन) CAP व बी.ए. भाग ३ चे अंतर्गत मूल्यमापनचे काम व्यवस्थित पार पाडणेत आले. CAP प्रमुख म्हणून प्रा. सावंत आर.आर. व प्रा. वास्के जी.एम. यांनी काम पाहिले. वर्षभराचे परीक्षेच्या कामकाजाबाबत प्राचार्य डॉ.आर.व्ही शेजवळ यांचे सतत मार्गदर्शन लाभले. तसेच महाविद्यालयातील सर्व प्राध्यापक, कार्यालयीन कर्मचारी वर्ग यांचेही सहकार्य मिळाले.

प्रा.डी.एस. जाधव  
विभागप्रमुख

### निबंध, वक्तृत्व व चित्रकला समिती

निबंध, वक्तृत्व व चित्रकला समितीच्या वतीने शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मध्ये महाविद्यालयातून विविध स्पर्धांचे आयोजन करणेत आले. त्यामध्ये शाखा स्तरीय विविध स्पर्धा, काव्य वाचन स्पर्धा, निबंध स्पर्धेचा उल्लेख प्रशंसनीय आहे.

महाविद्यालयाव्यतिरिक्त अनेक महाविद्यालय व सामाजिक संस्थांद्वारे आयोजित विविध स्पर्धेमध्ये महाविद्यालयातील विद्यार्थ्यांनी भाग घेतला व यश संपादन केले. त्याची विस्तृत माहिती खालील प्रमाणे -

- १) प्रश्नमंजुषा स्पर्धा - इस्माईल साहेब मुल्ला लॉ कॉलेज, सातारा - दुसरा क्रमांक
- २) वक्तृत्व स्पर्धा - देवचंद कॉलेज, अर्जुन नगर, निपाणी - तृतीय क्रमांक
- ३) सातारा नगरपालिका आयोजित - स्वच्छ सुंदर सातारा विषयावर आयोजित वक्तृत्व स्पर्धेत - दुसरा क्रमांक  
डॉ. नाईक, विभागप्रमुख

### आविष्कार समिती

शिवाजी विद्यापीठातर्फे दरवर्षी आविष्कार संशोधन स्पर्धेचे आयोजन करण्यात येते. विद्यार्थ्यांमध्ये संशोधक वृत्ती रुजविणे व विज्ञानातील विविध विषयांतील नवनवीन समस्यांबाबत त्यांची जागरूकता वाढविण्याकरीता अशा स्पर्धांचे आयोजन करण्यात येते.

यावर्षी विद्यापीठाच्यावतीने दहिवडी कॉलेज, दहिवडी येथे दि. १७.२.२०१४ रोजी जिल्हा स्तरीय (सातारा जिल्हा) अविष्कार संशोधन स्पर्धा आयोजित करण्यात आली होती. या स्पर्धेमध्ये एकूण पाच कॅटेगरीमध्ये भाग घेतला होता. आमचे महाविद्यालयातील बी.ए. भाग ३ या वर्गात शिकत असणाऱ्या श्री. गौरव अरूण गाडे याने कॅटेगरी क्र. १ (Human Languages, Fine Arts, Education etc.) मध्ये Impact of AMS Languages on student's English या विषयावर पेपरचे सादरीकरण करून दुसरा क्रमांक पटकाविला व विद्यापीठस्तरीय संशोधन स्पर्धेत भाग घेणेसाठी पात्र झाला.

विद्यापीठस्तरीय मध्यवर्ती आविष्कार संशोधन स्पर्धा दि. २ जानेवारी २०१५ रोजी रसायनशास्त्र अधिविभाग, शिवाजी विद्यापीठ येथे आयोजित करण्यात आली. या स्पर्धेत देखील श्री. गौरव अरूण गाडे याने द्वितीय क्रमांक पटकाविला. त्याची २०-२३ जानेवारी २०१५ रोजी नागपूर येथे होणाऱ्या आंतरविद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड झाली.

आविष्कार समितीला प्राचार्य डॉ. शेजवळ आर.व्ही. यांचे सततचे मार्गदर्शन लाभले. तसेच समितीचे सदस्य प्रा.डी.जी. साळुंखे, डॉ.सी.पी. माने, डॉ.डी.आर. भुटियानी, प्रा.पी.एस. जाधव, डॉ.सौ.आर.ए. नलवडे, प्रा. निनाद कदम यांचे बहुमोल सहकार्य लाभले. तसेच ऑफीसमधील श्री. नेताजी साठे, श्री.एन.जी. पाटील, श्री. सावंत, श्री. वैभव व इतरांचे सहाय्य लाभले. तसेच फिजिक्स विभागातील श्री.ए.एन. कदम, दादा शिंदे, राजू जाधव यांचे पण सहाय्य लाभले.



डॉ.एन.एल. तरवाळ यांनी या संशोधन स्पर्धेचे जिल्हास्तरीय व विद्यापीठ स्तरीय टीम लीडर म्हणून यशस्वीपणे काम पाहिले.

प्रा.डॉ. अशोक कोरडे  
चेअरमन, आविष्कार समिती

### सांस्कृतिक विभाग

शै.व. २०१४-१५ मध्ये सांस्कृतिक विभागाच्या वतीने विविध कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

२६ जून, २०१४ - श्रीमंत छ.शाहू महाराज जयंती निमित्त प्रतिमा पूजन. लोकशाहीर आण्णाभाऊ साठे जयंती निमित्त १ ऑगस्ट, २०१४ रोजी प्रतिमापूजन, ८ ऑगस्ट, २०१४ रोजी प.पू.डॉ. बापूजी साळुंखे यांच्या पुण्यतिथी निमित्त प्रा. प्रतिभा चिकमट व प्रा. गीतांजली साळुंखे यांचे व्याख्यान आयोजित करण्यात आले. ४ सप्टेंबर, २०१४ रोजी संस्था माता सुशीलादेवी साळुंखे यांच्या जयंती निमित्त प्रा.एन.जी. गायकवाड यांचे 'आठवणीतील संस्थामाता' हे व्याख्यान आयोजित करण्यात आले. ५ सप्टेंबर, २०१४ रोजी 'शिक्षक दिन' साजरा करण्यात आला. २ ऑक्टोबर, २०१४ रोजी महात्मा गांधी जयंती व लाल बहादूर शास्त्री जयंती साजरी करण्यात आली. ११ नोव्हें. २०१४ रोजी 'मौलाना आझाद शिक्षक दिन' साजरा करण्यात आला. ३ जानेवारी, २०१५ रोजी सावित्रीबाई फुले यांच्या जयंती निमित्त प्रा.एम.बी. रासकर यांचे व्याख्यान आयोजित करण्यात आले. १२ जानेवारी, २०१५ रोजी विवेकानंद जयंती साजरी करण्यात आली. विवेकानंद जयंती सप्ताह आयोजित करून वेगवेगळी व्याख्याने आयोजित करण्यात आली. १९ जाने. २०१५ रोजी विवेकानंद सप्ताह निमित्त मा. समृद्धी जाधव यांचे 'युवकांपुढील आव्हाने' या विषयावर व्याख्यान आयोजित करण्यात आले. ४ फेब्रु. २०१५ रोजी पारंपारिक दिनाचे आयोजन केले. १९ फेब्रु. रोजी शिवजयंती साजरी करण्यात आली. ११ एप्रिल २०१५ रोजी महात्मा फुले जयंती व १४ एप्रिल, २०१५ रोजी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती साजरी करण्यात आली. हे सर्व उपक्रम राबविण्यासाठी

मा.प्राचार्य डॉ.आर.बी. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन व प्रा.पी. एस.जाधव, प्रा. अनंता कस्तुरे व प्रा. कु. मयुरा राजेभोसले यांची मोलाची साथ मिळाली.

प्रा. सतीश कुदळे  
सांस्कृतिक विभाग प्रमुख

### प्लेसमेंट सेल विभाग

प्लेसमेंट सेल विभागातर्फे २७.९.२०१४ रोजी विमा क्षेत्रातील संधी या विषयावर व्याख्यानाचे आयोजन केले. रिलायन्स लाईफ इन्शुरन्स कंपनी, सातारा विभागाचे शाखा व्यवस्थापक मा. मिलींद कोडसगावकर यांनी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले. तसेच विद्यार्थ्यांच्या मुलाखती घेऊन त्यामध्ये ६० विद्यार्थ्यांचे रिलायन्स लाईफ इन्शुरन्स कंपनी मध्ये इन्शुरन्स अॅडव्हायझरपदाकरीता निवड झाली. या कार्यक्रमाचे अध्यक्ष मा.प्राचार्य डॉ.आर.बी.शेजवळ होते.

डेक्कन स्पेशलिटी अॅग्री सोल्युशन या कंपनीमध्ये तीन विद्यार्थ्यांची नेमणूक झाली आहे.

मुंबई पोलीस भस्ती २०१४ मध्ये लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयातील २० विद्यार्थ्यांची पोलीस शिपाई व चालक पदासाठी निवड झाली. या कामी मा. प्राचार्य डॉ. शेजवळ आर.बी. व प्लेसमेंट कमिटीचे सर्व सदस्य यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा.डॉ. व्ही.वी. सुपुगडे  
विभाग प्रमुख

### अग्रणी महाविद्यालय

अग्रणी महाविद्यालय योजने अंतर्गत महाविद्यालयात विविध विभागाकडून एक दिवसीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आल्या असून त्याचा अहवाल पुढीलप्रमाणे आहे.

१) दि. २.१.२०१५ या दिवशी राज्यशास्त्र विभागाकडून 'स्पर्धापरीक्षा व राज्यशास्त्र' या विषयावर एक दिवसीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. या कार्यशाळेत अग्रणी कॉलेज योजनेत विविध महाविद्यालयातील विद्यार्थी व प्राध्यापक सहभागी झाले होते.



२) दि. २७.१२.२०१४ या दिवशी 'करिअर अपॉर्च्युनिटी एम.एस्सी' या विषयावर महाविद्यालयातील 'रसायनशास्त्र' विभागाकडून एक दिवसीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली. सदर कार्यशाळेत एम.एस्सी. विषयातील विद्यार्थी झाले.

३) दि. १४.१.२०१५ या दिवशी महाविद्यालयातील विद्यार्थिनी विकास मंडळाकडून 'विद्यार्थिनी आरोग्य व हिमोग्लोबिन तपासणी' या विषयी एक दिवसीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली होती. या कार्यशाळेत विद्यार्थिनी मोठ्या प्रमाणात सहभागी झाल्या होत्या.

४) दि. १६.१.२०१५ रोजी महाविद्यालयातील कॉमर्स व इंग्रजी विभागाकडून 'कार्पोरेट वर्ल्ड अॅण्ड इंटरव्यू' या विषयावर एक दिवसीय कार्यशाळा आयोजित करण्यात आली होती. या कार्यशाळेत बी.ए.भाग-३ व बी.कॉम.भाग-३ वर्गातील विद्यार्थी सहभागी झाले होते.

५) दि. २१.१२.२०१४ ते २९.१२.२०१४ या कालावधीत महाविद्यालयात 'उद्योजकता शिबीर' आयोजित करण्यात आले होते. या शिबीरात सुमारे १५० विद्यार्थी सहभागी झाले होते.

वरील सर्व कार्यशाळा व्यवस्थित पार पडण्यासाठी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ हे अध्यक्ष म्हणून उपस्थित होते. त्यांचे नेहमीच सहकार्य असते. तसेच महाविद्यालयातील सर्व शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी यांनी चांगले सहकार्य केले. त्याबद्दल मी त्यांचा आभारी आहे.

प्रा.एम.बी. रासकर

समन्वयक, अग्रणी महाविद्यालय योजना

### विद्यार्थिनी विकास मंडळ व दैनिकीक अत्याचार नियंत्रण समिती :

महाविद्यालयीन युवतींचा विकास म्हणजे कुटुंबाचा विकास, पर्यायाने समाजाचा व देशाचा विकास. या दृष्टीने विद्यार्थिनींना अभ्यासाबरोबर स्वतःची जाणीव करून देणे

व सक्षम करणे, त्यांच्या कलागुणांना वाव देणे, त्यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी व्यक्तिमत्त्व फुलविणे यासाठी चालू शैक्षणिक वर्षात विविध उपक्रमांचे आयोजन केले होते.

१) विद्यार्थिनींना स्वतःची जाणीव व्हावी, महिला विषयक कायद्यांची माहिती व्हावी यासाठी सिनिअर व ज्युनिअर विभागातील मुलींसाठी कायदेविषयक मार्गदर्शन करण्यासाठी डॉ. सुमित्रा कुलकर्णी यांचे व्याख्यान आयोजित केले होते.

२) विद्यार्थिनी विकास मंडळाचे उद्घाटन व आरोग्यविषयक मार्गदर्शन करण्यासाठी डॉ. अपर्णा सदावर्ते यांना आमंत्रित करण्यात आले होते.

३) विद्यार्थिनींच्या कलेला वाव मिळावा यासाठी मेहंदी वर्गाचे आयोजन करण्यात आले होते.

४) संक्रांतीला हलव्याचे दागिने तयार करणे व त्याची विक्री यासाठी एक दिवसीय कार्यक्रमाचे आयोजन.

५) विद्यार्थिनींच्या व्यक्तिमत्त्वाचा विकास व्हावा यासाठी एन.एस.एस. कॅम्पमध्ये महिलांसाठी योगा वर्गाचे आयोजन करण्यात आले होते. यात कॅम्पमधील ४० विद्यार्थिनी व गावातील २२ महिला सहभागी झाल्या होत्या. त्याला लायन्स क्लबचे माजी अध्यक्ष बाळासाहेब शिरकाडे यांनी मार्गदर्शन केले.

६) विद्यार्थिनींना कायदेविषयक सल्ल्याबरोबर आरोग्याच्या समस्या कशा सोडवाव्यात याविषयी मार्गदर्शन करण्यासाठी अग्रणी योजनेर्गत एक दिवसीय कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले होते. या कार्यशाळेत जॅड.डॉ. संध्या पंडित यांनी 'समाजातील महिलांची छेडछाड व त्यावर उपाययोजना' याविषयी मार्गदर्शन केले तसेच महिलांनी कायद्याचा वापर कसा करावा याविषयी माहिती दिली.

दुपारच्या सत्रात महिलांचे आरोग्य व त्यांचा आहार विहार याविषयी डॉ. अपर्णा सदावर्ते यांचे मार्गदर्शन मिळाले.



तिसऱ्या सत्रात मुलींचा हिमोग्लोबीन चेकअप कॅम्प आयोजित करण्यात आला होता. यात २८० विद्यार्थिनी सहभागी झाल्या होत्या. यासाठी सहकार्य मिळाले लायन्स क्लब ऑफ सातारा युनायटेड यांचे. या क्लबचे अध्यक्ष प्रा.आर.आर. ओहोळ,बाळासाहेब शिरकाडे, बाळासाहेब साळुंखे व अन्य सदस्यांचे सहकार्य लाभले.

लैंगिक अत्याचार नियंत्रण समितीतर्फे मुलींच्या येणाऱ्या तक्रारींचे निवारण करण्यासाठी दोन बैठकांचे आयोजन करण्यात आले होते. तसेच मुलींच्या समस्या सोडविण्यासाठी स्थानिक समिती मार्फत प्राचार्यांच्या मार्गदर्शनाखाली योग्य प्रयत्न करून समस्यांचे निराकरण करण्यात आले. मुलींच्या आरोग्याच्या तक्रारी सोडविण्यासाठी त्यांना सिव्हील हॉस्पिटलतर्फे मोफत उपचार देण्यात आले.

या दोनही समितीच्या कामासाठी प्रा. गीतांजली साळुंखे, प्रा. स्वाती वैतवाड व प्रा. हरेकरी मॅडम, प्रा.डॉ. कोरडे ए.एम. यांचे सहकार्य मिळाले व हे उपक्रम व्यवस्थित पार पाडण्यासाठी मार्गदर्शन व प्रेरणा व सहकार्य मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांच्याकडून मिळाल्याने समितीचे कामकाज व्यवस्थित पार पाडू शकले.

#### प्रा. प्रतिभा चिकमठ

चेअरमन, विद्यार्थिनी विकास मंडळ व लैंगिक अत्याचार नियंत्रण समिती

### युवा महोत्सव

शैक्षणिक वर्ष सन २०१४-२०१५ मधील जिल्हास्तरीय युवा महोत्सव 'दहिवडी महाविद्यालय', दहिवडी येथे दिनांक १ ऑक्टोबर, २०१४ रोजी पार पडला. तसेच मध्यवर्ती युवा महोत्सव दिनांक ११ व १२ ऑक्टोबर, २०१४ रोजी राजे रामराव महाविद्यालय, जत, जिल्हा सांगली येथे पार पडला.

जिल्हा स्तरीय युवा महोत्सवामध्ये खालील प्रकारामध्ये आपण यशस्वी झालो.

#### सुगम गायन - द्वितीय क्रमांक

सहभागी कु. स्वराली सोनाजी लोटेकर बी.ए. २  
कलाकार

#### मुकनाट्य - तृतीय क्रमांक

सहभागी १. श्री. भोसले सागर अविनाश बी.ए. १  
कलाकार २. श्री. कणसे नीरज ज्ञानेश्वर बी.कॉम. ३  
३. श्री. जाधव अक्षय अनिल बी.कॉम. ३  
४. श्री. पवार सूर्यकांत अर्जुन बी.कॉम. २  
५. कु. साळुंखे प्रियांका अशोक बी.एस्सी. ३  
६. कु. भिलारे शीतल स्मेश बी.ए. ३

#### समूह गायन- तृतीय क्रमांक

सहभागी १. श्री. कुर्यापल्ली जोनाथन पॉलीबी.ए. १  
कलाकार २. श्री. गोडसे सचिन ज्ञानदेव बी.ए. १  
३. कु. लोटेकर स्वराली सोनाजी बी.ए. २  
४. कु. भिलारे शीतल स्मेश बी.ए. ३  
५. कु. सोनावणे नेहा प्रदीप बी.ए. २  
६. कु. सुतार तृप्ती दिगंबर बी.एस्सी. २

#### बादविवाद - तृतीय क्रमांक

सहभागी १. श्री. चव्हाण ऋषिकेश सुनील बी.कॉम. २  
कलाकार २. कु. शिंदे रेश्मा राजकुमार बी.एस्सी. ३

सदर यशस्वी कलाप्रकार व कलाकार राजे रामराव महाविद्यालय, जत, जि. सांगली येथे मध्यवर्ती युवा महोत्सव पार पडला त्यामध्ये सहभागी झाले होते.

मध्यवर्ती युवा महोत्सवातून विद्यापीठ पातळीवरील 'इंद्रधनुष्य' मध्ये श्री. सागर दिलीप कुलकर्णी बी.एस्सी. २ याची 'बासरीवादन' या प्रकारासाठी निवड झाली. तसेच कु. स्वराली सोनाजी लोटेकर बी.ए. २ हिची सुगम गायन या प्रकारात निवड झाली.

दिनांक ५ नोव्हेंबर ते ९ नोव्हेंबर, २०१४ या कालावधीत 'संत गाडगेबाबा विद्यापीठ', अमरावती येथे झोनल विभागामध्ये झालेल्या स्पर्धेत कु. स्वराली सोनाजी लोटेकर बी.ए. २ हिला 'हार्मोनियम वादन' प्रकारामध्ये सुवर्ण पदक (गोल्डमेडल) मिळाले.



दिनांक २३.१२.२०१४ मंगळवार रोजी पुसेगांव येथे श्री. सेवागिरी स्थयात्रे निमित्त आयोजित 'जिल्हा स्तरीय युवा महोत्सव' मध्ये कु. स्वराली सोमाजी लोटेकर वी.ए. २ हिने सादर केलेल्या सुगम गायनास द्वितीय क्रमांक मिळाला.

तसेच दि. २४.१२.२०१४ बुधवार रोजी दै. तरुणभारत आयोजित 'लोकमान्य पुरस्कृत युवा महोत्सव'मध्ये (जिल्हास्तरीय) कु. स्वराली सोनाजी लोटेकर वी.ए. २ हिला 'उत्कृष्ट गायिका' म्हणून गौरविण्यात आले. तसेच महाविद्यालयातील 'मूकनाट्य' प्रकारातील कलाकारांनी 'शेतकऱ्यांची व्यथा' सादर केली. त्यास उत्तेजनार्थ वक्षीस मिळाले.

वरील सर्व कलाकारांना महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे उत्कृष्ट मार्गदर्शन लाभले. वरील सर्व प्रकार यशस्वी करणेसाठी युवा महोत्सव कमिटी प्रमुख प्रा.एस.एम. मेस्त्री व कमिटी सदस्य प्रा.वी.एस. जगताप, डॉ.एस.एम. पवार, प्रा.एच.व्ही. चामे, प्रा.एस.ए. मोहिते, प्रा.व्ही.ए. जाधव, प्रा.एम.एस. जाधव, प्रा.कु. एम.एस. राजेभोसले, प्रा.कु. एस.पी. बैनवाड, प्रा.एस.जी. गुरव व प्रा.आर.जी. मदन येांचे सहकार्य लाभले.

या सर्व कार्यक्रमासाठी विशेष सहकार्य प्रा.डी.जी. साळुंखे यांचे लाभले.

प्रा.एस.एम. मेस्त्री  
युवा महोत्सव, प्रमुख

### प्राध्यापक प्रबोधिनी

शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ या कालावधीत प्राध्यापक प्रबोधिनीचे उद्घाटन प्रा.डॉ.आर.जी. पाटील यांच्या 'हृदयरोग कारणे व उपाय' या व्याख्यानाने दि. १.१०.२०१४ रोजी झाले. या कालावधीत खालील प्राध्यापकांनी व्याख्यान दिले.

- १) प्रा.डॉ.बी.डी सगरे दि. २४.२.२०१४  
"नारी विमर्श"

- २) प्रा.डॉ.डी.आर. भुटियानी दि. २७.२.२०१४  
"बजेट २०१४-सर्वसामान्यांच्या अपेक्षा"
- ३) प्रा.वी.एम. माळी 3.3.2015  
"GIS, RS GPS A New Techniques"
- ४) प्रा.एच.व्ही. चामे ११.३.२०१५  
"वृद्धांच्या समस्या"

वरील सर्व कार्यक्रमास मा.प्राचार्य डॉ. आर.व्ही. शेजवळ यांचे बहुमोल मार्गदर्शन लाभले तसेच कमिटी सदस्य प्रा.एस.पी. कुदळे तसेच प्रशासकीय सेवकांचे सहकार्य लाभले.

श्री.एस.एम. मेस्त्री  
प्राध्यापक प्रबोधिनी प्रमुख

### मराठी विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मध्ये मराठी विभागाच्यावतीने विद्यार्थी-विद्यार्थिनींना प्रेरणा देण्याच्या हेतुने विविध उपक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

#### १) भित्तिपत्रिका :

मराठी विभागाच्या वतीने शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांच्या स्मृतिदिनाच्या निमित्ताने दि. १ ऑगस्ट, २०१४ रोजी 'मायबोली' या भित्तिपत्रिकेद्वारे शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांचे 'पत्ररूपी विचार मंथन' या विषयावर प्रा.गीतांजली साळुंखे यांच्या शुभहस्ते प्रकाशन करण्यात आले.

#### २) निबंधलेखन :

विद्यार्थी-विद्यार्थिनी यांच्यामध्ये निबंध लेखन स्पर्धा 'मी माळीण गाव बोलतोय' या विषयावर घेण्यात आली. सदर स्पर्धेचे वक्षीस वितरण महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ साो. यांच्या हस्ते १३ सप्टें. २०१४ रोजी संपन्न झाले.

#### ३) अग्रणी कार्यशाळेत विद्यार्थी सहभाग :

शिवाजी विद्यापीठ अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत कला व वाणिज्य महाविद्यालयाने दि. २५



सप्टें. २०१४ रोजी आयोजित केलेल्या विद्यार्थी कवी संमेलनात २१ विद्यार्थ्यांनी तसेच २६ डिसेंबर, २०१४ रोजी 'लेखन आपुल्या दारी' या कार्यक्रमास १० विद्यार्थी उपस्थित होते. त्याचबरोबर छ. शिवाजी कॉलेज, सातारा यांनी आयोजित केलेल्या ९ फेब्रुवारी, २०१५ रोजी 'मराठी चित्रपट निर्मिती व लेखन' कार्यशाळेस विद्यार्थी व प्राध्यापक उपस्थित होते.

#### ४) राष्ट्रीय चर्चासत्र :

हिंदी व मराठी विभाग यांच्या संयुक्त विद्यमाने दि. ३० सप्टेंबर व १ आक्टोबर २०१४ रोजी 'हिंदी व मराठी साहित्यातील आंबेडकरी प्रेरणा' या विषयावर चर्चासत्र संपन्न केले. सदर चर्चासत्रासाठी राष्ट्रीय स्तरातून ११० मान्यवर हजर होते. त्यामध्ये लेखक, संशोधक, अभ्यासक यांचा समावेश होता.

#### ५) शैक्षणिक सहल :

मराठी विभागाची शैक्षणिक सहल ६ जानेवारी, २०१५ रोजी प्रतापगड, महाबळेश्वर, वाई या ठिकाणी आयोजित करण्यात आली. सदर सहलीसाठी १८ विद्यार्थी-विद्यार्थिनी व प्राध्यापकांनी सहभाग घेतला.

#### ६) मराठी वाङ्मय मंडळ उद्घाटन व कवी संमेलन :

मराठी विभागाच्या वतीने शाहीर कवी थळेंद्र लोखंडे यांच्या हस्ते १५ जानेवारी, २०१५ रोजी मराठी वाङ्मय मंडळाचे उद्घाटन झाले. तसेच याचवेळी कवी संमेलनासाठी एकूण ५८ विद्यार्थी-विद्यार्थिनींनी सहभाग घेतला व १२ विद्यार्थी-विद्यार्थिनींनी कविता वाचन केले. सदर कार्यक्रमाच्या अध्यक्षपदी प्रा.डी.जी. साळुंखे होते. प्राध्यापक ही मोठ्या संख्येने हजर होते.

#### ७) विद्यार्थ्यांसाठी टर्क-श्राव्य माध्यमाचा वापर :

मराठी विभागातील बी.ए. भाग १या वर्षातील विद्यार्थी विद्यार्थिनींना 'चितळे मास्तर' हे व्यक्तीचित्रण ऑडीओ-व्हीडीओद्वारे दाखविण्यात आले. तसेच बी.ए. भाग ३च्या विद्यार्थ्यांना संगणक इंटरनेट द्वारे अभ्यासक्रमातील

ज्ञान देण्यात आले. सदर उपक्रमासाठी प्रा.डॉ. दर्शन भुटियांनी यांचे मार्गदर्शन लाभले.

#### ८) मराठी भाषा गौरव दिन :

२७ फेब्रुवारी, २०१५ रोजी मराठी विभागव्यावतीने साजरा करण्यात आला. या कार्यक्रमात विद्यार्थी-विद्यार्थिनींनी मराठी 'भाषेचा गौरव आणि मराठी भाषेचे महत्त्व' या विषयावर भाषण तसेच कविता वाचन केले. कार्यक्रमाचे प्रमुख पाहुणे प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ यांनी 'मराठी भाषा आणि भवितव्य' या विषयावर मोलाचे मार्गदर्शन केले. सदर कार्यक्रमासाठी विद्यार्थी विद्यार्थिनी व प्राध्यापकवर्ग यांचा मोठा सहभाग होता.

सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात मराठी विभागातील विद्यार्थी-विद्यार्थिनींनी पारंपारिक दिन वक्तृत्व-निबंध राज्यस्तरीय स्पर्धा यासारख्या उपक्रमांमध्ये सहभाग घेतला. तसेच अभ्यासक्रमांतर्गत सेमिनारचे लेखन व सादरीकरण केले. सर्वच उपक्रमांना महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ व प्रा.अनंता कस्तुरे यांचे बहुमोल मार्गदर्शन, सहकार्य मिळाले.

प्रा. बाळासाहेब एस. जगताप  
मराठी विभाग प्रमुख

#### हिन्दी विभाग

या शै.वर्षी हिन्दी विभागामार्फत १४ सप्टेंबर रोजी हिंदी दिवस व राष्ट्रभाषा स्थिति एवं गति भित्तिपत्रिकेचे उद्घाटन संपन्न झाले. प्रमुख वक्ते म्हणून डॉ. भारत खिलारे शिवाजी कॉलेज, सातारा हे होते.

- दि. ३० सप्टेंबर व १ आक्टोबर, २०१४ रोजी 'हिंदी और मराठी साहित्य में आंबेडकरवादी चेतना' या विषयावर राष्ट्रीय कार्यशाळा संपन्न झाली. यामध्ये ११० प्राध्यापकांनी आपले शोधनिबंध सादर केले.
- दि. ३० सप्टेंबर २०१४ रोजी 'आंबेडकरवादी साहित्यकार' या भित्तिपत्रिकेचे उद्घाटन प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे यांचे हस्ते संपन्न झाले.



- 'सामाजिक क्रांति और दलित साहित्य' व 'हिंदी और मराठी साहित्य में आंबेडकरवादी चेतना' या दोन पुस्तकांचे प्रकाशन संपन्न झाले.
- कु. वैशाली चव्हाण हिला (हिंदी) पीएच.डी. प्राप्त झाली. प्राचार्य डॉ. आर.जी. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन लाभले. डॉ. विठ्ठल नाईक यांचे सहकार्य मिळाले.

डॉ. वी.डी. सगरे  
हिंदी विभाग प्रमुख

### Department of English & Dr. Bapuji Salunkhe English Literary Asso.

The department organizes various activities throughout the academic year for the betterment of students.

- 1) The inauguration of Dr. Bapuji Salunkhe English literary association and welcome of B.A. part I optional English students was organized on 12<sup>th</sup> August, 2014. Principal Suhas Salunkhe was the guest of honor.
- 2) Two wall papers were published one in each term. On 20<sup>th</sup> August, 2014, there was display of wall paper on the topic "The Man Booker Prize." The second wall paper on "Feminism" was published on 30<sup>th</sup> December, 2014.
- 3) A one day English Speaking trip to Panchgani was organized on 13<sup>th</sup> September, 2014 for all students of B.A.I, II and III Special English.
- 4) Throughout year department gave more emphasis on Audio-visible aids and movies based on prescribed texts were screened for B.A. part I, II and III students. They were Heart of Darkness, Othello, Cry the Beloved country, Shantata Court Chalu Ahe, Lord of the Flies etc..

- 5) A one day Workshop on Interview Techniques in English was organized under MOU collaboration with Commerce department. Prof. Bhola A. S. was Guest Lecturer for present workshop.
- 6) A self funded Spoken English course has been started from 1<sup>st</sup> January, 2015. It was inaugurated by Hon. Prin. Shubhangi Gavade.
- 7) Beside this Library Visit, Group Discussion, Storytelling etc. activities were organized.

Hon. Prin.Dr. R.V.Shejwal was a major support and inspiration behind all these activities. The faculties Prof. D.G.Salunkhe, Prof.Manoj Jadhav, Prof. S.A.Kamble and Prof. S.G.Gurav helped a lot to carry out these activities successfully.

Prof.D.G. Salunkhe  
Head, Department of English

### संस्कृत विभाग

या शैक्षणिक वर्षामध्ये जुलै महिन्यात गुरुपौर्णिमेनिमित्त 'व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' या विषयावर भित्तिपत्रिका प्रकाशित करण्यात आली. यामध्ये बी.ए. भाग १ मधील विद्यार्थिनींनी सहभाग घेतला.

शिवाजी विद्यापीठातर्फे पीएच.डी.च्या खुल्या मौखिक परीक्षेचे आयोजन करण्यात आले. संस्कृत विभाग प्रमुख प्रा.डॉ. श्रीमती एस.एस. राजेभोंसले यांच्या मार्गदर्शनाखाली श्री. रोहन वेंगुर्लेकर यांनी विद्यापीठास 'अचिन्त्य भेदाभेद तत्वज्ञानाचे चिकित्सक अध्ययन' या विषयावरील प्रबंध सादर केला. परीक्षक मा.प्रा.डॉ. श्रीमती शैलजा कात्रे तसेच अध्यक्ष म्हणून प्रा.सौ. अराणके उपस्थित होत्या.

'गीता जयंती' निमित्त आयोजित कार्यक्रमास प्रमुख वक्ते म्हणून प्रा. आण्णासाठो शिंदे यांनी मार्गदर्शन केले.



संस्कृत विभागातर्फे स्वयं-रूपरेषित 'मेहंदी कोर्स'चे आयोजन करण्यात आले. या कोर्ससाठी सुमारे १०५ विद्यार्थिनींनी सहभाग घेतला. 'कमवा व शिका' या योजनेअंतर्गत बी.ए. भाग १ मधील विद्यार्थिनी कु. अनिसा शेख या विद्यार्थिनीस विभागाने संधी उपलब्ध करून दिली. श्रीमती दिवे यांनी सहकार्य केले.

शिवाजी विद्यापीठाच्या प्रौढ आणि निरंतर शिक्षण व विस्तार कार्य विभागातर्फे 'व्यक्तिमत्व सौंदर्य संवर्धन' अभ्यासक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. मार्गदर्शिका म्हणून श्रीमती सुषम भोरे (पॉल) यांनी काम केले. या कोर्ससाठी प्रा. गीतांजली साळुंखे मंडमनी सहकार्य केले. श्री. कागवाडे यांनी कार्यालयीन कामकाज पूर्ण करून सहकार्य केले.

शिवाय विभागाने खालील विभागास सहकार्य केले.

- १) परीक्षा विभाग - एक दिवसीय कार्यशाळा Examination Reforms & Accountability
- २) हिंदी विभाग - द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
- ३) शिक्षक दिन.
- ४) प्राणिशास्त्र विभाग - 'सेवा गौरव समारंभ'
- ५) प्राणिशास्त्र विभाग - National Conference
- ६) 'जय जवान जय किसान' स्मृती व्याख्यानमाला
- ७) सांस्कृतिक विभाग - विवेकानंद जयंती सप्ताह
- ८) शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे राज्यस्तरीय स्पर्धा 'वक्तृत्व, निबंध, चित्रकला व विवेकानंद टॅलेंट सर्व स्पर्धा'
- ९) वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभ
- १०) इतिहास विभाग - 'इतिहास महोत्सव'

#### व्यक्तिगत :

- १) अभ्यास मंडळ सदस्य
- २) अशासकीय महाराष्ट्र राज्य संस्कृत स्थायी समिती सदस्य.
- ३) पीएच.डी. मार्गदर्शक - एकूण चार विद्यार्थिनींचे रजिस्ट्रेशन झाले.  
या शैक्षणिक वर्षातील प्रा.डॉ.आ.ह. साळुंखे पुस्तकृत

- १) शिक्षण महर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे पारितोषिक बी.ए. भाग २ या वर्गात विद्यापीठ परीक्षेत महाविद्यालयात सर्वाधिक गुण मिळाल्याने कु. शिंदे अश्विनी अशोक, बी.ए. भाग ३ या विद्यार्थिनीस मिळाले.
- २) मधुश्री साळुंखे पारितोषिक बी.ए. भाग १ मध्ये संस्कृत विषयात सर्वाधिक गुण मिळाल्याने बी.ए. भाग २ मध्ये प्रवेश घेतलेल्या कु. पूजा हणमंत शेळके या विद्यार्थिनीस मिळाले.

या विभागातील प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ सरांचे मौलिक मार्गदर्शन आणि सहकार्य लाभले.

प्रा.डॉ. श्रीमती एस.एस. राजेभोंसले  
विभाग प्रमुख

#### समाजशास्त्र विभाग

समाजशास्त्र विभागाच्या वतीने दि. ६.१.२०१५ रोजी 'ऑगस्ट कॉम्ट समाजशास्त्राचे जनक यांचे विचार' या विषयावर भित्तिपत्रिका काढली तसेच अजिंक्यतारा किल्ल्यावर दि.२३.२.२०१५ रोजी वृक्षसंवर्धन कार्यक्रमा-अंतर्गत झाडांना पाणी देण्यात आले. तसेच विद्यार्थ्यांचे सेमिनार व गटचर्चा याचे आयोजन करण्यात आले.

प्रा.एच.व्ही. चामे  
समाजशास्त्र विभागप्रमुख

#### राज्यशास्त्र विभाग

- १) राज्यशास्त्र विभागाच्या वतीने दोन भित्तिपत्रिकांचे आयोजन केले गेले. 'महाराष्ट्रातील भारतरत्न' आणि 'पाश्चात्य राजकीय विचारवंत' या विषयावर या भित्तिपत्रिका काढण्यात आल्या.
- २) अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत 'स्पर्धा परीक्षा व राज्यशास्त्र. या विषयावर एकदिवसीय कार्यशाळा घेण्यात आली.
- ३) सावित्रीबाई फुले महाविद्यालय, सातारा येथे 'व्यक्तिमत्व विकास' या विषयावरील कार्यशाळेत राज्यशास्त्र विभागाच्या दोन विद्यार्थिनींनी सहभाग नोंदवला.



- ४) राज्यशास्त्र विभागाच्या वतीने दि. २६ नोव्हेंबर, २०१४ रोजी 'संविधान दिन' साजरा करण्यात आला.
- ५) राज्यशास्त्र विभागाच्यावतीने १६ फेब्रुवारी, २०१५ रोजी प्रतिसंसद घेण्यात आली.

याप्रमाणे राज्यशास्त्र विभागाच्यावतीने विद्यार्थ्यांसाठी कार्यक्रम घेण्यात आले.

प्रा.एस.पी. वैनवाड  
राज्यशास्त्र विभागप्रमुख

### अर्थशास्त्र विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मध्ये अर्थशास्त्र विभागात विद्यार्थी-विद्यार्थिनींसाठी विविध उपक्रम राबविण्यात आले. त्याचा तपशील पुढीलप्रमाणे-

#### भित्तिपत्रिका :

- १) दि. ११ जुलै, २०१४ रोजी जागतिक लोकसंख्या दिना निमित्ताने "वाढती लोकसंख्या एक संधी" या विषयावर भित्तिपत्रिका प्रसिध्द केली. त्याचे उद्घाटन मा.प्राचार्य आर.व्ही. शेजवळ यांनी केले.
- २) दि. १३ ऑगस्ट २०१४ रोजी 'अंदाजपत्रक रचना' विषयावर भित्ती पत्रिका प्रसिध्द केली. त्याचे उद्घाटन मा.प्राचार्य आर.व्ही. शेजवळ यांनी केले.

अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत कला वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा आयोजित "भारतातील लघुउद्योग विकासातील बँकांची भूमिका" या कार्यशाळेत अर्थशास्त्र विभागातील विद्यार्थ्यांचा सहभाग - दि. २५.९.२०१४

- प्रथम सत्रातील सप्टेंबर, आक्टोबर २०१४ मध्ये बी.ए. भाग ३ तसेच बी.ए. भाग १ व २ वर्गातील विद्यार्थ्यांचे वर्ग सेमिनार घेण्यात आले.
- दि. १७.९.२०१४ रोजी बी.ए. भाग ३ मधील विद्यार्थ्यांची वर्षा सहल "कास पठार" येथे काढण्यात आली. त्यात विद्यार्थ्यांना कास पठारावरील फुलांची माहिती व पर्यावरण संवर्धन जागृती करण्यात आली.

- दि. २३ डिसेंबर, २०१४ रोजी बी.ए. भाग ३ च्या विद्यार्थ्यांसह दत्तक गांव रेनावळे येथे जाऊन गावातील कुटुंबांचे आर्थिक व सामाजिक सर्वेक्षण प्रश्नावलीद्वारे करण्यात आले.
- दि २९.१.२०१५ रोजी "ॲक्मे इन्फोव्हिजन" आय.टी. पार्क, सातारा या कंपनीस विद्यार्थ्यांसह भेट दिली आणि कंपनीच्या कामकाजाची माहिती घेतली. तसेच क्षेत्र माहुली येथील "न्या. रामशास्त्री प्रभुणे सह. पतसंस्थेस भेट दिली व कार्याची माहिती घेतली.
- दि. २६ व २७ फेब्रु. २०१५ रोजी मुरुड जंजीरा येथे शैक्षणिक सहलीचे आयोजन करण्यात आले.

वरील सर्व उपक्रम राबविण्यासाठी मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांचे मार्गदर्शन व प्रा.एस.पी. कुदळे व प्रा.आर.पी. मदनने यांचे सहकार्य मिळाले.

प्रो. ईश्वर अहिरे  
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख

### मानसशास्त्र विभाग

- १) ५ सप्टेंबर २०१४ रोजी शिक्षक दिनानिमित्त विद्यार्थ्यांनी शिक्षकांचा सत्कार केला. सदर दिवशी विद्यार्थी शिक्षक झाले होते.
- २) दि. १ आक्टोबर २०१४ 'ज्येष्ठ नागरीक दिना' निमित्त जिव्हाळा सेवाभावी संस्था, सातारा यांचेमार्फत चालविल्या जाणाऱ्या वृध्दाश्रमास भेट, खाऊ वाटप व 'आभाळमाया' भित्तिपत्रिकेचे उद्घाटन.
- ३) १० आक्टोबर, २०१४ 'जागतिक मानसिक आरोग्य दिना'निमित्त जिल्हा रुग्णालय, सातारा व मानसशास्त्र विभाग यांचेमार्फत 'स्क्रिझोफ्रेनिया' या मानसिक आजारावरील 'देवराई हा चित्रपट दाखविणेत आला.
- ४) विद्यार्थ्यांमध्ये इतरांच्या समोर बोलण्याचे धाडस निर्माण व्हावे यासाठी वेगवेगळ्या विषयावर 'सेमिनार'च्या माध्यमातून संधी उपलब्ध करणेत आली.

प्रा.एस.एस. मेस्त्री  
मानसशास्त्र विभागप्रमुख



## इतिहास विभाग

### डॉ. आप्पासाहेब पवार इतिहास अभ्यास मंडळ

शैक्षणिक वर्ष २०१४-१५ मध्ये इतिहास विभागातर्फे अनेक अभ्यासपूर्ण व मोठ्याप्रमाणात विद्यार्थी सहभाग असणाऱ्या कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

महाविद्यालयाच्या इतिहासात नोंद व्हावी अशा भव्य इतिहास महोत्सवाचे आयोजन गुरुवार दि. १२ फेब्रु. २०१४ रोजी करण्यात आले होते. या महोत्सवाचे उद्घाटन करण्यासाठी हिंदवी स्वराज्याचे संस्थापक छत्रपती शिवरायांचे वंशज मा. खासदार श्रीमंत छत्रपती उदयनराजे भोसले हे उपस्थित होते. शाही मिरवणुकीने मा. उदयनराजे भोसले यांनी इतिहास प्रदर्शनाच्या चार दालनांचे उद्घाटन केले. त्यामध्ये पहिल्या दालनात छत्रपती शिवरायांच्या विविध भावमुद्रांचे प्रदर्शन भरविले होते. दुसऱ्या दालनामध्ये शिवकालीन दुर्मिळ ऐतिहासिक पत्रे, इतिहासातील दुर्मिळ ग्रंथ व सातारा नगरीचा संपूर्ण इतिहास पोस्टर प्रदर्शनातून मांडण्यात आला. तिसऱ्या दालनात इतिहासकालीन भांडी, शिवकालीन नाणी, परदेशी चलन यांचे पदर्शन भरविण्यात आले होते. चौथ्या दालनामध्ये शिवकालीन विविध तलवारी, भाले, तोफगोळा, चिलखत, जिरटोप इ. शस्त्रास्त्रांचे प्रदर्शन मांडले होते.

या इतिहास महोत्सवासाठी मा.प्राचार्य डॉ. राजेंद्र शेजवळ, सातारा शहराचे नगराध्यक्ष, उपनगराध्यक्ष व नगरसेवक, प्राध्यापक, विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते. हे प्रदर्शन पाहण्यासाठी सातारा नगरीतील विविध थरातील मान्यवर मंडळी, शहरातील सर्व शाळा, शिवाय कऱ्हाड, कोल्हापूर, कोरगाव, दहीवडी, खटाव, पुणे, मुंबई येथील असंख्य इतिहासप्रेमींनी भेट दिली व इतिहास महोत्सवाचे कौतुक केले.

इतिहास विभागातर्फे ९ ऑगस्ट या क्रांतीदिनानिमित्त भारतातील क्रांतीकारकांच्या जीवनावर भित्तिपत्रिका प्रकाशित करण्यात आली. १६ ऑगस्ट रोजी इतिहास विभागातर्फे चालविल्या जाणाऱ्या डॉ. आप्पासाहेब पवार इतिहास अभ्यास मंडळाचे उद्घाटन करण्यासाठी श्रीमती मीनलबेन महेता

कॉलेज, पांचगणी महाविद्यालयाचे इतिहास विभाग प्रमुख प्रा. सतीश खुटाळे यांना आमंत्रित करण्यात आले होते. त्यांनी इतिहास मंडळाचे उद्घाटन करून मुघल बादशहा औरंगजेब याच्या जीवन चरित्राचा आढावा घेतला. या कार्यक्रमात इतिहास विषयात प्रथम येणाऱ्या विद्यार्थ्यांना बक्षीसे दिली.

विद्यार्थ्यांना सामाजिक वास्तवतेचे भान व्हावे व एक सामाजिक बांधीलकीसाठी वृद्धाश्रमाला भेट दिली.

विद्यार्थ्यांच्या सुप्त गुणांना वाव देण्यासाठी व त्यांना बोलते करण्यासाठी 'ऐनवेळच्या विषयावर बोलणे' या विषयावर सेमिनारचे आयोजन केले होते.

शिवचरित्रातील एक महत्त्वाची घटना म्हणजे प्रतापगडचा विजय या दिवसाच्या निमित्ताने साजरा केला जाणारा शिवप्रतापदिन साजरा केला गेला. या कार्यक्रमात प्रा.डी.जी. साळुंखे यांनी मार्गदर्शन केले. इतिहास विभागातर्फे यु.जी.सी. स्पॉन्सर्ड ह्यूमन राईट्स हा कोर्स चालविला जातो. वरील सर्व उपक्रमास महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांची प्रेरणा व मार्गदर्शन मिळाले. तसेच विभागाचे सर्व उपक्रम यशस्वीरीत्या पार पाडण्यात माझे सहकारी प्रा. दीपक जाधव यांचे उत्तम सहकार्य लाभले.

प्रा. प्रतिभा चिकमठ  
इतिहास विभाग प्रमुख

## भूगोल विभाग

सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात भूगोल विभागात पुढील प्रमाणे कार्यक्रम राबविण्यात आले.

१) ५ सप्टेंबर २०१४ रोजी विभागप्रमुख प्रा. एम.बी. रासकर, प्रा. वी.बी. बागल व प्रा.वी.एम. माळी यांच्या उपस्थितीत भूगोल विभागामध्ये 'शिक्षक दिन' साजरा करण्यात आला.

२) सन २०१४ मध्ये भूगोल विभागाच्या वतीने 'भूमिपात' भित्तिपत्रिका प्रकाशित करण्यात आली. दै. पुढारीचे संपादक हरिष पाटणे व मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ यांच्या हस्ते उद्घाटन करण्यात आले.



- ३) सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात विभागाच्या मार्फत शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूरच्या प्रौढ व निरंतर विभागाचा 'Travel & Tourism' हा कोर्स सुरू करण्यात आला आहे.
- ४) सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात भूगोल विभागातील प्रा.बी.बी. बागल व प्रा.बी.एम. माळी व बी.ए. भाग ३ च्या विद्यार्थ्यांनी मौजे रेनावळे दत्तक खेड्याचा कृषी विषयक सर्वेक्षण करून अहवाल तयार केला.
- ५) दि. ३.१.२०१५ या दिवशी प्रा.एम.बी. रासकर यांनी महाविद्यालयात सावित्रीबाई फुले यांच्या जन्मदिनी व्याख्यान दिले.
- ६) दि. १४.१.२०१५ या दिवशी भूगोल विभागात 'भूगोल दिन' व 'भारतीय अवकाश संशोधन विकास' या विषयी व्याख्यान व भित्तिपत्रिका प्रकाशित करण्यात आली. या कार्यक्रमास प्रमुख पाहुणे प्रा.डॉ. झोडगे एस.बी. व अध्यक्ष प्रा.डी.जी. साळुंखे उपस्थित होते.
- ७) शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर यांच्या मार्फत दहिहवडी येथे "आविष्कार" उपक्रमात भूगोल विभागातील विद्यार्थ्यांनी 'भूमिपात' या विषयावर पोस्टर प्रदर्शनामध्ये सहभाग नोंदविला.
- ८) दि. २७.१.२०१५ ते ४.२.२०१५ या कालावधीत भूगोल विभागाने शैक्षणिक अभ्यास सहलीचे नियोजन केले. यामध्ये सहल सातारा-डेरवण-गणपतीपुळे-पावस-मालवण-पणजी गोवा-गोकर्ण महाबळेश्वर-जोगफॉल-धर्मस्थळ-हेळबीड-बेल्लूर-श्रवणवेळगोळ-म्हैसूर-उटी-म्हैसूर-बेंगलोर-सातारा अशी आयोजित केली होती.

वरील प्रमाणे उपक्रम यशस्वीरित्या पार पडलेले असून यासाठी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.की. शेजवळ यांचे बहुमोल मार्गदर्शन लाभले.

प्रो. एम.बी. रासकर  
भूगोल विभाग प्रमुख

## वाणिज्य व व्यवस्थापन विभाग

- १) दि. २३.८.२०१४ रोजी वाणिज्य मंडळाचे उद्घाटन, प्रमुख पाहुणे माजी विद्यार्थी, राष्ट्रपती पदक विजेते श्री. ऑंवार निरगुडकर, विशेष कार्यकारी अधिकारी हिंदुस्थान पेट्रोलिअम प्रा.लि. व मा.हरिष पाटणे, संपादक दे. पुढारी यांच्या शुभहस्ते झाले व श्री. ऑंकार निरगुडकर यांनी "मी कसा घडलो ?" या विषयी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले.
- २) दि. २७.९.२०१४ रोजी रिलायन्स लाईफ इन्शुरन्स व वाणिज्य मंडळ यांचे संयुक्त विद्यमाने "विमा क्षेत्रातील करिअर संधी व कॅम्पस इंटरव्यू" चे आयोजन करण्यात आले. प्रमुख वक्ते श्री. मिलींद भिडसगावकर यांनी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले.
- ३) दि. १३.११.२०१४ रोजी Social Awareness Activity माध्यमातून, सातारा जिल्हा रुग्णालय, सातारा यांच्या वतीने 'मोफत रक्तदाब व मधुमेह तपासणी शिबीर', सर्व प्राध्यापक व प्रशासकीय कर्मचाऱ्यांसाठी हा उपक्रम राबविण्यात आला.
- ४) दि. १६.१.२०१५ रोजी अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत Interview Technique & Personality Development या एकदिवसीय कार्यशाळेस प्रा.डॉ. भोला एस.एस. व प्रा.डॉ. भोसले एस.बी. यांनी मोलाचे मार्गदर्शन केले.
- ५) दि. २७.१.२०१५ रोजी "SWOT For Carrier Developement" आणि "Couriers in Commerce" या विषयावर प्रा.डॉ. गणेश पाटक व प्रा.विनय भालेराव JSPM, Hadapsar, Pune यांनी मार्गदर्शन केले.
- ६) Coc Income Tax, इंटरनेटद्वारे Online Banking & Marketing या वाणिज्य विषयक ज्ञान प्राप्तीसाठी हे कोर्स चालविण्यात आले.
- ७) Mobile-Banking for Financial Inclusion या विषयावरील पोस्टरचे कु. प्रियंका



शिंदे, ऋषीकेश, व आदिती करंदीकर यांचे 'आविष्कार रिसर्च फेस्टिवल' स्पर्धेत सादरीकरण केले.

८) बी.कॉम. भाग २च्या विद्यार्थ्यांच्या वर्तीने श्री. विठ्ठल गाडेकर, दत्तकृपा अॅग्री इंजि. वर्क्स, या यशस्वी उद्योजकांची मुलाखत घेण्यात आली. व वाणिज्य वार्ता संकलित करण्यात आले.

९) बी.कॉम. भाग १ व २ मधील विद्यार्थ्यांना वाणिज्य मंडळाच्या वर्तीने Question Bank वितरण करण्यात आले.

१०) व्यवस्थापन क्षेत्रातील प्रभावी व नामवंत विचारवंतांचे योगदान यावर आधारित 'व्यवस्थापन गुरु' या भित्तिपत्रकाचे उद्घाटन मा.प्राचार्य डॉ. शेजवळ सरांच्या हस्ते करण्यात आले.

वरील सर्व उपक्रमांसाठी वाणिज्य विभाग प्रमुख, प्रा.डॉ.डी. आर.भुटियानी, प्रा.जी.आर.वास्के, प्रा.एस.डी.बोरटे, प्रा.सौ.ए. व्ही. होरकेरी यांचे सहकार्य लाभले तसेच मा. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही. शेजवळ सरांचे अनमोल मार्गदर्शन लाभले.

प्रा.डॉ. दर्शन भुटियानी  
कॉमर्स विभाग प्रमुख

### Department of Zoology

Department of Zoology had organized following academic activities in this year

1. Department had organized certificate course in "Environmental awareness" Totally 17 students were admitted for this course.
2. Study tour - Study tour at Dapoli and Harne for B. Sc. III and B. Sc. II students was respectively organized during this year.
3. Miss. Bhagyashri Bade awarded Dr. A.T. Varute Memorial prize for 1st in Zoology B.Sc.III in Shivaji University, Kolhapur.

4. Two students awarded merit scholarship of Shivaji University, Kolhapur. (Bhagyashri Bade and Dongare Priyanka)

5. Dr.R.G. Patil presented paper in International Conference at Thailand (Pattaya).

6. This year research papers are published/presented as below,

Name	Papers Published		Papers Presented	
	Inter-national	Nati-onal	Inter-national	Nati-onal
Dr. R. G. Patil	04	10	01	02
Dr.V.B. Supugade	01	09	—	02

7. The Department of Zoology had organized National Conference on "Environmental Biotechnology" Totally 150 participants were present out of these eighty eight participants presented paper in the conference and proceedings of these papers were published by Prin. Abhaykumar Salunkhe, Karyadhyaksh, Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur.

Prin. R. V. Shejwal has given guidance while Dr. V. B. Supugade, Shri. R.R. Ohol, Miss. Jadhav T.A., Miss. More S.M. and Gujar M.P. had cooperated well.

Prof.Dr. R. G. Patil  
Head, Department of Zoology

### वनस्पतीशास्त्र विभाग

विभागात UGC FUNDED Biodiversity & its conservation course चालू असून या



शैक्षणिक वर्षासाठी ४० विद्यार्थी प्रवेशीत आहेत. त्याचप्रमाणे Self Funded Course Mushroom Cultivation चालू असून त्यामध्ये या शैक्षणिक वर्षासाठी ५० विद्यार्थी प्रवेशीत आहेत.

विभाग प्रमुख प्रा.पी.एस. जाधव, प्रा. मोहिते एस.ए. व प्रा.साबळे आर.आर.यांनी प्रत्येकी दोन नॅशनल कॉन्फरन्ससाठी हजर राहिले. नॅशनल जर्नलमध्ये प्रत्येकी एक पेपर प्रकाशित झाला व नॅशनल कॉन्फरन्समध्ये पेपर वाचन केले.

बी.एस्सी भाग १ची शैक्षणिक सहल यवतेश्वर, बी.एस्सी. भाग २ची सहल आंबोली, सावंतवाडी, गोवा या ठिकाणी व बी.एस्सी. भाग ३ची हरणे बंदर, दापोली येथे आयोजित केल्या.

प्रा.पी.एस. जाधव  
वनस्पतीशास्त्र विभाग प्रमुख

### रसायनशास्त्र विभाग

- १) सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षामध्ये M.Sc.II Analytical Chemistry हा नवीन वर्ग चालू करण्यात आला.
- २) कम्युनिटी कॉलेज योजने अंतर्गत Diploma in Castiron and Foundry Technology हा नवीन कोर्स चालू करण्यात आला.
- ३) प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचा शोधनिबंध पढाया थायलंड येथील International Conference मध्ये सादर करण्यात आला.
- ४) प्रा.डॉ.सी.पी.माने यांना P.G., M.Phil व Ph.D. गाइड म्हणून शिवाजी विद्यापीठाची मान्यता मिळाली.
- ५) प्रा.डॉ.ए.एम.नलवडे व प्रा.सौ.आर.ए.नलवडे यांचा प्रत्येकी एक Research Paper "International Journal" मध्ये प्रकाशित झाला.
- ६) विभागातर्फे "Guidelines about NET & SET Exams" या विषयावर अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाळेचे आयोजन केले.

- ७) संस्थेच्या सेक्रेटरी प्राचार्या सौ.शुभांगी गावडे यांचे हस्ते Nano-Science विषयावरील लेखांच्या भित्तिपत्रिकेचे उद्घाटन केले.

प्रा.डॉ. सी.पी. माने  
रसायनशास्त्र विभाग

### Department of Physics

Department of Physics arranged Wall Paper Presentation on different articles in Physics in the Month of August 2014 and Feb. 2015. Seminars of Students from B.Sc. I & II were arranged in Ist & IInd term. Also two project presentations were made by Miss Ashlesha A. Rasal and Miss Rutuja Vinod Jagdale namely Laser System and Ultrasonic Waves respectively. Both these students participated in 'Avishkar Competition' (Satara Dist.) held at Dahiwadi College, Dahiwadi. Home Assignment, Surprise test were taken for both classes.

Department carries an educational tour every year. This year the tour was arranged to Mysore, Bangalor & Ooty from 9.2.2015 to 14.2.2015. In this tour students visited Palace, Vrindavan Garden in Mysore, Telescope to view Ooty city from Dokddabetat, Ooty hill station & Tea Factory. In Bangalore students visited Indian Space Research Organisation (ISRO) and Vishweshwarayya Technical Museum. Dr. A.E. Korade, Dr. N.L. Tarwar & Shri A.N. Kadam were along with 17 students from B.Sc. II class.

Prof.Dr. A.E. Korade  
Head, Dept. of Physics



वैयक्तिक वार्षिक अहवाल सन २०१४-२०१५

प्रा.एस.एस.मेस्त्री

- १) दि.६ ऑगस्ट, २०१४ रोजी राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापूर येथे वी.ए.भाग दोन-मानसशास्त्र-सेमि.III या विषयावरील सुधारीत अभ्यासक्रमाबाबत कार्यशाळेस उपस्थिती.
- २) दि.६ सप्टेंबर, २०१४ रोजी श्रीमती कस्तुरबाई बालचंद महाविद्यालय, सांगली येथे वी.ए.भाग दोन-मानसशास्त्र सेमि.IV सुधारीत अभ्यासक्रमाबाबत कार्यशाळेमध्ये विषयतज्ञ म्हणून सहभाग.
- ३) ईश्वरीय विश्व विद्यालय, सातारा येथे दि.७-९-२०१४ रोजी मूल्य व आध्यात्मिक शिक्षण या विषयावर व्याख्यान.
- ४) जिल्हाळा सेवाभावी संस्था, सातारा यांचेमार्फत चालविल्या जाणाऱ्या वृध्दाश्रमास दि.०१ ऑक्टोबर, २०१४ 'ज्येष्ठ नागरिक दिनानिमित्त' कार्यक्रमाचे आयोजन.
- ५) १० ऑक्टोबर, २०१४ 'जागतिक मानसिक आरोग्य दिनानिमित्त जिल्हा रुग्णालय, सातारा व मानसशास्त्र विभाग यांचेमार्फत विद्यार्थ्यांसाठी कार्यक्रमाचे आयोजन.

**DR.V.B.SUPUGADE**

Department of Zoology

**Research Papers Published-**

1. Toxicity of Clerodendron inerme with reference to the biochemical contents of gills of snail, Viviparous bengalensis (2014) Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, 33-36.

2. Seasonal variation in the phytoplankton of Mayani freshwater reservoir from/khanapur Tahasil of Sangli District, M.S.India. (2014) Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, pp166-169.
3. Taxonomic observations of fish tapeworm Polypocephalus balkuae N.sps. from marine fish Trygon sephen at Ratnagiri District (M.S.) India. (2014) Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, pp215-220.
4. A new species of the genus Circummoncobothrium (Shinde, 1968) (Cestoda: Pseudo-phyllidea carus, 1863) from a fresh water fish, Satara, (M.S.) India. (2014) Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, pp233-238.
5. On a new tapeworm of the genus Phoreiobothrium (Linton, 1889) from a marine fish, Ratangiri district, (M.S.)India (2014) Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, pp239-242.
6. Taxonomic evaluation of fish tapeworm Tylocephalum salunki N.sps. from marine fish trygon



- sephen at Ratnagiri District (M.S.)India (2014)Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, pp242-248.
7. A new Onchobothridaen Tapeworm, *Uncibilocularis housaii* N.Sp. from marine fish, *Dasyatis Walga* at Ratnagiri District (M.S.), India (2014) Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, pp 249-254.
  8. Study of oxygen consumption in snail *Viviparous bengalensis* after exposure to the phytotoxin from *Azadirchta indica* (2014) Proceedings of National Conference in "Environmental Biotechnology, ISBN 978-81-8498-4126, pp312-315.
  9. Some Haematological parameters of *Columba elphinstonii* infected with helminth parasites in Satara District.(M.S.,) India. (2014) International Journal of Flora and Fauna.
- Confarence, Seminar, Workshops attended-**
- 1) Attended one day workshop on Revised Syllabi of Zoology B.Sc.Part-II 31<sup>st</sup> July 2014 sponsored by Shivaji University Kolhapur organized by S.G..M. College Karad P.G.Department of Zoology.
  - 2) Attended one day workshop on Revised syllabi of Zoology B.Sc.Part II 13<sup>th</sup> August 2014 sponsored by Shivaji University Kolhapur organised by Department of Zoology K.N.P.College Walwa.
  - 3) Attended state level workshop on Animal Taxonomy on 26<sup>th</sup> August 2014 sponsored by U.G.C. organised by Department of Zoology Smt.Kasturbai Walchand College Sangli.
  - 4) Attended National Conference on Life Sciences. An outlook and challenges on 12<sup>th</sup> and 13<sup>th</sup> Sept.2014 sponsored by U.G.C. organised by Dahiwadi College Dahiwadi. Department of Botany and Zoology.
  - 5) Attended and organized National Conference on Environmental Biotechnology on 29 & 30 December 2014 sponsored by U.G.C. organized by Department of Zoology L.B.S. College, Satara.
  - 6) Attended on day workshop on जलयुक्त शिकार अभियान अंतर्गत कार्यशाळा "दुष्काळ निवारणात विद्यार्थ्यांचा सहभाग" आयोजक शिवाजी विद्यापीठ व जिल्हाधिकारी कार्यालय सातारा. दिनांक १८-२-२०१५
  - 7) Worked as Examinar Bioresonance Activity an intercollegiate Competition on Thursday 12th February 2015. It is complition of poster, model and paper presentation at University level organised by Department of Biotechnology Y.C.I. of Science Satara.



**8) Worked as Examinar-**

इन्सप्यार अँवार्डचे प्रदर्शन उपकरणाचे मूल्यमापन १२ ते १४ ऑगस्ट, २०१४ रोजी श्री रामकृष्ण विद्यामंदिर व ज्युनिअर कॉलेज, नागठाणे जि.सातारा आयोजन शिक्षण अधिकारी माध्यमिक जिल्हा परिषद सातारा.

**प्रा.प्रतिभा चिकमट**

**इतिहास विभाग**

- १) ८ ऑगस्ट डॉ.बापूजी साळुंखे पुण्यतिथीनिमित्त आयोजित कार्यक्रमात शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांच्या जीवनचरित्राचा ऐतिहासिक दृष्टीने आढावा या विषयावर व्याख्यान.
- २) ज्युनिअर विभागाच्या प्राध्यापक प्रबोधनीच्या उद्घाटन समारंभात प्रमुख पाहुणे व ऐतिहासिक सातारा या विषयावर व्याख्यान.
- ३) २ ऑक्टोबर गांधी जयंतीनिमित्त स्वच्छता अभियानांतर्गत कार्यक्रमात मा.गांधी जीवनचरित्र या विषयावर व्याख्यान.
- ४) गरवारे महाविद्यालय, पुणे येथे आंतरराष्ट्रीय इतिहास परिषदेस उपस्थिती.
- ५) एस.जी.एम.कॉलेज, कराड येथे राष्ट्रीय इतिहास परिषदेत साताराचे प्रतिस्कार व भिलारे गुरुजींचे योगदान या विषयावर शोधनिबंध सादर.
- ६) लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयात हिन्दी विभागातर्फे राष्ट्रीय चर्चासत्रात सादर केलेला महात्मा बसवेश्वर व त्यांचे कार्य हा शोधनिबंध प्रकाशीत.
- ७) लायन्स क्लब ऑफ सातारा युनायटेड सातारा सदस्य व या क्लबतर्फे विविध सामाजिक उपक्रमात सहभाग.

**प्रा.दीपक जाधव**

**इतिहास विभाग**

- १) गरवारे महाविद्यालय, पुणे येथील आंतरराष्ट्रीय इतिहास परिषदेत सहभाग.
- २) 'जायंटस ग्रुप' साताराचे सदस्य व अनेक सामाजिक, शैक्षणिक उपक्रमात सहभाग.

- ३) शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे वक्तृत्व, निबंध, चित्रकला व टॅलेन्ट सर्च राज्यस्तरीय स्पर्धा समन्वयक.
- ४) शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर व एल.बी.एस.कॉलेज सातारा यांच्या संयुक्त विद्यमाने सातारा जिल्हातील प्राचार्य, परीक्षा विभाग प्रमुख, कार्यालयीन कर्मचारी यांच्या एक दिवसीय कार्यशाळेचे समन्वयक.

**प्रा.एच.व्ही.चामे**

**समाजशास्त्र विभागप्रमुख**

- १) दि.२०-२१ फेब्रुवारी, २०१५ रोजी झालेल्या राज्यस्तरीय चर्चासत्रात स्त्री-भ्रूण हत्या या विषयावर पेपर सादर केला.
- २) एस.जी.एम.कॉलेज, कराड येथे झालेल्या राष्ट्रीय चर्चासत्रात महिला सक्षमीकरणातील अडथळे या विषयावर पेपर सादर केला.

**PROF.DR.A.E.KORADE**

**Department of Physics**

- 1) Attended, participated and presented a paper in National Conference on materials for future technology, at Rajaram College, Kolhapur on 26<sup>th</sup> and 27<sup>th</sup> September 2014.
- 2) Attended UGC awareness workshop of UGC DAE consortium for Scientific research at Rajaram College, Kolhapur from 20<sup>th</sup> and 21<sup>st</sup> February 2015.
- 3) Worked as an Expert Committee member, LIC Committee member and enquiry committee member appointed by Shivaji University Kolhapur.
- 4) Inaugusated "Science Association" at Shrimant Babasaheb Deshmukh Mahavidyalaya, Atpadi Dist-Sangli and delivered a talk on "Dr.C.V.Raman and his work on 5<sup>th</sup> December 2014.









## अनुक्रमणिका

### गद्य विभाग

१) शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांचे बालपण व शिक्षण	कु.मुस्कान शेख	११ वी वाणिज्य	११५
२) संस्थामाता सुशीलादेवी साळुंखे	कु.प्रतिक्षा शिंदे	११ वी वाणिज्य	११७
३) मुलगी म्हणून मला काय वाटते ?	कु.सेजल पुरोहित	११ वी विज्ञान	११९
४) हे संतानो पुन्हा जन्माला या !	कु.प्रियांका कारंडे	११ वी विज्ञान	१२१
५) प्रार्थनेचे फळ	कु.तन्वी खालडकर	११ वी विज्ञान	१२४
६) शिक्षण व विद्यार्थी	कु.मृणमयी पोळ	११ वी विज्ञान	१२६

### पद्य विभाग

१) आई	निलोफर तांबोळी	११ वी कला	१२०
२) आपला सातारा	निलोफर तांबोळी	११ वी कला	१२३
३) आयुष्य	कु.ऋतुजा पवार	११ वी कला	१२५
४) (आई) मला जगात यायचय.....	कु.ऋतुजा पवार	११ वी कला	१२५
५) मला पुन्हा एकदा तरी	कु.तृप्ती त्रिंबके	११ वी विज्ञान	१२८
६) बाप	कु.अमृता थिटे	११ वी विज्ञान	१२८
७) आई	कु.अमृता थिटे	११ वी विज्ञान	१२९
८) नोकरीचा गाव	कु.दिशा शहा	११ वी कला	१२९
९) कोणासाठी - कोणीतरी	कु.प्रतिक्षा शिंदे	११ वी वाणिज्य	१३०
१०) आई	कु.ऋतिका कांबळे	११ वी वाणिज्य	१३०





## शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साकुंखे यांचे बालपण व शिक्षण

कु.मुस्कान शेख, ११ वी बाणिज्य

भारत म्हणजे नरत्नांची खाण, तपस्व्याची तपोभूमी, कर्मयोग्यांची कर्मभूमी, पण अगदी थोडीच माणसे तपस्वी, कर्मयोगी अथवा नरत्ने होतात. कार्यक्षेत्रात शैक्षणिक क्षेत्र हे अग्रगण्य आहे. शिक्षणाच्या भक्कम आणि मजबूत पायावरच मानवाच्या यशाचे भव्य मंदिर उभे राहते. आधुनिक काळात शिक्षणाच्या ज्ञानयज्ञात महाराष्ट्रातील अनेक शिक्षणप्रेमी व समाजसुधारक धुरंधरांनी आपले सर्वस्व अर्पण केले आहे. नरत्नामध्ये श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेचे संस्थापक शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साकुंखे.

सातारा जिल्ह्यातील पाटण तालुक्यातील 'रामापूर' गावी दि.९ जून १९१९ या दिवशी बापूजींचा जन्म झाला. त्यामुळे १९१९ हे वर्षच संस्मरणीय आहे. गोविंदराव ज्ञानोजीराव साकुंखे हे त्यांचे मूळ नाव. परंतु, महात्मा गांधींच्या साथी राहणी व उच्च विचारसरणी या ध्येयाचे त्यांचे आचरण असल्याने ते सर्वांचे 'बापूजी' झाले. बापूजींचे बालपण अत्यंत खडतर परिश्रमात त्यांनी आपले शिक्षण संपादन केले. संस्कृत व मराठी हे त्यांचे आवडते विषय होते. त्यांनी मॅट्रिकच्या परीक्षेमध्ये 'धामणस्कर स्कॉलरशिप' पटकावली होती. त्यांचे प्राथमिक शिक्षण इस्लामपूरला झाले.

शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साकुंखे कोयनेच्या काठावरील सामान्य शेतकऱ्यांच्या रामापूर खेड्यात जन्मलेले. स्वातंत्र्यपूर्व काळ म्हणजे शेतकऱ्यांच्या वेढविगारीचा आणि शोषणाचा काळ. आजही काही मोठा फरक आहे असे नाही. अशा परिस्थितीतही बापूजींच्या उपजत गुणांनी उचल खाल्ली आणि त्यांनी इस्लामपूरची वाट पकडली. इस्लामपूरला डॉ.बापूजी साकुंखे शिकले. ते वार लावून जेवत असत. या परिस्थितीनेच त्यांना नवे जीवनविषयक तत्त्वज्ञान दिले.

इस्लामपूरच्या रामाच्या देवळातील समईसमोर बसून अध्यायन करीत असताना आपले जीवन राष्ट्रासाठी समर्पण करण्याचा संकल्प त्यांनी सोडला. माध्यमिक शिक्षण पूर्ण होताच कोल्हापूरच्या प्रिन्स शिवाजी बोर्डिंगने त्यांना आधार दिला. या टिकाणीच डॉ.अप्पासाहेब पवारांनी बापूजींच्या सहवासात राहून त्यांच्या स्वभावातील कणव,



साधेपणा व संस्कृत भाषेवरील त्यांचा असामान्य अधिकार, दुसरीकडे गीतेचा सखोल अभ्यास, गांधीवादी तत्त्वज्ञानाचा त्यांच्यावर झालेले संस्कार लक्षात घेऊन शासकीय नोकरीच्या चौकटीत मावणारे हे व्यक्तिमत्त्व नाही हे ओळखले व त्या दृष्टीनेच त्यांनी बापूजींच्या जडणघडणीच्या दृष्टीने वेगळे संस्कार केले. दिलेली शिष्यवृत्ती निम्मी परत करणारा हा पहिलाच शिष्य त्यांना गवसला.

“वीर प्रसवा भास्तभूमी । नवस्नाचा झरा ॥  
या भूमीवर चालत आली । बलिदानाची परंपरा ॥”

देवपण किंवा मोटेपण प्राप्त होते ते संपत्तीने अथवा वयाने नाही. प्रत्येक मनुष्याजवळ दैवीगुण असतो. त्यास जागे करणाऱ्यास देवपण प्राप्त होते. ‘मुलाचे पाय पाळण्यात दिसतात’ तद्वतच बापूजींचे वेगळेपण बालपणातच दिसू लागले. मोठ्या मानाच्या नोकऱ्या मिळत असूनही, बापूजींनी मानव समाजाला प्रकाशमय करण्यासाठी शिक्षकाची नोकरी पत्करली होती. बापूजींचा पिंड विधायक कार्यकर्त्याचा होता, हाडाच्या शिक्षकाचा होता.

साळुंखे कुटुंब हे साधारण परिस्थितीचे होते. वयाच्या सहाव्या वर्षी बापूजींना वडिलांनी शाळेत पाठविले. त्यांचे शाळेवर अत्यंत प्रेम होते. ते शाळेत झालेला स्वाध्याय व अभ्यास न चुकता करत होते. बापूजी सात्त्विक व श्रद्धाढू वृत्तीचे होते. बालपणी त्यांच्यावर चांगले संस्कार होते. सुसंस्कारी मनुष्यच ईश्वराचा अविष्कार आहे, हे खरे आहे. याप्रमाणे बापूजींची वर्तवणूक होती. म्हणूनच लोक बापूजींना देवतुल्य मानत. अशा प्रकारे बालपणीचा गोविंदा मोटेपणी शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे म्हणून नावारूपास आले.

डॉक्टर हा रोम्याला औषध देऊन निरोगी बनवतो, तसेच बापूजींनी अज्ञानरूपी रोग घालवण्यासाठी ज्ञानरूपी वृक्षाचे औषध पाजून सुसंस्कारीत असे अनेक विद्यार्थी घडवले.

“हाती घेऊनी शैक्षणिक क्रांतीची मशाल  
ज्ञान प्रकाश किरणांनी उजळला,

महाराष्ट्राचा आसमंत लालेलाल झाला.”

शिक्षणाचे कार्य पूर्ण झाल्याशिवाय भारतीय लोकशाही सबळ आणि प्रबळ होणार नाही. जगात विज्ञान जगात कितीही प्रगत झाले असले तरी त्यांचे मूळ ही विद्या आहे. भारतीय विज्ञान व तांत्रिक शिक्षण विद्येशिवाय पुढे जाऊ शकणार नाही, हे बापूजींनी पक्के लक्षात ठेवून व्यापक प्रमाणात शिक्षण प्रसार केला आहे. बापूजी यांनी इचलकरंजी, सातारा, कराड याठिकाणी विद्यार्थिनींची स्वतंत्र अध्ययन-अध्यापनाची सोय केली. धोर समाजसुधाकांचे कार्य पुढे चालू ठेवले आहे. या सत्पुरुषाला ‘शिक्षणमहर्षी’ म्हणतात, हे यथार्थ आहे.

बापूजींचे दुसरे वैशिष्ट्य म्हणजे “ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षण प्रसार” हे ध्येय या राष्ट्राला प्रेरक व पोषक असे आहे. असे हे विद्याधुरंधर, धैर्यशाली पुरुष मनःशांतीसाठी चिंतन करणारे, सर्वांचे हित इच्छिणारे, आदिवासी व बहुजन समाजासाठी ज्ञानदीप सतत प्रज्वलित ठेवणारे व ह्यासाठी आपला देह वेचणारे हेच खरेखुरे ‘शिक्षणमहर्षी’ आहेत.

All Power is within you; you can do anything and everything. Believe in that; do not believe that you are weak; do not believe that you are half-crazy, lunatics, as most of us believe now-a-days. You can do anything and everything without even the guidance of anyone.

All power is there; stand up and express the divinity within you.

बापूजींचे चरित्र पाहता असे दिसते की, असे व्यक्तिमत्त्व पुन्हा होणं नाही, म्हणूनच म्हणावेसे वाटते की,

“झाले बहु, होतील बहु, परंतु या समहा !”





## संस्थामाता सुशीलादेवी साळुंखे

कु.प्रतिक्षा शिंदे, ११ वी वाणिज्य

ऊन झेलून, कष्ट सोसून, दिली सावली बापूजींना.  
कृतज्ञेचा नमस्कार हा, पुण्यवंत सुशीलादेवींना !'

या भूमीने जसे प्रभू रामचंद्र, शिवछत्रपती निर्माण केले तसेच अज्ञानाच्या अंधाराला पळवून समाजात समता, ज्ञान प्रकाश देण्यासाठी ज्या दीपज्योतीने जन्म घेतला. त्या बापूजींना व त्यांच्या धर्मपत्नी संस्थामाता सुशीलादेवी साळुंखे यांच्या पवित्र स्मृतीस मी प्रथम शतशः वंदन करते.

सौ.सुशीलादेवींचा जन्म ४ सप्टेंबर १९२७ रोजी झाला. संस्थामाता म्हणजे रांधणारी, सांधणारी, नातीगोती बांधणारी धन्याला प्रेरणा देणारी, अडचणी संकटात डोळ्यातील पाणी दडविणारी, वसतिगृहातील मुलांचे आयुष्य घडविणारी, त्यांचे संगोपन करून शिक्षण देणारी कुटुंबवत्सलता शिकविणारी, जीवंत झराच होती ती माऊली. सुसंस्काराने ओतप्रोत भरलेली शिंदेरी म्हणजे सुशीलादेवी. अबोलवृत्ती अन शांतीदेवता, समंजस, सोशिक अशी मंदपणे तेवत राहणारी संस्थेच्या ज्ञानमंदिरातील समई गीतेचा सार अंगीकारलेली गीताई म्हणजे संस्थामाऊली वरचा बळ असो की आतली वेदनेची कळ. त्यांच्याकडूनच घ्यावं सोसण्याचं बळ. एवढी सुशील माऊली, संस्था मांगल्याची कामना करीत संस्थेच्या मंदिरात सतत तेवत राहणारा नंदादीप म्हणजे संस्था माऊली.

माऊली तुम्ही किती मोठे - किती गावे तुमचे गुणगान तुम्हापुढे जग सारे लहान - जग सारे लहान.

म्हणतात ना माऊली म्हणजे मंदिराचा उंच कळस. अंगणातील पवित्र तुळस. भजनात गुणगुणावी अशी संतवाणी व बाळवंटात प्यावं अस धंडगार पाणी. अगदी अशा संस्थामाता ज्यांच्या बीजप्रेरणेच्या प्रगतीतील पाऊलखुणा मनी टसल्या व त्यांच्या आपल्यांच्या आयुष्याच्या कणाकणात प्रेस्क टसल्या व त्यांच्या लेकीबाळांना वैवाहिक जीवनात कसे वागावे, पतीशी एकनिष्ठ असावे, सांगितले. संस्थेतील अनेक कुटुंबे जोडली व शिक्षणावरची श्रद्धा तिळमात्र ढळू दिली नाही. हसतमुख जगण्याचे कौशल्य अंगिकारले. जुन्या काळातील स्त्री म्हणून आपली सामाजिक जाणीव फारच प्रगल्भ होती. आपण सर्वसामान्य समाजाचं भूषण होता. अतिशय निरामय जीवन होत



आपलं. जाईन तिथं कष्ट करीन व सन्मानानेच जीवन जगेन हा आपला स्थायीभाव होता. दुःखावर मात करत हसतमुख राहण्याची कला आपणाकडे होती. तुमच्याबद्दल म्हणावे वाटते तुमच्या टायी होती शिक्षणाची दूरदृष्टी । केलं सबळ सर्वांना अन बहरली संस्थारूपी सृष्टी । धन थोडं असलं तरी मन सुपाएवढं असलं पाहिजे, असं मानणाऱ्या माता तुम्हांस विचारावे वाटते- काहीही नसता हातात कसे पडू दिले नाही कुणास काही उणे ?

सधन कुटूंबातून येऊन बापूजींच्या देशभक्तीच्या कार्यात सुख दुःखाच्या चढउतारात, गरिबीत जीवन जगणाऱ्या, काटकसरीने संसार करून, अनेकांच्या जीवनात सुगंध पसरविणाऱ्या संस्थामाता म्हणत संकटाचे डोंगर कोसळताना, डोक्यावर हिंमतीचा कळस चढवावा, दुःखाचे वादळ सुटले असताना संयमाचा दीप पाजळावा, अशा संयमी, सुसंस्कृत माऊली तुम्ही संस्थेच्या प्रांगणात दरवळणारा कस्तुरी गंध ठरलात तुमच्याबद्दल म्हणावे वाटते - God could not be everywhere & therefore he made sansthamother.

एक कर्तबगार, खंबीर मनाची, शुद्ध चारित्र्याची, दूरदृष्टीची, सर्वांना बरोबर घेऊन पुढे जाणारी, आधुनिक विचारांची स्त्री म्हणजेच संस्थामाता !

सुशीलादेवी साळुंखे म्हणजे संस्थेचा गौरवशाली भूतकाळ व भविष्यकाळ यांच्यामधील दुवाच होता. एक कणखर, खंबीर, तेजस्वी व्यक्तिमत्त्व, शैक्षणिक अप्रत्यक्षपणे झटलेले जोडलेले व्यक्तिमत्त्व. लखलखणारे तेज, कामाची ऊर्जा, गरजू व दीन-दलितानंवर असलेली माया, गुरुजन कार्यकर्त्यांवर असलेले प्रेम, निष्ठा, आदरातिथ्यांचा कळस, अध्यात्माचे भांडार, परमेश्वराची अगाध भक्ती, मुलांची चिंता - प्रेम, असंख्य संकटांना सामोरे जाण्याचे साहस, मातृत्व व दातृत्व यांचे श्रद्धास्थान व प्रेरणास्थान अशा साऱ्यांचा अज्ञातशत्रू म्हणजेच -

संस्थामाता सुशीलादेवी साळुंखे होय ! माणूसकीचा शुळशुळता झरा म्हणजे सुशीलादेवी ! भूमिगत चळवळीच्या निधीसाठी सुशीलादेवींनी श्रावण महिन्यातील सत्यनारायणाच्या पूजेसाठी जमविलेले सर्व पैसे बापूजींना सत्कार्यासाठी दिले.

“हृदयातील बंधने जोडण्याचा एक ध्यास असतो, चित्रातला न दिसणारा हृदयस्पर्शी भाव असतो !!”

कराडच्या कृष्णा-कोयना प्रितीसंगमावर १९ ऑक्टोबर १९५४ रोजी बापूजींनी श्री.स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेची स्थापना केली. त्यावेळी सुशीलादेवींना आपल्या पतीने घेतलेल्या निर्णयाचा व कार्याचा खूप अभिमान वाटला. संसाराची सर्व जबाबदारी सुशीलादेवींनी उचलली. आपल्या सहाही मुलांवर चांगले संस्कार करून, त्यांना जीवनात यशस्वी होण्यासाठी मार्गदर्शन केले.

‘जगण म्हणजे नुसतं जगणं नसतचं, तर त्यानं दुसऱ्यांनाही जगवणं असतं.’

शाळेतील मुलांचे संगोपन चांगले व्हावे, यासाठी अथक परिश्रम घेतले. वाणीचे माधुर्य, चित्ताचे गांभीर्य आणि वृत्तीचे औदार्य लाभलेले यांचे व्यक्तिमत्त्व म्हणूनच त्या कुतार्थ जीवन जगल्या. बापूजींच्या निधनानंतर सर्व संस्थेला एकजुटीने टेवले. त्यांच्या वात्सल्याच्या नाजूक धाग्याने सर्व संस्था एकत्र बांधली गेली. सावलीसारख्या सर्वांच्या पाठीशी उभ्या राहणाऱ्या संस्थामाता सुशीलादेवी यांची २२ ऑक्टोबर २०१३ रोजी प्राणज्योत मालवली.

अशा या संस्थामातेला माझे कोटी कोटी प्रणाम !! शेवटी एवढेच म्हणावेसे वाटते -

‘दुःखितांचे ममत्व, समर्थांचे तत्त्व, गीतेचा अर्थ दीनासाठी पार्थ जीवनाचे तंत्र, ईश्वराचा मंत्र ज्ञानाचा मकरंद, आनंदाचा कंद मनी बसो सुशीलादेवींच्या कार्याचा छंद.





## मुलगी म्हणून मला काय वाटते ?

कु.सेजल पुरोहित, ११ वी विज्ञान

देशाची राजधानी दिल्लीत चालत्या बसमध्ये एका तरुणीवर झालेल्या सामुहिक बलात्काराने सऱ्या देशातील वातावरण ढवळून निघाले. ही घटना म्हणजे मानवतेला लागलेला कलंक आहे. ज्या गोष्टीची कल्पनाही केली जाऊ शकत नाही अशी ही हृदय पिळवटून टाकणारी घटना आहे. या घटनेने अनेक प्रश्न निर्माण झाले आहेत. पोलिस प्रशासन आणि सरकार यांच्याकडे सर्वसामान्य जनता उत्तर मागत आहे. रायसिना हिल्सपासून राजघाटापर्यंत, कोलकतापासून कोईमतूर आणि श्रीनगरपासून चेन्नईपर्यंत देशभरात लोकांनी सत्यावर उतरून निदर्शने केली. इतकी मोठी असंघटित गर्दी सत्यावर आक्रोश करत असताना मी पहिल्यांदाच पाहिला. संतप्त झालेला जमाव पीडित तरुणीसाठी प्रार्थना करत होता आणि पोलिसांना त्यांच्या अपयशाचे कारणही विचारत होता. परंतू अखेरीस त्या तरुणीची १३ दिवसांची झुंज अपयशी ठरली आणि शनिवार २९ डिसेंबर २०१२ रोजी पहाटे अडीचच्या सुमारास तिचे निधन झाले.

१३ दिवस रात्र-दिवस जागून आंदोलन करणारा आपला देश सुन्न झाला. मात्र माणसाचे कातडे पांघरून समाजात उजळ माथ्याने हिंडणाऱ्या बखवखलेल्या लांडग्यांना आळा घालण्यासाठी कटोर कायद्याची व त्याच्या योग्य प्रकाराच्या अंमलबजावणीची नितांत गरज आहे, हे या निमित्ताने प्रकर्षाने दिसून आले. परंतू, या घटनेनंतरही देशभरात बलात्काराच्या अनेक घटना घडून आल्या. तरीही अद्याप पीडितांना न्याय मिळत नाही आणि त्यावर म्हणजे त्यांची केस दाखल करून घेतली जात नाही.

भारतीय समाज पुरुषसत्ताक आहे. अशा समाजामध्ये पुरुषांना जास्त हक्क प्राप्त होतात हे स्पष्ट होते. त्यांना वाटले तर ते त्याचा दुरुपयोगही करू शकतात. असे नाही की त्यांनी त्याचा सदुपयोग केलेलाच नाही. पण महिला वर्गाला अडचणीत आणले जाईल. अशा पद्धतीने त्यांचे काम राहिले आहे. त्याचा परिणाम म्हणून महिला वर्गाला अडचणीत आणले जाईल म्हणून महिला उपेक्षित, पीडित राहिल्या. समाजामध्ये घरगुती हिंसाचार, यौवन शोषण आणि बलात्कारापर्यंत अनेक प्रकाराने



पुरुषांचे अत्याचार विस्फोटक स्थितीपर्यंत जाऊन पोचलेले आहेत.

स्त्रीभूषण हत्येचे संकट आधीच देशभरात धैमान घालत आहे. मग या बलात्काराच्या घटनांनी मुलीला जन्माला घालायचे का ? हा विचार समस्त नागरिकांच्या मनात डोकावत असणारच. आम्ही मुली किती सुरक्षित आहोत ? याचे उत्तर कोण देणार. स्त्रियांवरच्या रोडरोमियांनी मुलींकडे पाहून शिट्टी मारणे, कॉर्मिट्स करणे यामुळे मानसिक संतुलन बिघडून अनेक मुलींनी आत्महत्या केल्याचेही आपण वाचले आहे. अशा घटना घरी सांगण्यास मुली घाबरतात. कारण आपल्या समाजात ह्या घटनांना दोष मुलींनाच देण्यात येतो. मुलींच्या पोशाखामुळे अशा घटना घडतात असेही म्हटले जाते. परंतु हे कितपत खरे यावर आपल्या सर्वांना विचार करायला हवा.

‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, स्मन्ते तग देवता’ असे सांगणारी आपली संस्कृती आहे. स्त्री ही अबला नसून ती

सबला आहे, असे सांगत स्त्रीला शक्तीदेवतेच्या रूपात दर्शवले जाते. सतत तेजोभंग करण्याचा प्रयत्न करणाऱ्या रावणासमोर विद्युल्लतेप्रमाणे कडाडणाऱ्या तेजस्वी सीतेची आणि भर सभेत आपली विटंबना करण्याचा प्रयत्न करणाऱ्या दुर्योधन, दुःशासनादींच्या स्वतःने आपली वेणी बांधेन अशी प्रतिज्ञा करणाऱ्या द्रौपदीची ही याज्ञसेनी भूमी आहे. एखाद्या स्त्रीकडे केवळ ‘उपभोगाची वस्तू’ म्हणून पाहणारा माणूस भारतीय काय जगातल्या कोणत्याच संस्कृतीचा हिस्सा बनू शकत नाही. शेवटी स्त्रीभूषण हत्या रोखण्यासाठी मी एवढेच आवाहन करेन,

‘जगू द्या ना तिला, शिक्षणाचे आकाश द्या ना तिला,  
मग बघा तिची गरूडझेप, तिचे यश तुमचेच आहे.  
ती तुमची काटी बनेल, प्रेमाची पखरण करेल.  
तिला ‘जगू दिले’ याचा आनंदही न होण्याइतकी  
नक्कीच दगडी नाही झालीयेत मनं.....’

आई



आई, काय वर्णन करू गं तुझे ?  
अपुणे पडतात शब्द माझे !  
नऊ महिने, नऊ दिवस  
नऊ तास, नऊ मिनिटे  
अन्नात न खाता मीठ  
तरी वाढवलेस मला नीट.  
आई, काय वर्णन करू गं तुझे ?  
अपुणे पडतात शब्द माझे !!  
हाताचा करून पाळणा  
पदराचा करून झोळणा  
माझ्याशिवाय तुझ्या मनाला  
एक क्षण सुद्धा चैन पडेना.  
आई, काय वर्णन करू गं तुझे ?  
अपुणे पडतात शब्द माझे !!!

शाळेत खेळताना लागला  
टेबल माझ्या पायाला  
तेव्हा अश्रूंच्या धारा लागल्या  
सतत तुझ्या डोळ्याला.  
आई, काय करू ग वर्णन तुझे ?  
अपुणे पडतात शब्द माझे !!!  
सतत तुझ्या कृपेचे छत्र असते  
संकटांना कधी घाबरायचे नसते.  
असं तू नेहमी सांगत असते  
म्हणून माझे पाऊल पुढेच पडत असते.  
आई, काय वर्णन करू गं तुझे ?  
अपुणे पडतात शब्द माझे !!!

निलोफर तांबोळी

११ वी कला





## हे संतांनो पुन्हा जन्माला या !

कु.प्रियांका कारंडे, ११ वी विज्ञान

एकदा असाच एक माणूस काशीवरून पाणी घेऊन येत होता. येताना त्याला एक गाढव पाण्यावाचून तडफडताना दिसले. त्याने क्षणाचाही विचार न करता ते काशीवरून आणलेले पाणी गाढवाच्या मुखात दिले. अहो, परमेश्वरामध्ये त्या प्राण्याचा अंश पाहणारा आणि त्याला होणाऱ्या वेदनांशी एकरूप झालेला तो माणूस म्हणजे, श्री संत एकनाथ महाराज.

आज आम्हांला माणसातला देव दिसत नाही, तो प्राण्यांमधला केव्हा पाहणार ? आणि हेच शिकवण्यासाठी आजच्या समाजाला गरज आहे ती संताची आणि मग नकळत ओटातून शब्द बाहेर पडतात,

हे संतांनो पुन्हा जन्माला या ।

हे संतांनो पुन्हा जन्माला या,

पृथ्वीवरच्या माणसाला माणूस

घडवायला या ।

कुत्र्यामध्येही देव असतो,

हे दाखवून द्यायला या !

अपार निष्ठेच्या जोरावरती दगडातील देवही,

नैवेद्य खातात हे पटवून द्यायला या ।

अखंड निष्काम भजनातून,

जन घडवायला या ।

स्वच्छतेचा वसा घेऊन

संपन्न भारत साकारायला या !

खरबच संतांनो पुन्हा जन्माला या,

पृथ्वीवरच्या माणसाला माणूस घडवायला या !

आज संतांनी पुन्हा जन्माला याव असं का वाटत ? काय कारण त्याला ? खरं सांगायला गेल तर आज माणसाकडे माणूसकीच राहिली नाही. मानवता हा धर्मच कोटे दिसून येत नाही. आज कोणतेही वर्तमानपत्र उघडले किंवा टी.व्ही.वरचा चॅनेल



लावून बातम्या पाहिल्या तर सगळीकडे हिंसाचार, गुन्हेगारी, मारामाऱ्या, खून हे दिसून येते, हे का घडते ? कशामुळे घडते ?

आपली भारतीय संस्कृती ही महाराष्ट्राच्या संत परंपरेवर आणि मानवतेवर अवलंबून आहे. आपल्या महाराष्ट्रात अनेक संत होऊन गेले, म्हणतात ना,

“ज्ञानदेवे रचिला पाया,  
तुका झालासे कळस.”

अहो, ज्ञानेश्वरांनी सोळाव्या वर्षी ज्ञानेश्वरी लिहिली. कसे जगावे याचे तत्त्वज्ञान सांगितले. मुक्ताबाईने चांगदेवाचा गर्वहरण करून योग्य तो मार्ग दाखविला. वारकरी समाजातील सर्व संतांनी समाजाला समतेचा संदेश दिला. संत तुकाराम महाराजांनी व्यवहारी कसे वागावे ते शिकवले. नामदेवांनी पंजाबपर्यंत भागवत धर्माचा प्रसार केला. जी समर्थ रामदास स्वामींनी प्रपंच कसा करावा ते सांगितले.

ते म्हणतात,

आधी प्रपंच करावा नेटका  
मग श्यावे परमार्थ विवेका.  
येथे आळस करू नका  
विवेकी हो !

त्यांनी राष्ट्रधर्म व बलोपासना सांगितली. संत कवीरांनी हिंदू-मुस्लिम एक आहेत व जातिभेद नष्ट करण्याचा प्रयत्न केला. माणसाच्या अंगी जे सहा विकार आहेत. क्रोध, मद, मोह, मत्सर, माया हे कमी करण्यासाठी सर्व संतांनी शिकवणी दिल्या व ते तसे वागले सुद्धा !

संतकृपा झाली, इमारत फळा आली ।  
ज्ञानदेवे रचिला पाया, उभारिले देवालय ।  
नामा तयाचा किकर, तेणे केला हा विस्तार ।  
जनार्दनी एकनाथ, खांब दिला भागवत ।  
तुका झालासे कळस, भजन करा

सावकाश ।

निरूपण केले ओजा, बहिणी  
फडकती ध्वजा ।

विद्रोही परंपरेचे नीट भान घेण्यासाठी हा बहिणाबाईचा अभंग आठवतो. हा अभंग नुसता वारकरी संप्रदायाचा इतिहास नाही, तो मराठी वाङ्मय व मराठी संस्कृतीचा इतिहास आहे. मराठी साहित्य व मराठी संस्कृतीच्या मुख्य प्रवाहाच्या प्रगतीचा इतिहास आहे. मराठी साहित्यात एक महत्त्वाची गोष्ट येते, ती म्हणजे सहिष्णुता.

‘जे का रंजले गांजले  
त्यांसी म्हणे जो आपुले  
तोचि साधू ओळखावा  
देव तेथेची जाणावा !

किंवा वैष्णव जन तो तेणे कहिए,  
पीड पराई जान रे ।

हे वारकरी संप्रदायाचे अविभाज्य सूत्र होते. परंतु मात्र आज त्यांच्या आठवणी म्हणून तरी आज ही सूत्रे वापरली जातात का ? देव देहात देहात या तुकारामाच्या अभंगामध्ये तुकाराम महाराज माणसातला देव ओळखायला सांगतात. त्यांच्या भक्तांना कोणी विचारल, की तुम्ही देवळात कशासाठी जाता तेव्हा ते आनंदाने सांगतात की, आम्ही देवळात देवाला आमच्या गुरूंना मनापासून वंदन करण्यासाठी जातो.

परंतु, आजचा माणूस हा स्वार्थी आहे. तो फक्त देवळात याच कारणांसाठी जातो की, देवा मला सुख-संपत्ती मिळू दे, मी ऐश्वर्यात जगू दे.

परंतु काही माणसे ही देवाने पाठवलेली असतात. जसे की, जगात असंख्यांची पावले जमिनीवर पडतात. परंतु, त्यातील काही पावले ही मातीवर उमटतात. त्यांनी केलेल्या कार्यामुळे त्यांच्या पायांचे ठसेसुद्धा न पुसणारे असतात. जसे की, अलिकडच्या काळात स्वच्छतेचा संदेश



वेणारे गाडगेबाबा, ग्रामगीता सांगणारे अण्णा हजारे यांचे सुद्धा कार्य महान आहे.

तरी सुद्धा महाराष्ट्रात/समाजात अनिष्ट प्रकार घडत आहेत. हुंडाबळी, अंधश्रद्धा, भ्रष्टाचार बोकळत आहे. म्हणून तर म्हणावेसे वाटते, हे संतांनो पुन्हा जन्माला या !

संताची हृदयस्थाने कोमल होती, मनाची श्रीमंती अपरंपार होती. म्हणून तर म्हणतात,

मोक्षजिवा आळंकृत  
ऐसे हे संत श्रीमंत,

जीव दरिद्री असंख्यात  
नृपती केले !

आज केवळ पैशाने श्रीमंत असणारी माणसे जगात असंख्य मिळतील. परंतु, येथे मनाने श्रीमंत असणाऱ्यांची कमतरता/कमी भासून येईल. हा मनाचा मोटेपणा, परमेश्वराचा भावुकपणा, हृदयाचा विशालपणा जिथे फुलतो, बहरतो ती पुण्यपावन क्षेत्र म्हणजे आमच्या संताची हृदयस्थाने ! अशी जी मंडळी आपल्या भारत देशाला स्वातंत्र्य मिळवून देण्यासाठी हुतात्मा झाली अशा सर्वांसाठी पुन्हा पुन्हा म्हणावेसे वाटते, हे संतांनो पुन्हा, जन्माला या !

### शापला सातारा

सात ताऱ्यांचा मुकूट  
वर कृष्णा कोयनेची खळक  
हीच तर आहे सातान्याची ओळख.

पश्चिमेला कोकणाची किनार  
झाडी झुडपातून प्राण्यांचे चित्कार.

अफझल खानालाही जेथे  
नाही मिळाला बक्ष,  
प्रतापगड अजून देतोय  
राजांच्या पराक्रमाची साक्ष ।

जावळी म्हणजे जणू वाघाचं जाळं  
डोंगर रागांची आहे माळंच माळ.

इथे आहे महाबळेश्वर पांचगणीचा गारवा  
हवेतही दिसेल ममतेचा ओलावा.

दऱ्या खोऱ्यातून वाहतो शौर्याचा वारा  
सातान्यात आहे एक अजिंक्यतारा ।

कास पटारावर निसर्गाची उधळण मुक्त हस्त  
सातान्यात कंदी पेढे आहेत, चविष्ट मस्त ।  
मांदरदेवीचा आहे वरदहस्त  
वाईचा गणपती आहे प्रसिद्ध.

वैशाखातही येथे दिसेल श्रावण  
रामदास स्वामींच्या चरणाने झालाय  
सज्जनगड पावन ।

सद्दात्रीच्या तटबंदीचा आहे अभेद्य किल्ला  
सातारा म्हणजे शूरांचा जिल्हा.  
सात तारकांच्या प्रकाशात कधी दिसणार नाही काळोख,  
सातारी आहेत आम्ही हीच आमची ओळख ।

निलोफर तांबोळी

११ वी कला





## प्रार्थनेचे फळ

कु.तन्वी खालडकर, ११ वी विज्ञान

कोणत्याही कार्याचा आरंभ करण्यापूर्वी परमेश्वराला किंवा सद्गुरूंना प्रार्थना करणे, हे भारतीय संस्कृतीचे महत्त्वपूर्ण अंग आहे. यामुळे आपल्या कार्यात ईश्वरीय सहाय्य, प्रसन्नता व सफलतेचा अंतर्भाव होतो. दुःखाच्या वेळी, संकटकाळी अथवा आनंदाच्या मंगलप्रसंगीसुद्धा आपण मनापासून प्रार्थना करतो. प्रार्थना हे आईवडिलांविषयी, निसर्गाविषयी, पशुपक्ष्यांविषयी आदर, कृतज्ञता व्यक्त करण्याचे प्रभावी साधन आहे. आपले मानवी जीवन अनमोल आहे. आपल्याला परमेश्वराने वाचेची देणगी दिलेली आहे. या वाणीतून प्रार्थना केल्यास सर्व काही साध्य करता येणे शक्य आहे.

प्राथमिक स्तरावरील विद्यार्थ्यांचा वयोगट हा संस्कारक्षम वयोगट मानला जातो. या वयात कळत-नकळत झालेले संस्कार विद्यार्थ्यांच्या मन-बुद्धी-जीवनाला वळण लावण्याचे व योग्य दिशा देण्याचे काम करतात. भावी काळातील यशाची बीजे हे या संस्कारक्षम अशा बालवयात रुजली जातात. शिक्षणातून अपेक्षित व्यक्तिमत्त्व विकासाबरोबर उत्तम चारित्र्य घडणे आवश्यक आहे. उद्याचा भावी नागरिक ज्ञानसंपन्न, गुणवान, आदर्श, निष्ठावान, ध्येयवादी घडणे अपेक्षित आहे. सामाजिक जीवनाची जबाबदारी पेलू शकणारे नागरिक निर्माण करायचे आहेत. स्वतःविषयी, मित्रांविषयी, शेजाऱ्यांविषयी, देशाच्या प्रगतीविषयी, पर्यावरणांविषयी, सर्व धर्म व संस्कृती यांविषयी उदार दृष्टिकोन विकसित करायचा आहे.

आज जग अनेक भौतिक अंगांनी समृद्ध व समर्थ झालेले आहे. मानवाला अशक्य असे काही नाही. याचा सार्थ अभिमान वाळगता येईल, एवढी कामगिरी आधुनिक तंत्रज्ञानाने करून दाखविली आहे. भौतिकशास्त्राने विकासात नेत्रदिपक मजल मारलेली आहे. मात्र मानवी जीवन फारच असुरक्षित झालेले आहे, असे वाटते. कारण कमावलेल्या शक्तीसामर्थ्याबरोबर त्यांच्याशी सुसंगत अशी मानवता जपणारी योग्य ती मूल्ये मात्र जोपासली जात नाहीत. सध्याची धकाधकीची परिस्थिती पाहता, सर्व काही मिळवूनही मानवाचे मन सैरभैर झाले आहे. शांतता, स्थैर्य गायब झालेले दिसते. 'माणुसकी' या शब्दाचा विसरच पडत चाललाय. माणूस स्वतःच्याच नादात



अधिकाधिक जडकत चालला आहे. 'वेळ नाही' हे पालुपद आता वारंवार ऐकायला मिळत आहे आणि म्हणूनच स्थैर्य, एकाग्रता उत्तम विचारांची सजवणूक अंगी बाणवण्यासाठी प्रार्थना अत्यंत आवश्यक आहे.

प्रार्थनेला जगातील सर्वच घर्मांनी महत्त्व दिले आहे. प्रार्थना निसर्गाने मानवाला दिलेली शक्ती आहे. समस्या वेण्याअगोदरच समस्येच उत्तर म्हणजे प्रार्थना. प्रार्थना केवळ कर्मकांड किंवा शोभेसाठी नसते. प्रार्थनेत भाव आणि विश्वास यांचे बळ असेल तर प्रार्थनेचे फळ मिळते. हा

अनेकांचा अनुभव आहे. चांगली इच्छा म्हणजे प्रार्थना. कळत-नकळत प्रत्येक माणूस निरंतर प्रार्थना करत असतोच. काही प्रार्थना व्यक्तिगत तर काही सामूहिकपणे केल्या जातात. दुष्काळ, अवर्षण, भूकंप, महापूर अशा वेळी आपण सामूहिक प्रार्थना करतो. मात्र प्रार्थनेला प्रयत्नांची जोड हवी. तुमचे काम कोणतेही असो, तुमचा व्यवसाय कोणताही असो. तो मन लावून आस्थापूर्वक, उत्कृष्टरीतीने करणे ही समाजसेवेची खरी प्रार्थना आहे.

### आयुष्य

आयुष्य हे फार मोलाचे असते. पडले म्हणून रडायचे नसते. कधी खचायचे नसते. कधी मागे बघायचे नसते. सतत पुढे जायचे असते.

भूतकाळ भविष्यकाळात न जगता  
वर्तमानकाळात जगायचे असते.  
आयुष्य हे एक बहीचे पान असते.  
त्याचे पहिले पान जन्म तर शेवटचे पान मृत्यू असते.  
आयुष्यात स्वप्न हे कधी बघायचे नसते  
तर ते सत्यात उतरवायचे असते.  
आयुष्यात भूतकाळ भविष्यकाळात न जगता  
वर्तमान काळात जगायचे असते.  
आयुष्यात असते संकटांचे Pollution  
त्यावर काढायचे असते आपण Solution  
आयुष्यात असतो विश्वास, असतात नाती  
ती टिकवायची कशी हे आपल्याच हाती.  
आयुष्यात मिळते आई-वडीलांची माया  
तीच खरी असते प्रेमाची छाया  
व क्षुल्लक गोष्टींसाठी आई-वडिलांना कधी सोडायचे नसते.  
हेच खरे आयुष्य असते..... हेच खरे आयुष्य असते.....

कु.ऋतुजा पवार  
११ वी कला

### (आई) मला जगात यायचय.....

तू जसे पाहिलेस जग तसे मला देखील पाहू दे.  
नको मारू आई मला जन्म हा घेऊ दे !

तुझ्या मऊ कुशीच्या उदरात कळी बनून  
गुलाबाच्या फूलासारखं उमलू दे.  
नको ग मारू आई मला  
जन्म हा घेऊ दे !

स्त्यावरच्या गर्दीतून मला तुला शोधू दे.  
शिकून सवरून मोठी होऊन मला तुझा व  
बावांचा आधार बनू दे.  
ए आई, ए आई नको ना ग मारू मला  
जन्म हा घेऊ दे !

आजीशी गोष्टी, आजोबांशी गप्पा  
बाबांशी खेळ, ताईशी अभ्यास  
आणि तुझ्याशी घरातील काम  
मला करू दे.

ए आई, ए आई नको ना ग मारू मला  
जन्म हा घेऊ दे !  
जन्म हा घेऊ दे !.....

कु.ऋतुजा पवार  
११ वी कला





## शिक्षण व विद्यार्थी

कु.मृष्मयी पोळ, ११ वी विज्ञान

शिक्षण.....मानवी जीवनाला आधार देण्याचे साधन. शिक्षणाची सुरुवात कधी होते ? या प्रश्नाचे उत्तर देणे तसे अवघड असले, तरीही पाल्यांना पहिला शिक्षणाचा पाठ मिळतो तो घरातच आणि मग तो तीन-साडेतीन वर्षांचा झाला की प्ले ग्रुप, अंगणवाडी अशांचा शोध सुरू होतो. एकदा अशा व्यवस्थेशी पाल्याला जोडले की, पालकांची जबाबदारी संपते आणि पाल्याला जोडले की पाल्याला शिकवण्याची सर्वस्वी जबाबदारीही शिक्षकांची असते. अशी एक सामाजिक मानसिकता आज रूढ झाली आहे. सहा तासांची शाळा आणि अठरा तास पाल्यपालकांच्या सोबत. तरीही त्याला सुशिक्षित करण्याचे साहित्य, शिक्षित करण्याचे काम शिक्षकांचे, या वास्तवात आपला समाज गटांगळ्या खातो आहे. त्याचप्रमाणे क्रामित शिक्षण, पाठ्यपुस्तकांचा बोजा आणि ट्युशन क्लासमध्ये गुरफटलेले विद्यार्थी, बदलत्या जीवनशैलीमुळे पाल्याला वेळ न देऊ शकणारे पालक, शाळाबाह्य कामात अडकलेले शिक्षक अशी काहीशी विचित्र स्थिती आज पाहायला मिळते आहे आणि परिणामस्वरूप शिकण्याचा आनंदच हरवला गेला आहे.

शिकणे, शिक्षण घेणे ही कल्पना-प्रक्रिया आनंददायी असावी. कधी काळी ती तशी होती. त्यामुळे पाल्यांच्या सुप्त गुणांना बाव देत त्याला आकार दिला जातो. आज मात्र प्रचलित शिक्षण व्यवस्थेत 'सब घोड़े बारा टक्के' या न्यायाने वर्गातील वेगवेगळ्या मानसिक स्तरातील, बौद्धिक स्तरातील विद्यार्थ्यांना एकाच पद्धतीने शिकवले जाते. एक प्रकारची स्पर्धा चालू आहे आणि 'गुणपत्रिका' हे त्यांचे अंतिम लक्ष्य असते. जास्तीत जास्त गुण मिळवणारा विद्यार्थी आपला पाल्य असावा अशी पालकांची इच्छा असते, त्यासाठी ते पाल्याला स्पर्धेत धावायला लावतात. या सान्या पार्श्वभूमीवर आपल्या देशात आनंददायी शिक्षणाबरोबर सुजाण नागरिक तयार करण्याचे प्रयोग काही ठिकाणी चालू आहेत. या प्रयोगांना चांगले यश लाभत असले तरी ते वास्तवाला पुरेपूर उत्तर देणारे नाहीत. असे प्रयोग खूपच व्यापक पातळीवर होणे गरजेचे आहे. तरच हे वास्तव बदलू शकते. विद्यार्थी, शिक्षक आणि पालक या तिघांच्या समन्वयातून आणि सकारात्मक कृतीतून शिक्षण आनंददायी होऊ शकते.



आज विद्यार्थी शाळा, क्लास आणि कला प्रशिक्षण वर्ग या त्रिस्थळी मार्गेत गुंतून पडले आहेत. अशा परिस्थितीत पालकांच्या व शिक्षकांच्या अपेक्षा पूर्ण करताना विद्यार्थी स्वतःचे स्वत्वच हरवून बसत आहेत. उत्तम विद्यार्थी होतानाच शिकण्याचा आनंद कसा घेता येईल हेच पाहावे. 'क्रिकेटचा खेळ आपल्या सर्वांनाच आवडतो. आपण सर्वही आवडीने तो खेळतो.' यातील गुरुशिष्यांविषयी एक कथा मी तुम्हाला सांगते, एका खेळाडूने एक घटकार मारला. उंच गेलेल्या त्या चेंडूकडे सर्वांचे लक्ष लागले. एका घटकाराने तो खेळाडू मोठा झाला. दुसऱ्या क्षणी त्याच गतीने तो जमिनीवर आला, कारण बॅटने दिलेल्या गतीपेक्षा पृथ्वीची गुरुत्वाकर्षण शक्ती अधिक होती. त्यानंतर ते शिक्षक आपल्या विद्यार्थ्यांला म्हणाले, या चेंडूसारखा होऊ नकोस, एका क्षणात मिळणारा मोठेपणा कायम टिकत नाही. तुला मोठे व्हायचेच असेल, उंच ठिकाणी जायचेच असेल तर ध्रुवताऱ्यासारखा हो. जो अढळ आहे आणि हे पद मिळवण्यासाठी प्रचंड कष्ट करावे लागतात. वेळ द्यावा लागतो. सराव करावा लागतो. आकलन, साहित्य व निरीक्षण शक्ती यांच्या बळाने खूप मोठे होता येते. आपले माजी राष्ट्रपती ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, डॉ.रघुनाथ माशेलकर हे आज अढळपदी आहेत. कारण त्यांनी खडतर कष्ट घेतले. प्रयत्न केले आणि यश प्राप्त केले.

आपण मोठे होण्यासाठी अनेक प्रसंग आपल्या जीवनात येत असतात. ते प्रसंग आपण जाणले पाहिजेत. त्यातून आनंद घेतला पाहिजे. ज्यातून आनंद प्राप्त होतो.

त्यातून खूप पटकन शिकता येते. अनेक प्रक्रियांतून असे आनंद प्राप्त होतात. विद्यार्थ्यांना व्यक्त होण्याची संधी प्राप्त झाली तर त्यांचा जडणघडणीला खूप वाव मिळतो.

राईट बंधू हे पतंग आणि सायकल यांचे वेडे होते. या वेडातूनच त्यांनी पतंग आणि सायकल यांच्या संयोगातून विमान तयार केले, हे आपण पाहिले आहे. म्हणून शिकण्याचा आनंद शोधला पाहिजे. जिज्ञासा, दृष्टिकोन आणि सातत्य यांच्या आधाराने आपण आनंदाने शिक्षण घेऊ शकतो.

आपला पाल्य हा स्वप्नलंबी कसा होईल हा संस्कार पालकांनी रूजवला पाहिजे. 'ये दिल माँग मोर' हा चुकीचा पायंडा पालक अमलात आणत आहेत. आपला देश शेतीप्रधान आहे पण पालक आपल्या मुलांना मातीशी खेळून देत नाहीत. ही नक्कीच चांगली स्थिती नाही. मुलांच्या विकासाचे बारा पैलू मानले जातात. त्यात त्याला अधिक गुंतू देण्याची आवश्यकता आहे. आज पालकांसमोर अनेक आव्हाने आहेत, पण ती आव्हाने पार करण्यासाठी पर्याय नाही.

आपली संस्कृती, इतिहास यांचा आधार घेऊनच शिक्षणक्रम तयार व्हायला हवेत. त्यात पालक, शिक्षक आणि विद्यार्थी सहभागी व्हायला हवेत. एकूणच या माझ्या मनोगतातून शिक्षणाकडे पाहण्याचा सकारात्मक दृष्टिकोन विकसित झाला, यात शंका नाही.

♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦

♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦  
 ♦ ♦ ♦



## मला पुन्हा एकदा तरी

मला पुन्हा एकदा तरी शाळेत जायचय,  
धावत जाऊन माझ्या  
रोजच्या बाकावर बसायचय.  
रोज सकाळी खड्या आवाजात  
राष्ट्रगीत म्हणायचयं.  
नव्या बहीचा बास घेत पहिल्या पानावर  
छान अक्षरात आपलं नाव लिहायचय.  
मला पुन्हा एकदा तरी शाळेत जायचंय.  
मधली सुट्टी होताच वॉटरबॅग सोडून,  
नळाखाली हात धरून पाणी प्यायचय.  
कसाबसा डबा संपवत तिखट मीठ लावलेल्या  
चिंचा, बोर, पेरू, काकडी सगळ खायचय.  
सायकलच्या चाकाचा स्टॅप करून,  
क्रिकेट खेळायचय.  
मला पुन्हा एकदा तरी शाळेत जायचय.  
उद्या पाऊस पडून शाळेला सुट्टी मिळेल का ?  
हा विचार करत रात्री झोपी जायचय.  
अनपेक्षित मिळणारा सुट्टीच्या आनंदासाठी  
मला एकदा तरी शाळेत जायचय.  
कितीही जड असू दे,  
जबाबदारीच्या ओझ्यापेक्षा,  
दप्तराचं ओझ पाठीवर वागवायचय.  
कितीही उकडत असू दे वातानुकूलित ऑफिसपेक्षा,  
पंखे नसलेल्या वर्गात खिडक्या उघडून बसायच.  
कितीही तुटका असू दे  
ऑफिसमधल्या एकट्या खुर्चीपेक्षा  
दोघांच्या बाकावर तीन मैत्रिणी बसायचय,  
म्हणून मला पुन्हा एकदा तरी  
शाळेत जायचंय.

कु.तृप्ती त्रिंबके  
११ वी विज्ञान



## बाप

बाप म्हणजे घराचा आधार  
कष्टांचा तो उचले बाजार.  
कुटुंबापासून दूर दिवसभर रावे तो भाकरीसाठी  
मुलांच्या भविष्याची बापच तर आहे काठी.  
जीवनभर रावत असताना न कधी धके तो  
देई बक्तशीरपणाची मशाल तो.  
सतत कर्म करावे ही शिकवण देणारा बाप  
बाहेरून कटोर पण मनाने प्रेमळ असणारा बाप.  
आयुष्याच्या कष्टी संघर्षात असतो नेहमी तयार  
तोच तर करी पार हा दुःखी पठार.  
नेहमी गायली जातात गीते आईची  
पण असतात गीतेही बापाची.  
तर बाप असतो मुळे त्याच झाडाची  
आई जर असते फांद्या झाडाची.  
न कळे कोणाला या बापाची माया  
तो परिवारावरील असतो छाया.  
जशी माय प्रेमाची नदी  
तसा बाप घालतो सहनशीलतेची वर्दी.  
देई धडा नेहमी तो प्रामाणिकतेचा  
देई साठा सुसंस्कारांचा  
प्रचंड गगणात भरारी घेण्यास सांगे तो.  
समाजातील एक ताराही बनण्यास सांगे तो.  
असा असतो बाप कष्टकरी  
श्रमाच्या यात्रेचा आहे तो वास्करी.

कु.अमृता धिटे  
११ वी विज्ञान



## आई

मायेची ती बाहुली  
 उन्हातली असते सावली.  
 तिच्याच छताखाली तर  
 मिळतो सुखाचा सांगाती.  
 आहे ती माझी माय  
 जशी दुधावरची साय.  
 तिच्याच मार्गदर्शनाने मिळते यशाची वाट  
 प्रत्येक चढउतारावर तिच तर देते माझी साथ.  
 नाही तुलना तिची कोणाशीही  
 तिच तर असते अंधारातली मशालही.  
 डोंगराचा माथा असतो उंचावर  
 तसेच आईचे स्थान असते देवाच्या वर.  
 कुस उजळवून दिला मला जन्म  
 करायची आहे हिच कुस मला धन्य.  
 माता, माय, आई, माँ अशी अनेक आहेत नावे तिची  
 पण ममता आहे एकच तिची.  
 मुलांची सोबत हे तिचे जीवन  
 मुलांचा अभाव हे तिचे मरण.  
 कुटुंबासाठी असते तिची त्यागी भावना  
 करते ती पार जीवनाचा दुःखी भवरा.  
 विशाल समुद्रापरी तिचे मन  
 होते ती मुलांत अतिदंग.  
 साधाभोळा वेश तिचा  
 स्वभाव तो रांगड.  
 अशी आहे माझी माता  
 जशी आनंदाचा साटा.

कु. अमृता थिटे  
 ११ वी विज्ञान



## नोकरीचा गाव

झुक-झुक-झुक-झुक  
 शिक्षणाची गाडी  
 पदव्यांचा धूर हवेत सोडी  
 दादती बेकारी पाहुया  
 नोकरीच्या गावाला जाऊया ॥ १ ॥  
 नोकरीचा गाव मोठा तालेवार  
 नोकऱ्या मिळतात लाखोवार  
 पण बशिल्याचा दणका पाहुया  
 नोकरीच्या गावाला जाऊया ॥ १ ॥  
 गाडीला या डबे चार  
 त्यात आणखी रिझर्वेशन फार  
 त्याच्यामध्ये जाऊन बसूया  
 नोकरीच्या गावाला जाऊया ॥ २ ॥  
 गाडीमध्ये सीटा फार  
 धर्ड क्लास मध्ये गर्दी फार  
 पण फर्स्ट क्लासचे तिकीट  
 मिळवूया, नोकरीच्या  
 गावाला जाऊया ॥ ३ ॥

कु. दिशा शहा  
 ११ वी कला





### कोणासाठी - कोणीतरी

कोणाच्या इतकेही जवळ जाऊ नये  
की त्याची आपल्याला संवय व्हावी  
तडकले जरी हृदय आपुले कधी  
की सोडतांना असीम यातना व्हावी !

वहीत कोणाचे नावही इतके येऊ नये  
की पानांनाच ते अवजड व्हावे  
अन् एखाद्या दिवशी अचानकपणे  
त्या नावाने वहीत यायचेच बंद करावे.

स्वप्नात कुणाला इतके असेही बघू नये  
की आधाराला त्याचेच हात हवेत  
तुटलेच कधी स्वप्न अचानक तर  
हातात आपल्या त्याचे तुकडेही नसावे !

कुणाची इतकी ओढही नसावी की  
पदोपदी आपण त्याची वाट पाहावी  
कुणाला इतकेही 'माझे' 'माझे म्हणू नये  
की त्याचे 'मी'पण त्यानेच विसरावे

कुणाच्या इतकेही दूर जाऊ नये की  
सावली शिवाय सोबतीला कोणीच नसावे  
कुणाला जर दूरवर आवाज दिला तर  
आपलेच शब्द आपल्या भोवती घुमावे...

कु.प्रतिक्षा शिंदे  
११ वी वाणिज्य



### आई

आई म्हणजे ज्ञानाचा सागर

मायेचा आरसा

घराचा वारसा

आई म्हणजे एक आराध्य दैवत

जी असते सर्वांच्या पाठीशी

आणि सर्वांना बांधून टेवते एकमेकांशी

आई म्हणजे विरघळणारी साखर

जी आपल्या मुलांच्या मायेपुढे

लगेचच विरघळते.

व त्याचसाठी हवे ते करते.

आई म्हणजे एक मैत्रिण

जी प्रत्येक संकटकाळी मुलीच्या

पाठीशी मैत्रिणीप्रमाणे राहते.

आई म्हणजे एक असा संगणक

जी सर्वांची कामे पटकन करते.

आई म्हणजे एक अशी व्यक्ती

जी सर्वांशी प्रेमळपणे वागते

व सर्वांना ती खूप खूप आवडते.

कु.ऋतिका कांबळे  
११ वी वाणिज्य



बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

आकाशमन्त्रालय



'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ. वापूजी साळुंखे

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय  
सातारा



“आई जो परी पृथ्वी पर  
स्वर्ग की, इसी से हो गई है क्या सुन्दर तर ?  
पार कर अन्धकार आई तो आकाश पर  
सत्य कहो, मित्र नहीं सकी स्वर्ग प्राप्त कर ?  
कौन अधिक सुन्दर, देह अथवा आँखें ?  
चाहते भी जिसे तुम - पक्षी बह या कि पांखें ?  
स्वर्ग झुक आए यदि धरा पर तो सुन्दर  
या कि धरा चढ़े स्वर्ग पर तो सुधर ?”

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

विभागीय संपादक  
प्रा.सौ.निकम शुभांगी



## अनुक्रमणिका

### गद्य विभाग

१) राष्ट्रीय एकात्मता की कड़ी-हिंदी	कु.निलोफर तांबोली	११ वी कला	१३१
१) आज की भारतीय नारी	कु.सुप्रिया खिलारे	११ वी कला	१३३
१) दलित साहित्य : एक चिंतन	कु.निकीता कांबळे	१२ वी कला	१३५

### पद्य विभाग

१) शैरो-शायरी	अक्षय राजू किरवले	११ वी कला	१३४
१) कबीर के दोहे	करण कांबळे	१२ वी कला	१३८
१) राष्ट्रभाषा हिंदी	निलोफर तांबोली	११ वी कला	१३९
१) प्यारी माँ भारती	कु.सुप्रिया खिलारे	११ वी कला	१३९
१) दोस्ती	कु.अक्षता कदम	११ वी विज्ञान	१४०
१) मेरे गुरु	प्रमोद सोनटक्के	१२ वी कला	१४०

'आकाश' विभागी संकलन -

आकाश विभागी  
संकलन





## राष्ट्रीय एकात्मता की कड़ी-हिंदी

कु.निलोफर तांबोळी, ११ वी कला (क)

“भारत माता का मंदिर यह,  
समता का संवाद यहाँ है ।  
हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,  
पावें सभी प्रसाद यहाँ है ॥”

हमारा राष्ट्र भारतवर्ष “अनेकताओं में एकता” का अद्वितीय उदाहरण है। संपूर्ण विश्व में ऐसा अन्य राष्ट्र नहीं है, जहाँ पर इतनी विविधताएँ एक साथ विद्यमान हो। देश की यह विविधताएँ भाषा, धर्म, प्रांत एवं अन्य भौगोलिक स्थितिओं पर आधारित हैं। इस धरती पर हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि बहुधर्मीय व्यक्ति मिल-जुलकर रहते हैं। राष्ट्र की यह एकात्मता हमारी मिल-जुलकर रहने तथा समान रूप से एक राष्ट्र की भावना के कारण ही सदियों से अक्षुण्ण है। परिवार की एकता परिवार में शांति, समृद्धी लाती है। सामाजिक एकता, सामाजिक जीवन को सुखी बनाकर व्यक्ति के विकास के साथ राष्ट्र के विकास में सहायक होती है। और राष्ट्रीय एकता को सबल, शक्ति सम्पन्न, वैभव संपन्न बनाकर किसी भी विदेशी खतरे से लोहा लेने का सामर्थ्य जगाती है।

### राष्ट्रीय एकात्मता के आधार :

राष्ट्रीय एकात्मता का पहला महत्वपूर्ण आधार तो उत्कट राष्ट्रभाव है। इसकी छाया में जातिवाद, संप्रदायवाद, भाषावाद का कोई महत्व नहीं रहता। जब व्यक्ति यह सोचता है कि सारा राष्ट्र मेरा है, यहाँ की प्रत्येक भाषा मेरी है, प्रत्येक जाति भारतीय है, सबको विकास का अधिकार है तो संघर्ष स्वयं ही कम हो जाता है। हमने भावात्मक एकात्मता को महत्व दिया। आज की राजनीति ने उसे मिटा दिया। अतः जब तक भावात्मक एकता का दृढ़ आधार खड़ा नहीं होता, तब तक राष्ट्रीय एकात्मता का सपना देखना उचित नहीं। अगर यह स्वप्न पूरा हुआ तो भारत अपने गौरव को प्राप्त करेगा और भारत वर्ष की फूलबगीचा में कोयल निम्न-तराना गाती हुई सुनाई पड़ेगी।

### राष्ट्रभाषा : हिंदी

“हिंदी है राष्ट्रभाषा हमारी,  
वतन जैसे ही प्यारी ।  
अनेकता में एकता का नारा है,  
गौरवशाली भारत हमारा है ।”

किसी भी देश की एकात्मता को सजीव बनाए रखने में उस देश की राष्ट्रभाषा का विशेष महत्व होता है। जिस प्रकार राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय ध्वज देश के विशेष के गौरव का



प्रतिक है, ठीक उसी प्रकार से राष्ट्रीय भाषा भी राष्ट्र को गौरवान्वित करती है। राष्ट्रीय भाषा राष्ट्र के नागरिकों में नवीन प्राण फूँकने हेतु संजीवनी का कार्य करती है, जिस प्रकार शरीर आत्मा के बिना निर्जीव है वैसे ही एक राष्ट्र का अस्तित्व बिना राष्ट्रभाषा से शून्य है। राष्ट्र की भाषा का ही राष्ट्रीय उन्नति में महान योगदान है। सन १८७३ ई.वी में अपनी भाषा के बारे में आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने यह उद्घोष किया है।

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।  
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को मूल।

“राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का अंग मानता हूँ। हिंदी राष्ट्रीय एकता की भाषा है। हिंदी भारत माता के ललाट की बिंदी है।” - डॉ. राजेंद्र प्रसाद।

अनेकता में एकता का जामा पहनानेवाली हिंदी ही है। असत् को सत् का मार्ग बतानेवाली हिंदी ही है। दानवता को मानवता का पाठ पढ़ानेवाली भी यही प्यारी भाषा हिंदी है। उसके चरित्र का जितना बखान किया जाए थोड़ा ही है। यह तो “ससुरी” के समान “पावन सलिला” है, जो सभी पापों को धोकर सबका हित करती है। हिंदी भारतमाता के माथे की बिंदी है तथा जिसके सामने विश्व की महान हस्तियाँ भी कोई औकात नहीं रखती।

बनके एक जान हिंदू, मुस्लिम, सिख-ईसाई,  
देखो इस देश को जन्म करना है भाई।

सब मिल के खाइए कसम

पहले भाई भाई है हम और भारत के वाली हैं हम।

आज फिल्मों के द्वारा भी राष्ट्रीय एकता की स्थापना होती है, लेकिन हम देखते हैं कि हिंदी फिल्मों के कलाकार आज सिर्फ हिंदी भाषी नहीं हैं, अहिंदी भी हैं, जिसमें वैजयंतीमाला, डॉ. श्रीराम लागू, श्री. शांताराम, रागिनी देवी, अमिताभ, राज कपूर तो लता मंगेशकर, आशा भोसले, किशोरकुमार, मुकेश जैसे कलाकारों की आवाज सारे देश में गूँज उठती है, लेकिन हम उनको पहचान नहीं सकते कि वो महाराष्ट्रीय हैं ? गुजराती है ? या हिंदी भाषी ?

भारतीय एकता की राह प्रेम की राह है, मुहब्बत और समझौते की राह है, आदरपूर्वक एक दूसरे को समझकर चलने की राह है और प्रत्येक क्षेत्र के व्यक्तित्व को अधिक से अधिक अक्षुण्ण रखते हैं। राष्ट्र के महाव्यक्ति के पूजन और समाधान की राह है। भारतीय एकता का अर्थ है कि भारत में जितनी जातियाँ बसती हैं, वे एक ही महाजाति का अंग हैं। जिसका नाम भारतीय है। भारत में जितनी संस्कृतियाँ हैं जिसका नाम मानव धर्म है और जो धर्म जागामी विश्व धर्म की पृष्ठभूमि बनकर आया है, उन सबका सांस्कृतिक लक्ष्य एक है। रामकृष्ण, विवेकानंदजी, रवींद्रजी और गांधीजीने हमारे भाग्य की जो रेखा खींच दी है, उससे इधर उधर जाकर हम देश की एकता को बचा नहीं सकेंगे। इन महापुरुषों ने देश को बार-बार सावधान किया कि तुम्हारी एकता तुम्हारी विविधताओं में छिपी हुई है। इस एकता की अनुभूति तुम विविधताओं को तोड़कर नहीं, उनके भीतर सामंजस्य बिठाकर कर सकते हैं। इस एकता को बनाये रखने के लिए केदारनाथ कोमल कहते हैं कि,

“बूँद बूँद के मिलने से बन जाता है सागर,  
धागों-धागों से जुड़ने से, बन जाती है चादर।”

१४ सितंबर १९४९ के दिन हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। १५ साल तक अंग्रेजी और हिंदी साथ साथ जारी रखने की भी व्यवस्था की गई। संविधान के अनुच्छेद ३५१ के अनुसार ६४-६५ तक हिंदी राष्ट्रभाषा पूर्ण रूप से बनेगी। इस अवधि में हिंदी का विकास प्रसार बढ़ाया जाए ताकि वह सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों के अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। केंद्रीय सरकार के सभी कर्मचारियों को हिंदी में प्रवीण बनाया जाएगा, जिससे वे सारा काम हिंदी में करने में समर्थ हो जाएँगे। सालों साल बीत गए परंतु अंग्रेजी की जगह हिंदी को नहीं मिली, यह चिंतन का विषय है।

सच तो यह है कि -

हिंदी है माता, हिंदी है गीता,  
हिंदी के द्वारा ही राष्ट्रीय एकता।





## आज की भारतीय नारी

कु.सुप्रिया खिलारे, ११ वी कला

“नारी तेरी कहानी  
सदीयोंसे पुरानी ।

पिताजी का छत मिला,  
भाई जी का साथ मिला,  
पति जी का हाथ मिला,  
फिर भी है अनजानी ।

नारी तेरी कहानी  
सदीयोंसे है पुरानी ॥

जन्म से लेकर जीवन की हर मोड़पर नारी को एक पुरुष के सुरक्षा कवच में रहना पड़ रहा था । उसको 'अबला' माना गया था । लड़की के पैदा होते ही उसकी तुलना लड़को से की जाती थी । उसकी हर सोच पर मर्यादा की एक रेखा खिंची जाती थी । इससे लड़कियों की बुद्धिमत्ता एक जगह तक मर्यादित रहने लगी । विकास के हर रास्ते उनके लिए बंद से हो गए । पहले जमाने में लड़कों को बेहद महत्त्व दिया जाता था । जिन घरों में इस तरह का माहोल था, उस घर की लड़की के जजबात की कल्पना तो कीजिए, क्या करती बेचारी चुपचाप सहती ? लेकिन अब बस.....

आज के जमाने की लड़कियाँ अब लड़कोंसे कतई भी कम नहीं हैं । सावित्रीबाई फुले एक महिला थी, जिसने 'स्त्री शिक्षण' के दरवाजे पूरी तरह से खोल दिए, और एक एक करके बड़ी तादाद में लड़कियाँ लिखने पढ़ने लगी । आज की स्थिति यह है, की हर क्षेत्र में लड़कियाँ लड़कोंसे आगे जा चुकी हैं; जिसका जीता जागता उदाहरण अपने देश की महिला प्रधानमंत्रीजी इंदिरा गांधीजी हो चुकी थी । कल परसों की बात है, भारत की राष्ट्रपति सौ.प्रतिभाताई पाटील, भारत की सुवर्णकन्या पी.टी.उषा, अवकाश में सफर करनेवाली कल्पना चावला, किरण बेदी, सुनीता विल्यम्स जैसी ऐसी बहुत सारी महिलाएँ हो चुकी हैं, जो कर्तृत्व और गुणों के, बुद्धी के बल पर यश के शिखर तक पहुँच चुकी हैं ।

इस पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं पर अत्याचार निरंतर चल तो रहे हैं । ऐसे



संदर्भ में तो पुरुष 'रसिक' हो जाता है तो महिला 'व्यभिचारी' बन जाती है। यह कैसा विपन्याय है कि अत्याचारित महिला को समाज में कोई स्थान नहीं है जब कि पुरुष वही 'राजरोष' जीवन व्यतीत करता है। इसी को 'प्रधान' कहा जाता है।

आज की स्त्रियां प्रगति पथ पर चल रही है। न्यायालयीन कानून सुरक्षा, जीविका, वहेज बली कानून, महिला सुरक्षा कानून इ.। अनेक कानून स्वागतार्ह हैं। अब जरूरत इस बात की है कि सौ प्रतिशत इसपर अमल हो रहा है की नहीं? क्योंकि इसके बावजूद भी आज महिला सुरक्षित नहीं है ये तो सिर्फ कहने की बात है कि आज की नारी पुरुषों के कंधों से कंधा मिलाकर चल सकती है। घर के बाहर स्त्री अभी भी खुद को सुरक्षित मेहसूस नहीं कर पा रही है। इस देश की महिला जब तक सुरक्षित नहीं है देश सुरक्षित नहीं होगा। एक महिला खुद

को जब तक 'सेल्फ प्रोटेक्टिव्ह' नहीं बना पाएगी वह आगे बढ़ नहीं पाएगी।

इस के लिए महिलाओं ने भी कुछ हद तक अपने आपको मजबूत बनाना चाहिए। भारत-माता, धरती माता जैसी शक्तियाँ आपके सामने हैं इसलिए खुद को कमजोर न समझो अपनी आँखें पोछनेवाली इ-मेज बदल डालो।

कही दर्द है कही निशानी  
कुछ जानी है कुछ पहचानी।

मरहम लगाकर हर जखमों को,  
स्त्री तेरी यही कहानी ॥

ये नारी इस कविता की पंक्तियों को बदलकर रख तू  
अबला से सबला बन जाएगी और अपनी सही पहचान,  
सही अस्तित्व बरकरार रखने में कामयाब हो जाएगी।

### शेरे-शायरी

नदी में बहता है उसे नीर कहते हैं,  
सरहद पर लड़ता है उसे वीर कहते हैं,  
ज्ञानामृत है जिसमें उसे सिर कहते हैं,  
मिले जो आप जैसे गुरु उसे तकदीर कहते हैं।

धूप में जलना कोई सूरज से सीखें,  
खुशबू देकर मुरझाना कोई फूलों से सीखें,  
दोस्ती करना हमसे और निभाना आपसे सीखें,  
हिंदी की गरिमा कोई हिंदी प्रेमी से ही सीखें।

सुबह-सुबह सूरज का साथ हो,  
गुणगुणते परिंदों की आवाज है।  
मन में मुराद और यादों में कोई खास हो,  
उस खुबसूरत सुबह की पहली याद आप हो।

टुकराएगा तुझे हर एक इन्सान,  
लेकिन ऊपरवाला है बड़ा मेहरबान।  
होती है यहाँ पल-पल नाइन्साफी,  
नाराज न होना, खुदा है बड़ा इन्साफी।

झूठी तसल्ली देनेवाला इतिहास बदल सकते हैं हम,  
सच्चाई से हार को जीत में बदल सकते हैं हम,  
अगर हमारे हौसले बुलंद हो,  
तो आसमान को भी छू सकते हैं हम।

कलाकार कभी मरता नहीं,  
उसे दफनाया जाता है,  
उसकी कब्र खोदकर देखो,  
उसे लालियों का इंतजार रहता है।  
अक्षय राजू किरवले, ११ वी कला (ब)





## दलित साहित्य : एक चिंतन

कु.निकीता कांबळे, १२ वी कला (क)

हिंदू संस्कृति के प्रारंभ काल से चली आई वर्ण-व्यवस्था ने समाज का विशिष्ट वर्ग में विभाजन किया गया। इसका नतीजा समस्त दलित वर्ग एवं स्त्रियों को भुगतना पड़ा। समतामूलक समाजव्यवस्था का निर्माण करने का प्रयास डॉ.बाबासाहब आंबेडकरजी ने अपने साहित्य द्वारा किया। दलित साहित्य में किसी भी प्रकार की काल्पनिकता, कृत्रिमता और दिखावा नहीं है। वह दुनिया के समस्त दलितों की वेदना को मुखर करता है। इसलिए वह शत-प्रतिशत मानवतावाद पर टिका हुआ है। दलित साहित्य मनुष्य के कल्याण, समानता, स्वतंत्रता, समता, भाईचारा और सामाजिक न्याय का संदेश देता है।

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति दुनिया में महान समझी जाती है। सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित भारतीय जीवनप्रणाली अपने गुण विशेषताओं के कारण दुनिया में आज भी चर्चा का विषय रही है। मानवीय मूल्य मानों भारत की धरोहर हैं। परंतु, महान समझी जानेवाली भारतीय संस्कृति हिंदू धर्म में निहित जाति-पाँति, उच्च-नीचता तथा अस्पृश्यता के बदीलत दलितों पर होनेवाले अन्याय-अत्याचारों के कारण बदनाम है। वेदों में पुरुषसुक्त चार वर्ण थे - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इसी ने विषमता को तत्त्वज्ञान का अधिष्ठान दिया गया उसका नाम है - ब्राह्मणवाद।

मनुष्य को अज्ञान के अंधेरे में टुकेलना, उसे जन्म से मृत्यु तक कैद में रखने की साजिश, शूद्रों को बहिष्कृत करना ऐसा इन्सानियत के खिलाफ दृष्टिकोण था। इसी धरातल पर आंबेडकरवाद का जन्म हुआ। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय और धर्मनिरपेक्षता इन पंचशील तत्त्वों पर आधारित दलित साहित्य का निर्माण हुआ। डॉ.दामोदर मोरे के शब्दों में जहाँ ईश्वर को बड़ा किया और आदमी को छोटा, ऐसा ईश्वर कैसा ? आंबेडकरवाद इन्सान को महत्त्व देता है।

डॉ.दामोदर मोरेजी के शब्दों में -

“मैं कैसे जिंदगी में हूँसू ?

गरीबी ने दिए हैं सिर्फ आँसू,



उन्होंने मेरी मुस्कान कहीं कैद रखी है,  
उसे मैं ढूँढ रहा हूँ।”

हिंदू धर्म की कट्टरता के कारण प्राचीन काल से मनु के आदेशानुसार ‘न स्त्री स्वातंत्र्यं अर्हति’ याने स्त्री स्वतंत्रता उपभोगने लायक नहीं है। संत कवि तुलसीदास के वचनानुसार -

“ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी,  
ये सब ताड़न के अधिकारी।”

इसका मतलब यह है कि हिंदू जीवनप्रणाली में स्त्री और शूद्रों को किसी भी बात की स्वतंत्रता नहीं थी। इसी कारण प्राचीन काल से स्पृश्य-अस्पृश्यता के नाम पर तथा स्त्री-पुरुष भेदाभेद के बहाने स्त्रियों और दलितों पर अनन्वित अन्याय-अत्याचार हुए हैं।

दलित समाज के दुःख का प्रमुख कारण अज्ञान और निरक्षरता है। हिंदू संस्कृति के प्रारंभ काल से चली आई वर्ण-व्यवस्था ने समाज को विशिष्ट वर्ग में बाँटा गया। उस जमाने का क्षत्रिय राजा होने पर भी ब्राह्मण के पैर छूता था। वैश्य समाज धन कमाने पर भी क्षत्रिय और ब्राह्मणों के आगे झुकता था। शूद्रों को तो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों वर्गों की सेवा के लिए अपना जीवन गुलामी में बिताना पड़ता था। धर्म-मार्तंडों की दृष्टि से भगवान ने शूद्रों को अन्य तीन वर्गों की सेवा के लिए ही निर्माण किया है। इस पर श्री.बदलूराम ‘रसिक’ वर्णवाद पर चोट करते हुए आगाह करते हैं -

‘धरम रूप पाखण्ड हमको दिखाकर,  
छूआछूत के बल से निर्बल बनाकर,  
हमें तूने फितरत से मारा।  
मिटा दो जमाने में फुनवा परस्ती,  
मिटा दो ये जातीयतावाली बस्ती,  
मिटा दो गरीबों की फाका परस्ती,  
तभी तो ‘रसिक’ देश होगा हमारा।”

प्राचीन भारत की इस प्रकार की धार्मिक और सामाजिक स्थिति के कारण सदियों से अछूत और पिछड़े दलित वर्गों पर अन्याय-अत्याचार होते रहे। भूख, गरीबी और अज्ञानरूपी अंधकार में यह समाज तड़फता रहा। इस पर म.ज्योतिबा फुलेजी ने कहा है यह सब केवल अज्ञान के कारण हुआ है। अतः स्पष्ट है कि ब्राह्मण वर्ग ने समाज के दलित वर्ग को ज्ञान से दूर रखा। ज्ञान के अभाव में दलित वर्ग अपनी उन्नति नहीं कर सका। परिणामतः दलितों पर समाज के अन्य वर्गों का ऐसा प्रभाव रहा कि जिसके कारण उन्हें जानवरों से भी बदर जीवन जीना पड़ता था। राजर्षि शाहूजी ने शिक्षा की बुनियाद खड़ी की। भारत में सर्वप्रथम दलितों के मसीहा डॉ.बाबासाहब आंबेडकरजी ने दलितोद्धार का कार्य किया। डॉ.आंबेडकरजी ने अपने लेख और किताबों के माध्यम से हिंदू धर्म की गहन चिकित्सा की। सभी मानव एक समान हैं और सभी को एक जैसा जीवन जीने का अधिकार है। समतामूलक समाजव्यवस्था का निर्माण करना यही लक्ष्य आंबेडकरजी के साहित्य में प्रतिबिंबित होता है।

वास्तविकतः दलितों के अपार दुःख के हुंकार को अभिव्यक्त करनेवाले डॉ.बाबासाहब आंबेडकरसहित म.ज्योतिबा फुले, संत कबीर, गुरु रविदास तथा पेरियार रामा स्वामी आदि के सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन के कारण सन १९६० के दशक में महाराष्ट्र की भूमि पर क्रांतिकारी दलित-साहित्य का जन्म हुआ। इतना ही नहीं, इस दलित साहित्य का प्रवाह संपूर्ण भारत में पहुँच गया और बाद में वह दुनियाभर फैल गया। भारत के दलित साहित्यिकों ने जो साहित्य निर्माण किया उसका मूल आधार उनका स्वानुभव है। अपने जीवन की सच्चाईयाँ और जीवन के हर कष्ट का प्रत्ययकारी चित्रण इस साहित्य में दिखाई देता है। वह दुनिया के समस्त दलितों की वेदना को मुखर करता है। इसलिए वह शत-प्रतिशत मानवतावाद पर टिका हुआ है। दलित साहित्य मनुष्य के कल्याण,



समानता, स्वतंत्रता, समता, भाईचारा और सामाजिक न्याय का संदेश देता है।

बाबासाहब आंबेडकरजी ने दलित समाज में जागृति निर्माण करने के साधन के रूप में जो साहित्य का निर्माण किया, वह आज मानवजाति के लिए एक अमूल्य धन साबित हुआ है।

‘शिक्षित बनो, संगठित हो और संघर्ष करो।’ यह महान मंत्र दिया।

आंबेडकरजी का यह मूलमंत्र उनके साहित्य में जगह-जगह प्रतिबिंबित हुआ है। सभी को समान अधिकार, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा और ज्ञान तथा रोटी, कपड़ा और मकान ये बुनियादी जरूरतें आसानी से उपलब्ध हो और आबादी के हिसाब से देश की सत्ता और संपत्ति में बराबर की भागीदारी हो, यह दलित समाज साहित्य की प्रमुख माँग है। यह माँग सामाजिक समता और न्याय की पहली सीढ़ी है। इस पर डॉ.एन.सिंहजी ने कहा है -

“सतह से उठते हुए मैंने जाना कि,  
इस धरती पर किए जा रहे श्रम में,  
जितना हिस्सा मेरा है, उतना ही हिस्सा  
इस धरती के हवा, पानी और उससे उत्पन्न  
होनेवाले अन्न और धर्म में भी है।”

- दलित चेतना (कविता)

दलित साहित्य की अनुभूति परंपरागत साहित्य से बिल्कुल अलग है। हिंदी दलित साहित्य के प्रमुख श्री ओमप्रकाश वाल्मिकी अस्पृश्यता पर तीखा प्रहार करते हुए लिखते हैं -

“जिस रास्ते से चलकर तुम पहुँचे हो इस धरती पर,  
उसी रास्ते चलकर आया मैं भी,  
फिर तुम्हारा कद इतना ऊँचा कि आसमान को भी  
छू लेते हो तुम आसानी से।  
और मेरा कद इतना छोटा कि

मैं छू नहीं सकता जमीन भी।”

आंबेडकरवादी साहित्य सामाजिक प्रतिवाद के बलबूते पर खड़ा है। खुशबू को ये भूलना नहीं चाहिए कि मैं फूल के कारण हूँ। वैसे मनुष्य को भी यह भूलना नहीं चाहिए कि मैं समाज के कारण हूँ। क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुलेजी की कविता में सृष्टि-सौंदर्य बोध है और यही सौंदर्यबोध आंबेडकरवाद के सौंदर्य शास्त्र का है। अतः डॉ.इंद्रबहादुर सिंह कहते हैं - सौंदर्यशास्त्र की व्याख्या दलित-साहित्य की दृष्टि से की जानी चाहिए।

श्री.हरिकिशन संतोषीजी की ‘पीड़ा’ कविता में फैलकर गहरी अभिव्यंजना की गई है। वे कहते हैं -

‘वे शबरी के जूटे बेर खा  
‘राम’ हो गए,  
हम सदियों तक जूटन खाते रहे,  
और ‘बदनाम’ हो गए।

दलित साहित्य भोग, भाग्य, भय, भ्रष्टाचार के खिलाफ है, जो महात्मा बुद्ध से आया है।

डॉ.आंबेडकरजी के धर्मांतरण पर भी मत-मतांतर दिखाई देता है। लेकिन सत्य यह है कि अगर धर्मांतर नहीं होता तो बड़े पैमाने पर साहित्य का निर्माण भी नहीं होता और दलितोद्धार भी नहीं होता। पत्रकार और कवि श्री मोहनदास नैमिशराय इन्हीं भूखो-नंगों के विषय में कहते हैं -

“एक दिन  
यह भूखा-नंगा असभ्य-सा दिखनेवाला  
आदमी लाल किले की सबसे ऊँची  
बुर्ज पर लकीर खींचेगा।  
अपना हिसाब साफ करने के लिए।”

डॉ.चंद्रलेखाजी ने अपने ‘निष्कासन’ और ‘ग्रहण’ किताबों में लिखा है -



“पाच हजार सालों की संस्कृति में हमने मनुष्यों को मनुष्य बनने से रोका, चाहे वह दलित हो या नारी.....बार-बार परिधि से केंद्र में आने से रोका गया या रूकवाया गया। हाशिए पर ही रखा गया धकेला भी गया पर उन दोनों को आज भी अपनी मनपसंद ज़िदगी उपलब्ध नहीं हुई। जाति का अभिशाप आज भी उतना ही बलवान है। उन पात्रों की मानसिक पीड़ा, यातना, संविधान के हक्कों के बावजूद भी व्यवहार में वे हक्क बेजान हैं। कायवों को धोलकर उसके रसायन से ही जाति के नाम पर उन्हीं धोल से मनुष्यता के खिलाफ समितियाँ बनाई जा रही हैं। यही हमारे समाज का ग्रहण है। जब जातिवाद के ‘ग्रहण’ को ‘निष्कासन’ मिलेगा तभी हमारा देश समग्रता से आगे बढ़ पायेगा।” बहुत

### कबीर के दोहे

करण कांबळे  
१२ वी कला (ब)



बार यह भी होता है कि दलितों को सामाजिक अन्याय और मानवीय अवहेलना दोनों भोगने पड़ते हैं। परिवेश का संन्यास उन्हें आत्महत्या करवाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चेतना कोई भी हो उसे देश, धर्म, वर्ग, जाति आदि संकीर्ण परिभाषाओं से निकालकर विश्व के तमाम वंचितों से जोड़ना आज के साहित्यकार का सही लक्ष्य माना जाएगा। इस प्रकार महाराष्ट्र में जली हुई दलित साहित्य की ज्योति ने दुनिया भर में फैलकर दलितों के कठोर और दुःखद जीवन पर प्रकाश डाला है। दलित साहित्य की अनुगूँज आज भारत में ही नहीं अपितु आंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी सुनी जा सकती है।

सद्गुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार,  
लोचन अनंत उधाड़िया, अनंत दिखावन हार।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय,  
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताय।

जाति-पाति पुछे नहीं कोय,

हरि को भजे सो हरि का होय।

पत्थर पूजे हरि मिलै तो मैं पुजूँ पहार,  
ताते वह चाकि भली पीस खाय संसार।

पोधि पढ़ि-पढ़ि जगमुआ, पंडित भया न कोई,  
झाई अखर प्रेम के पदे, सो पंडित होई।

नारी की छाई परत अंधा होत भुजंग,

कबीरा तितकी कौन गति, जो नित नारी के संग।

जल में कुंभ, कुंभ में जल है, भीतर-बाहर पानी,

फटा कुंभ जल-जल हि समाना, यह तथ जानो ज्ञानी।

अक्षयपुरुष इक पेड़ है, निरंजन वाकी झर,

त्रिदेवो शाखा भये, पात भया संसार।

कहत कबीर निर्मल भया ज्यों गंगा का नीर,

पाछे-पाछे हीर फिरै, कहत कबीर-कबीर।





### राष्ट्रभाषा हिंदी

हर भाषा से न्यारी हिंदी,  
जग में सबसे प्यारी हिंदी ।  
इसका मोहक रूप, तभी तो,  
सभी को लगे दुलारी हिंदी ।

जन-जन की इसमें है आशा,  
जन-मन को इसमें अभिलाषा ।  
देती सही अर्थ में हिंदी,  
भारत की सच्ची परिभाषा ।

इसमें सूर-नंद के पद हैं,  
कबीर, नानक के सबद हैं ।  
इसमें प्रेम भक्ति की धारा,  
तुलसी, रैदास के छन्द हैं ।

संस्कृति का साधन है इसमें,  
जीवन की धड़कन है इसमें ।  
इसमें बालकृष्ण की लीला,  
राधव का वचन है इसमें ।

खुशियों का इतिहास इसमें,  
पर्वों का उल्लास इसी में ।  
इसमें है संदेश कर्म का,  
जीने का विश्वास इसमें ।

प्रशस्त अब हिंदी का पथ है,  
बढ़ा विश्व में इसका रथ है ।  
पीछे इसे न हटने देंगे,  
आज ही संकल्प-शपथ है ।

निलोफर तांबोळी  
११ वी कला (क)

### प्यारी माँ भारती

गीत तुम्हारा हम गाते हैं  
कोटी नमन तुझे समर्पित हैं  
ओ प्यारी माँ भारती  
ओ प्यारी माँ भारती ॥

जीना हमने सीखा है  
माँ जिजाऊ से,  
मरना हमने सीखा है  
वीर बाजी प्रभु से,  
ओ प्यारी माँ भारती ॥ १ ॥

लड़ना हमने सीखा है  
वीरंगना झाँसी की रानी से,  
जीतना हमने सीखा है  
छत्रपती शिवाजी राजा से,  
ओ प्यारी माँ भारती ॥ २ ॥

राज करना हमने सीखा है  
सम्राट अशोक से,  
न्याय हमने सीखा है  
आचार्य चाणक्य से  
ओ प्यारी माँ भारती ॥ ३ ॥

समता, विश्वबंधुता हमने सीखी है  
भारत के संविधान से,  
त्याग, सेवा, समर्पण हमने सीखा है  
देश के शहीदों से ।

गीत तुम्हारा हम गाते हैं  
कोटी नमन तुझे समर्पित हैं  
ओ प्यारी माँ भारती  
ओ प्यारी माँ भारती ॥ ४ ॥

कु.सुप्रिया खिलारे  
११ वी कला (ब)





## दोस्ती

दोस्ती तो एक इत्तफाक है,  
ये तो दिलों की मुलाकात है,  
दोस्ती नहीं देखती ये दिन है या रात है,  
इसमें तो सिर्फ वफादारी और जज्बात हैं ॥ १ ॥

फूल बनकर मुस्कराना जिदगी है,  
मुस्कराकर गम भूलना जिदगी है,  
मिलकर खुश हुए तो क्या हुआ,  
बिना मिले ही रिश्ते निभाना जिदगी है ॥ २ ॥

अपनी दोस्ती फूलों की तरह ना हो,  
जो एक बार खिले और मुरझा जाए ।  
अपनी दोस्ती तो काँटों की तरह हो,  
जो एक बार चुभे तो बार-बार याद आए ॥ ३ ॥

शेर बोलकर शायर बन जाते हैं,  
प्यार करके दिलबर बन जाते हैं,  
सच्चाई और वफादारी से  
अच्छे दोस्त बन जाते हैं,  
जो जीवनभर दोस्ती का साथ निभाते हैं ॥ ४ ॥

कु.अक्षता कदम  
११ वी विज्ञान

## मेरे गुरु

कोई कहे गुरू तो कोई कहे अध्यापक  
ज्ञान भंडार है आपका विस्तृत और व्यापक  
सच कहूँ तो आप है हमारे जीवन स्थापक ॥

आपने ही हमें जीना सिखाया,  
आपने ही हमें सद्दययी बनाया,  
सोचता हूँ,  
कहाँ जिदगी का आरंभ और कहाँ अंत,  
दिल की गहराइयों में झाँक के देखा,  
तो पाया, आप ही दाता, आप ही भ्राता ।  
आप ही हमारा भविष्य और आप ही जीवनदाता ॥

जनम दिया हमें माताजी ने,  
कर्म दिया हमें पिताजी ने,  
जनम मिला, कर्म मिला,  
लेकिन सफलता का जीना सिखाया आपने  
आपत्तियों से जूझकर लड़ना सिखाया अपने ॥

आप दियों की बाती-सा जलते हैं,  
ज्ञानप्रकाश की प्रेरणा हमें देते हैं,  
गरीबों, बहुजनों के लिए जीते हैं,  
इसलिए हम आप में ही ईश्वर पाते हैं ॥

बस, यही तमन्ना रखता हूँ,  
अनंत है आपका ज्ञान भंडार ।  
आप में ही बसा है विश्व का प्यार ।  
आपके गुरुवचनों पर ही  
करता रहूँगा विश्वसंचार और ज्ञान प्रसार,  
जिदगी की राह पर यूँ ही मिलते रहिए बार-बार ॥

प्रमोद सोनटक्के  
१२ वी कला



बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

**ENGLISH  
SECTION**

EDITOR :  
Prof. Vaibhav P. Agale



'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

**LAL BHADUR SHASTRI COLLEGE  
SATARA**

"If You Love and get hurt,  
Love more.  
If You Love more and hurt more,  
Love Even more.  
If You love even more and  
get hurt even more,  
Love some more  
until it hurts no more....."

*- William Shakespeare*



# INDEX

## PROSE SECTION

- |  |                                  |               |     |
|--|----------------------------------|---------------|-----|
| 1) My Favourite Leader :<br>M. K. Gandhi | Narendra G. Bhosale              | 12th Commerce | 141 |
| 2) Dnyanjyoti Savitribai Phule           | Rahul S.Jadhav                   | 12th Commerce | 143 |
| 3) Happy Family                          | Disha Anil Shaha                 | 11th Arts     | 145 |
| 4) Why Students<br>Fail in Exam ?        | Rahul Gandhi<br>Disha Anil Shaha | 12th Arts     | 146 |

## POETRY SECTION

- |                       |                 |           |     |
|-----------------------|-----------------|-----------|-----|
| 1) Value of Time      | Muskan H.Sayyad | 12th Com  | 145 |
| 2) A Teacher          | Tanvi Khaladkar | 11th Sci. | 145 |
| 3) Work Like a Master | Aftab A.Shaikh  | 11th Arts | 145 |





## My Favourite Leader : M. K. Gandhi

Narendra Gorknath Bhosale, 12th Commerce

Mohan Das Karamchand Gandhi, later known as Mahatma Gandhi, is my favorite leader. He was one of the greatest figures of world history. We lovingly and reverently call him the father of the nation. He was born in 1869 at Porbander, a well known place in the state of Kathiyawar. His father was the Diwan of the state. He was a straight forward honest man who cared more for righteousness than for worldly position or wealth. Gandhiji's mother was a pious and religious lady.

In his early years Gandhiji was a very shy child. He avoided all company. The anecdotes related about his childhood show that he was a regular student and a lover of truth. After passing his Matriculation Examination, he first studied at a College in Bhavanagar and then proceeded to England to study law. In London he made the acquaintance of Mrs Besant, the famous Theosophist leader and read the works of great Russian reformer, Tolstoy. Tolstoy's teachings had deep effect on his mind. He returned from England as a barrister. After a brief legal practice in India, he went to South Africa to plead a legal case.

In South Africa he found Indians suffering from many disabilities. His patriotic feelings were hurt and aroused by the treatment of Indians in South Africa. He had been inspired by the writings of Tolstoy. He had learnt from them two doctrines of civil disobedience and passive resistance. On these principles he waged a peaceful campaign against the South African Government. He was thrown into jail. Some time after his release he came to India.



He had faith in British justice. It took him some time to realise that British justice came into play after organised resistance to British rule. His life was a busy one. In a brief essay full justice cannot be done to such a life. He was shocked and horrified by the massacre of Jalianwala Bagh. He started the Non co-operation Movement in 1920, which shook India from end-to-end. His extraordinary work in India attracted worldwide attention. The leadership of Indian National Congress passed into his hands. A silent revolution took place in the mental, moral and political life of India. Many top ranking Indians and the masses joined his movement. Indian political life came to have a mass contact under his leadership.

The guiding principles of his life were truth and non-violence. He preached the noble doctrine that means one should be as clean as the water. Wrong means did not justify the right end. His efforts for Indian independence were crowned with success in 1947. India was partitioned to his great regret. He died a heroic martyr's death, when he was shot dead by an assassin's bullet. Not only India but the whole world was made poorer by his death.

His efforts to uplift the Harijans and Adivasees will always be remembered.

He tried to remove untouchability from India. With a view to make the people come in contact with Harijans he kept a Harijan cook. He stayed with Harijans. He started a magazine named 'Harijan'.

Gandhiji was the most popular leader. Daily came to him thousands of letters and hundreds of visitors. Every visit was timed by the Mahatmas' nickel-plated dollar watch hanged from a cord which held up his loin cloth. Most Indians bowed low before Gandhiji when they came into his presence.

Congress Chief Ministers of Indian provinces came for his advice and instructions. Educators came to test their ideas with him. Whoever had a new scheme sought his blessings. Individuals came to get help in solving their personal problems. Gandhiji had marvellous energy. He never went to bed before ten. His firm conviction was that if one prayed more one slept better. In talking to Gandhiji one saw the entire world in the mirror of India. He had submerged himself in Indians. That is why he was the most loved and the most influential man in India. Hindus worship one God, but they also worshipped many gods and idols and there were idols of Gandhiji in some Hindu temples. So M.K.Gandhi is My favourite leader.





## Dnyanjyoti Savitribai Phule

Rahul Shivaji Jadhav, 12th Commerce

Savitribai Phule was a famous social reformer of India who was born in the family of an affluent farmer. She was born on 3<sup>rd</sup> January, 1831 in a small village Naigaum of Satara district, Maharashtra And married with Jyotiba phule at a very tender age of 9. Savitribai Phule was the first female teacher of India's foremost women's school. Savitribai Phule was also a poet and was considered a pioneer of Marathi poetry. Her husband encouraged her to get proper education and engage herself in the liberation of the female folk of Naigaum. In the year 1852, a school for untouchable girls was opened by her.

Savitribai Phule was one of the most important personalities who contributed considerably in adding glory to the mission of modern Indian social scenario. Jyotirao Phule, her husband, needed some female teachers to join his bandwagon of his reform works. Thus, he taught and trained his wife as a teacher. Slowly the news of his teaching Savitri reached his father who threatened to drive him out of his house, fearing attack from orthodox elements. When the choice before Savitribai was either going away with her husband or staying back with orthodox her in-laws, she preferred to be with her husband. After that her husband sent her to a training school. She passed out with flying colours. After completing her studies, Savitribai Phule opened a school in Pune for girls in the year 1848. Initially, nine girls enrolled themselves as students and they belonged to different castes. She used to leave for the school early in the morning. Orthodox society was not prepared for this 'misadventure', as woman's education was frowned upon.



#### Education of Women-

Savitribai Phule continued with teaching the girls despite all oppositions from the society. She was even abused by the orthodox society. She lost all courage after facing such ill treatments and even determined to give up but she continued only because her husband's support. In spite of the entire ordeals, she continued with her teaching. Slowly and gradually, she established herself. Eventually, Savitribai Phule was honoured by the British government for her contribution to education. In 1852 Jyotiba and Savitribai were felicitated by the government for their commendable efforts in the field of education.

#### Other Social Reforms of Savitribai Phule-

Savitribai Phule not only contributed in the educational activities, but also supported her husband in every social struggle that he launched. Once Jyotiba stopped a pregnant lady from committing suicide and promised her to give the child his name, after it was born. Savitribai and Jyotiba later on adopted the child. This particular incident brought new horizons and the couple took serious steps for the troubles of widows in the society.

The next step was equally revolutionary. During those days marriages were arranged between young girls and old men. Men used to die of old age or some sickness and their young widows lived a weary life. Savitribai Phule and Jyotiba were moved by the condition

of the widows as well as by the condition of untouchables in the society. Thus, Savitribai Phule shared every activity in which her husband was engaged. She suffered alike with him but she maintained own distinctive personality. After his death, she took over the charge of Satya Shodhak Samaj.

#### Publications of Savitribai Phule-

Savitribai's poems and other writings are still an inspiration to others. Her two books of poems 'Kavya Phule' in 1934 and 'Bavan Kashi Subodh Ratnakar in 1982' were published.

#### Personal Life of Savitribai Phule-

Ten years before Pandita Ramabai was born, this lady who was born in the backward Mali community, could express herself in the most radical and eloquent terms. She was the first woman teacher, the first woman educationist, the first poet and the foremost emancipator of women. If Savitribai were not to undergo the ordeals she went through, the women of India would not have attained even the status they have today in society.

Savitribai Phule worked enormously for social reform. During the time of epidemic, she herself fed around two thousand children. However, she also suffered from the disease and passed away on 10th of March, 1897. Her name would be scripted in gold whenever history of women development would be accounted.





### Value of Time

To realize the importance of "One Year."  
 Ask a student who has failed in his exams.  
 To realize the importance of "One Month."  
 Ask the mother who has delivered a premature baby.  
 To realize the importance of "One Day".  
 Ask a daily wage worker standed due to bench  
 To realie the importance of "One Second."  
 Ask person who has survived an accident.  
 To realize the importance of "One Millisecond."  
 Ask the athlete who had to condend with  
 Silver in the olympics.

**Muskan Hamid Sayyad**  
 12<sup>th</sup> Com

### Happy Family

There is a happy family in the field of English grammar. A husband named noun and a wife named verb live in the house of grammar, Verb is the life partner of noun. They have two sons and one Daughter. The elder son takes his place when his father is absent. So people call him pronoun. The younger son adjective is a poet. He often describes many things whereas his sister adverb often talks about her mother and describes her. There is a servant in that house. He is a joker. People call him interjection. He does many things which amuse people. Noun has a brother-in-law named preposition. He often helps him by showing him his position in life. Conjunction is a dear friend of the family and he helps them to make friends. Thus, the family lives Happily.

**Disha Anil Shaha**  
 11<sup>th</sup> Arts

### A Teacher

A teacher is one who,  
 Loves everyone  
 She scolds for our good  
 The whole day and night.  
 Explaining to us what,  
 Is wrong and right  
 But persistently stays  
 By our side.  
 Members of a teacher  
 Stay with us Life long  
 But the excellence  
 of a teacher stays that can  
 Never be forgotten  
 Because she is considered  
 As a second parent

**Tanvi Khaladkar**  
 11<sup>th</sup> Sci.

### Work Like a Master

Flattery, jealousy,  
 Pettiness and greed  
 These are the traits of  
 An eternal slave  
 Who works under pressure  
 But thinks he is brave  
 Never is he happy  
 Heart full of wants  
 Why do you fear  
 Be bold and brave  
 Work like a master,  
 Don't be a slave.

**Aftab Ayaj Shaikh**  
 11<sup>th</sup> Arts





### ***Why Students Fail in Exam ?***

It's not the fault of the student if he/she fails the year has only 365 days.  
Typical academic year for a student has  
52 Sundays in a year which are rest days.

Balance 313 days.

Summer holidays 50 where weather is too hot and difficult to study.

Balance 263 days.

8 Hour daily sleep means 122 days.

Balance 141 days.

1 Hour for daily playing good for health means 15 days.

Balance 126 days.

2 Hour daily 1 for food and other delicacies.

(Chew Properly and eat) means 30 days.

Balance 96 days.

1 Hour for talking Chuman is a social animal means 15 days.

Balance 81 days.

Exam day per year, at least 35 days.

Balance 46 days.

Quarterly, half yearly and festival holidays means 40 day so.

Balance 6 days.

For sickness at least 3 days.

Balance 3 days.

Movies and Functions at least 2 days.

Balance 1 day

That 1 day is your birthday.

How can a student pass ???

**Writer-Rahul Gandhi**  
**Disha Anil Shaha**  
11<sup>th</sup> Arts



बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय



बहादुरीय

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे

बहादुरीय

बहादुरीय

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय  
सातारा

संस्कृत  
विभाग

विभागीय संपादक  
प्रा. व्ही. एस. अंबवले

स्वित्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय ॥

मेघदूत - महाकवि कालिदास

खरोखर रिकामे सर्व क्षुद्र मानले जातात.

सास्युक्त असणे श्रेष्ठतेला कारणीभूत होते.



## अनुक्रमणिका

### गद्य विभाग

- |                              |               |              |     |
|------------------------------|---------------|--------------|-----|
| १) बुद्धिपरिक्षा             | कु.रेखा शिंदे | ११ वी आर्टस् | १४७ |
| २) मशका: किमर्थ न नीतवन्तः ? | किरण सपकाळ    | ११ वी कला    | १४८ |
| ३) विनोदकथा: ।               | किरण सपकाळ    | ११ वी कला    | १४७ |
| ४) मा विस्मरतु               | किरण सपकाळ    | ११ वी कला    | १४७ |





## बुद्धिपरिक्षा

कु.रेखा शिंदे, ११ वी आर्टस्

कुसुमपुरं नाम नगरम् । तत्र 'नन्दः' नाम राजा आसीत् । सः नृपः नन्दः अतीव बुद्धिवान् ।

'नन्दस्य बुद्धीपरीक्षा करणीया' इति एकदा तदाचितानां राजाम् इच्छा जाता । तदर्थं ते मुद्राङ्किताम् एकां सुवर्णपिटिकां तस्मै प्रेषिवन्तः । पिटिकायाः अन्तः एकः दारुखण्डः आसीत् । एक पत्रम् अपि तत्र आसीत् । पत्रे एवं लिखितम् आसीत् । "अस्य दारुखण्डस्य मूलभागः कः अग्रभागश्च कः इति सूचनीयम्" इति ।

अनेके बुद्धिमन्तः आगताः । पत्रैः स्थितं प्रश्नं पठितवन्तः । किन्तु उत्तरं न ज्ञातवन्तः ।

चन्दनदासः कश्चन श्रेष्ठः वणिक् । तस्य गृहे 'सुबुद्धिः' इति कश्चित् आसीत् । सः पत्रवृत्तान्तं श्रुतवान्, राजसमीपम् आगतवान् च ।

सुबुद्धिः नन्दम् उक्तवान् "महाराज ! अत्र विचारणीयं किम् अस्ति ? तं दारुखण्डं जले निक्षिपतु । यः भागः जले निमज्जति सः मूलभागः यतः मूले एव भारः भवति । यः भागः जलस्य उपरि प्लवेत सः अग्रभागः" इति ।

अनेन राजा सन्तुष्टः । सः सुबुद्धिम् एव मन्त्रिपदे नियोजितवान् । सः एव सुबुद्धिः एकस्मिन् युद्धे भयं विना घोरं युद्धं कृतवान् । ततः आरभ्य सः अमात्यराक्षसः इति प्रसिद्धः अभवत् ।

### विनोदकथाः ।

दण्डनं न इच्छामि  
पत्नी सन्तोषेण पतिम् उक्तवती -  
"अद्य आवयोः विवाहस्य दशमः वार्षिकोत्सवः ।  
अतः अद्य कुक्कुटं पचात्र" इति ।  
तदा पति उक्तवान् "न इच्छामि अहम् ।  
दशभ्यः वर्षेभ्यः पूर्वं मया कृतस्य दोषस्य कृते कुक्कुटस्य  
दण्डनं कर्तुम् अहं न इच्छामि ।"

किरण सपकाळ  
११ वी कला

### मा विस्मरतु

कश्चन वृद्धः आसन्नमरणः आसीत् ।  
तस्य निमित्तं वैद्यम् आनेतुं प्रस्थितः ।  
तस्य परमकृपनः पुत्रः पितरम् उक्तवान्  
"पितः ! भवतः निमित्तं वैद्यम् आनेतुं गच्छामि ।  
यदि भवान् मम प्रत्यागमनात् पूर्वमेव मृतः, भविष्यति तर्हि  
कृपया विद्युद्दीपं व्यजनं च निर्वापयितुं मा विस्मरतु !"

किरण सपकाळ  
११ वी कला





भवन्तः जानन्ति वा ?

- ☆ दशमान पद्धतिः भारते एव आरब्धा ।  
शून्यम् (०) आर्यभटेन अन्विष्टम् ।
- ☆ संस्कृतं सर्वेषां युरोपीयभाषाणां मातृभाषा अस्ति ।  
सा सङ्गक यन्त्रस्य तन्त्रांश निर्माणे अतीवोपयोगिनी  
अस्ति अपि ।
- ☆ अतिप्राचीना वैद्यकीयधारा आयुर्वेदः ।  
औषधविज्ञानस्य पितामहः चरकः सार्धं द्विसहस्रवर्षेभ्यः  
पूर्वम् एव आयुर्वेदविचारान् विविध चिकित्साक्रमान् च  
विस्तरेण वर्णितवान् अस्ति ।
- ☆ अतिप्राचीना कृषिनिमित्तं सज्जीकृता जलबन्धव्यवस्था  
सौराष्ट्रं आसीत् ।
- ☆ सुश्रुतः शस्त्रचिकित्साविज्ञानस्य पितामहः ।  
सः २६०० वर्षेभ्यः पूर्वम् एव शस्त्रक्रियां करोति स्म ।  
१२५ शस्त्रचिकित्साधनानि उपयुज्यन्ते स्म तेन ।  
वैद्यविज्ञानस्य विविधासु शाखासु तस्य परिनिष्ठितं  
ज्ञानम् आसीत् ।

कु.आयेशा इनामदार  
११ वी कला



**मशकाः किमर्थं न नीतवन्तः ?**

वसतिगृहस्य प्रबन्धकः पृष्ठवान्

“रात्रिः किं सुखेन यापिता भवता ?”

यात्रिकः उक्तवान् - “किं सुखेन यापनम् ? भवतः  
वसतिगृहस्य मशकाणां तावत् सामर्थ्यम् आसीत् यत् ते  
माम् एव उन्नीय नेतुं प्रयत्नं कृतवन्तः ।”

“किन्तु ते भवन्तम् उन्नेतुं न शक्तवन्तः । एवं ननु ?”

“तत्र कारणं तेषाम् असामर्थ्यं तु सर्वथा न । माम् उन्नेतुं  
समर्थाः एव आसन् ते । तथापि तैः अहं न उन्नीतः यत्  
तस्य कारणम् अधस्तात् मां मत्कुणाः हृदं गृहीत्वा आकर्षन्तः  
आसन् ।

किरण सपकाळ

११ वी कला



बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

बहादुरीय

अहवाल  
विभाग

विभागीय संपादक  
प्रा.ज्योती इनामदार

बहादुरीय

श्री. ज्योती इनामदार

स्वामी साहस्रनाम

उपनिषद् ३ एवम् इत्यम् ३३३

स्वामी इनामदार ३ एवम्



'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'  
शिक्षणमहर्षी डॉ. वापूजी साळुंखे

स्वामी इनामदार ३ एवम्

लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय

सातारा

उपनिषद् ३ एवम्-स्वामी इनामदार

उपनिषद् ३ एवम्-स्वामी इनामदार (१९९९)

उपनिषद् ३ एवम्-स्वामी इनामदार (१९९९)

उपनिषद् ३ एवम्-स्वामी इनामदार (१९९९)

उपनिषद् ३ एवम्-स्वामी इनामदार (१९९९)

उपनिषद् ३ एवम्-स्वामी इनामदार (१९९९)

उपनिषद् ३ एवम्-स्वामी इनामदार (१९९९)

“इतिहासाच्या पानावर

कोरायचे सुवर्ण अक्षर

भविष्यासाठी

शब्दा शब्दांचाच आधार”



## अनुक्रमणिका

१) जिमखाना विभाग	१४९
२) गुणवत्ता वाढ प्रकल्प कला व वाणिज्य	१५१
३) कला व वाणिज्य विभाग	१५१
४) प्राध्यापक प्रबोधिनी	१५३
५) वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण-कला व वाणिज्य	१५३
६) निबंध व वक्तृत्व विभाग	१५३
७) ज्यु.सायन्स/आर्ट्स/कॉमर्स भितीपत्रिका	१५४
८) लैंगिक अत्याचार निवारण समिती	१५४
९) सहल विभाग-कला व वाणिज्य	१५५
१०) विद्यार्थी संसद २०१४-२०१५	१५५
११) विद्यार्थी संसद प्रतिनिधी समिती	१५५
१२) सांस्कृतिक विभाग	१५५
१३) पालक शिक्षक संघ	१५६
१४) सांस्कृतिक विभाग (ज्यु.सायन्स)	१५६
१५) गएए/चक-उएढ विभाग-विज्ञान	१५७
१६) प्राध्यापक प्रबोधिनी (विज्ञान विभाग)	१५७
१७) ज्युनि. विज्ञान-शिक्षक-पालक संघ	१५८
१८) ज्युनियर सायन्स सहल विभाग	१५८



## कनिष्ठ विभाग वार्षिक अहवाल सन २०१४-२०१५

### जिमखाना विभाग

आपल्या महाविद्यालयाचा जिमखाना विभागाचा अहवाल म्हणजे बहादुर विद्यार्थी खेळाडूंची गौरवगाथाच. आपल्या खेळाडूंबद्दल सांगताना मी असे म्हणेन की,

अपने हौसलों के बल पर हम  
अपनी प्रतिभा दिखा देंगे  
भले कोई मंच ना दे हमको  
हम मंच अपना बना लेंगे  
जो कहते खुद को सितारा है  
जगमगाकर उनके सामने ही  
चमक कर देंगे उनकी फिकी  
और सूरज खुद को बना लेंगे

याप्रमाणे व शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांनी दिलेला चैतन्याचा मंत्र घेऊन जिद्द, आत्मविश्वास व दुर्दम्य इच्छाशक्तीद्वारे आमच्या महाविद्यालयाचे खेळाडू आपल्या कर्तृत्वाचा टसा राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय क्षेत्रामध्ये उमटवत आहेत.

यावर्षीही आपल्या खेळाडूंनी नेत्रदिपक कामगिरी केली आहे. महाविद्यालयाच्या परंपरेला साजेसा खेळ करत महाविद्यालयाचे नाव तर उंचावलेच व खेळातील उज्वल यशाची परंपराही कायम राखण्यात यश मिळवले.

यामध्ये विशेषकरून उल्लेख करावासा वाटतो तो आपल्या रस्सीखेच खेळाच्या संघाचा. रस्सीखेच खेळाडूंनी सराव करताना केलेली मेहनत तसेच स्पर्धेच्या वेळची सामान्यादरम्यानची चिकाटी व योग्य डावपेचांच्या आधारे

रस्सीखेचत जिल्हास्तरावर विजयश्री खेचून आणली व विभागीय स्पर्धेस संघ पात्र ठरला. त्यामुळे या संघाचे कौतुक करावे तितके थोडे आहे.

अशाचप्रकारे मुलींच्या खो-खो खेळाच्या संघाने देखील कौशल्यांचा व डावपेचांचा योग्य समन्वय घालून नियोजनबद्ध खेळ करत या संघाने तालुकास्तरावर उपविजेतेपद मिळवले. त्याबद्दल त्यांचेही कौतुक करावेसे वाटते.

### स्व्वाय :

आपल्या महाविद्यालयाचा स्व्वाय खेळाचा खेळाडू तेजस यादव याने आपल्या नावाला शोभेज अशी तेजस्वी कामगिरी केली. त्याने दिल्ली येथील राष्ट्रीय स्पर्धेमध्ये ब्रॉँझ पदक मिळवले. त्याने केलेल्या या नेत्रदिपक कामगिरीबद्दल सातारा जिल्हा क्रिडा अधिकारी कार्यालयाने त्याला खाशाबा जाधव पुरस्काराने सन्मानित केले. त्याच्या या कामगिरी व सन्मानामुळे महाविद्यालयाची राष्ट्रीय स्तरावर खेळाच्या बाबतीत विशेष ओळख निर्माण झाली.

### कुस्ती :

आपल्या महाविद्यालयाला कुस्ती खेळाची एक वैभवशाली परंपरा लाभलेली आहे. आपल्या महाविद्यालयातील मल्ल हे नेहमीच राष्ट्रीय व राज्यस्तरावर उत्कृष्ट कामगिरीने वेगळीच छाप पाडत असतात. महाविद्यालयाच्या परंपरेला साजेसा असा खेळ मल्लांनी यावर्षीही केला. प्रदिप सूळ याचा आत्मविश्वासपूर्ण खेळ व त्याने जिद्दीने केलेल्या कुस्त्यांमुळे दिल्ली येथील राष्ट्रीय



स्पर्धेत तो उपविजेतेपदाचा मानकरी ठरला. तर नामदेव कचरेने आपल्याजवळील ताकदीच्या जोरावर समोरील/विरोधी मल्लांवर अगदी सहजगत्या मात केली. तो राज्यस्तरावर उपविजयी ठरला. विकास सूळ, सागर सूळ व कुमार दडस या मल्लांनी विभागीय स्पर्धेपर्यंत मजल मारली. या मल्लांच्या यशस्वी कामगिरीमुळे राष्ट्रीय व राज्यस्तरावर महाविद्यालयाचा कुस्तीतील दबदबा कायम राहिला.

#### आर्चरी :

कुस्ती खेळाप्रमाणेच अलीकडच्या काही वर्षांमध्ये महाविद्यालयाच्या जिमखाना विभागातील आर्चरी खेळाची प्रगती जलदगतीने होत आहे त्यामुळे या खेळाची देखील वेगळी अशी गौरवशाली परंपरा निर्माण झाली आहे. आर्चरीच्या खेळाडूंची सरावाच्या वेळी अधिक परिश्रम करण्याची तयारी व अचूकतेच्या जोरावर ते राष्ट्रीय पातळीवर पोहचले आहेत. यावर्षाही प्रतिक्षा चोस्ट या विद्यार्थीनीने आर्चरी खेळाच्या परंपरेप्रमाणे खेळ करत एकाग्रतेने व चिकाटीने खेळताना राष्ट्रीय स्तरावर द्वितीय क्रमांक मिळवून महाविद्यालयाची शान वाढवली. तसेच शिवशंकर चोस्ट व रोहन कोटे यांनी राज्यस्तरीय स्पर्धेत उत्कृष्ट कामगिरी केली.

#### ज्युदो :

ज्युदो खेळामध्ये विकास सूळ या खेळाडूने आपल्या जवळील ताकद व डावपेचांचा सुरेख असा मेळ घालून खेळ केला त्यामुळे त्याची परभणी येथील राज्यस्तरीय स्पर्धेसाठी निवड झाली.

#### रायफल शूटिंग :

स्वतःमधील आत्मविश्वास व सरावातील सातत्य यामुळे प्रविण साळुंखे या खेळाडूच्या रायफलने पुणे येथील राज्यस्तरीय स्पर्धेसाठीचा अचूक नेम साधला.

#### किक-बॉक्सिंग :

वेगवेगळ्या पध्दतीने किक मारण्याच्या कौशल्यात परीपूर्ण असलेल्या संकेत फरादिने आपल्या किकचा व

बॉक्सिंगच्या पंचचा योग्य वापर करत राज्यस्तरीय स्पर्धेत छाप टाकली.

#### मास व बेल्ट रेसलिंग :

शालेय क्रिडा प्रकारामध्ये हा यावर्षी नवीन खेळ आला आहे. नवीन खेळ असूनही विकास सूळ, किरण राजगे, दत्ता सुळ या खेळाडूंनी मनापासून सराव करत राज्य व विभागीय स्पर्धेपर्यंत मजल मारली.

#### तलवारबाजी :

असिफ शेख या तलवारबाजाच्या तळपलेल्या तलवारीने विभागीय स्पर्धेचा वेध घेतला.

#### बॅडमिंटन :

बॅडमिंटन खेळामध्ये अमन मूलाणीने चमकदार कामगिरी केल्यामुळे त्याची रत्नागिरीतील विभागीय स्पर्धेसाठी निवड झाली.

#### पॉवर-लिफ्टिंग :

सौरभ रावखडे व गौरव भोईटे या खेळाडूंनी पॉवरचा व वजन उचलण्याच्या कौशल्यांचा योग्य समन्वय साधत कोल्हापूरतील विभागीय स्पर्धेत छाप टाकली.

#### बॉक्सिंग :

बॉक्सिंग स्पर्धेमध्ये पूजा पवार या विद्यार्थीनीने चपळाईने हात चालवत विभागीय स्पर्धेपर्यंत मजल मारली.

#### कुडो :

यावर्षीपासून शालेय स्तरावर आलेल्या या खेळात साईराज सुर्वे व प्रगती इंदलकर या खेळाडूंनी या खेळातील कौशल्यांद्वारे स्पर्धेत वेगळीच चुणुक दाखवत विभागीय स्पर्धा गाजवली.

#### जलतरण :

अप्रतिम जलतरण कौशल्य असलेले किरण शेळार व मयूर सावंत या विद्यार्थ्यांनी विभागीय स्पर्धेत आपला टसा उमटवला.



**योगा :**

योग विद्येमध्ये पारंगत असलेला व योगातील आसनांवर प्रभूत्व असलेला खेळाडू अनिकेत कुंभारने दर्जेदार कामगिरी केली.

**जंप-रोप :**

अक्षय कदम या खेळाडूने पायाची ताकद व स्किपींग रोप यामधील जंप करतानाची लय इतकी सुंदर पकडलेली की त्यामुळे त्याची चिपळूण येथील विभागीय स्पर्धेसाठी निवड झाली.

अशाप्रकारे खेळाडूंनी एकाग्रता, सराव, जिद्द, आत्मविश्वास, चिकाटी या गुणांच्या जोरावर दैदिप्यमान यश संपादित केले आहे. हे यश संपादन करण्यासाठी मोलाचे सहकार्य लाभले ते आमच्या महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ व जिमखाना प्रमुख विकास जाधव सर यांचे. प्राचार्य नेहमीच आमच्या पाठीशी आधारस्तंभाप्रमाणे उभे असतात. यशस्वी झाल्यानंतर कौतुकाची व शाबासकीची थाप ते आमच्या पाठीवर टाकतात. नेहमी यशस्वीतेच्या दिशेने वाटचाल करण्यासाठी प्रोत्साहन देतात. आम्ही हे जे कर्तृत्ववान खेळाडू घडवू शकलो यासाठी बहुमोल सहकार्य लाभले ते सहकारी प्राध्यापक व प्रशासकीय स्टाफचे. या सर्वांच्या वेळोवेळी मिळालेल्या सहकार्यामुळे जिमखाना विभागाचा आलेख नेहमीच चढता राहिला आहे आणि यापुढेही हा आलेख चढता ठेवण्याचा मी प्रयत्न करेन.

प्रा.भोई व्ही.व्ही.  
ज्युनि.जिमखाना विभागप्रमुख

**गुणवत्ता वाढ प्रकल्प**

**कला व वाणिज्य**

सन २०१४-२०१५ या शैक्षणिक वर्षात गुणवत्तावाढ विभागामार्फत इ.१२वी कला व वाणिज्य

मधील गुणवत्ताधारक विद्यार्थ्यांची निवड करून त्यांच्यासाठी विषयावर जादा तासिका व बोर्ड परीक्षेच्या प्रश्नपत्रिका सोडवून घेण्यात आल्या. तसेच दिनांक १३ ते १७ जानेवारी या कालावधीत गुणवत्तावाढ व्याख्यानमालेचे आयोजन करण्यात आले. यामध्ये विविध विषयांतील इतर महाविद्यालयातील अनुभवी व तज्ञ प्राध्यापकांना बोलावून विद्यार्थ्यांना अचूक व सखोल मार्गदर्शन करण्यात आले. या व्याख्यानमालेच्या मार्गदर्शनाचा विद्यार्थ्यांची गुणवत्ता वाढण्यासाठी मदत झाली आहे. अशाप्रकारे गुणवत्तावाढ हा उपक्रम यशस्वीपणे पार पाडण्यासाठी गुणवत्तावाढ प्रकल्प प्रमुख प्रा.व्ही.एस.वहागांवकर, सहाय्यक प्रा.एस.बी.पवार यांनी उपक्रमाचे सर्व नियोजन करून परिश्रम घेतले. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांनी मोलाचे मार्गदर्शन व सहकार्य केले. तसेच सर्व विषय शिक्षक, शिदोकेतर कर्मचारी व विद्यार्थी यांनी हा उपक्रम यशस्वीपणे राबविण्यास मदत केली.

प्रा.व्ही.एस.वहागांवकर  
गुणवत्तावाढ समिती प्रमुख

**कला व वाणिज्य विभाग**

सन २०१४-२०१५ या शैक्षणिक वर्षात या विभागामार्फत विविध उपक्रम राबविण्यात आले. इयत्ता ११वी इ.१२वी कला व वाणिज्य प्रवेश प्रक्रिया शांततेने व सुरळीतपणे पार पाडली. इयत्ता १२वी बोर्ड परीक्षेच्या उत्कृष्ट निकालाची परंपरा कायम राखत बोर्ड परीक्षेमध्ये इ.१२वी वाणिज्य शाखेचा १२ टक्के तर कला शाखेचा ६८ टक्के निकाल लागला आहे. इ.११वी व इ.१२वीच्या प्रत्येकी कला शाखेच्या ३ व वाणिज्य शाखेच्या २ अनुदानित तुकड्या आहेत. यामध्ये एक हजाराहून अधिक विद्यार्थी शिक्षण घेत आहेत. मा.प्राचार्यांच्या मार्गदर्शनाखाली गतवर्षीप्रमाणेच एकूण ६५ शाळांना भेटी देऊन 'प्रज्ञावंत शोध मोहिम' राबविण्यात आली. सर्व प्राध्यापकांच्या सहकार्याने व प्रयत्नाने ही मोहिम यशस्वीपणे पार पाडली.



इ. १९वीच्या कला व वाणिज्य विभागामधील नवगतांचे स्वागत कार्यक्रम घेऊन पाहुण्यांच्या व प्राचार्यांच्या हस्ते नवागतांचे स्वागत करण्यात आले व सर्व नवीन प्रवेश घेतलेल्या विद्यार्थ्यांना महाविद्यालयाची परंपरा व शिस्त याबद्दलची माहिती सांगून त्यांच्याकडून ती परंपरा व शिस्त कायम राखण्याबद्दल सांगण्यात आले. महाविद्यालयाचा निकाल व गुणवत्ता वाढीसाठी महाविद्यालयातील गुणवत्तावाढ प्रकल्पांतर्गत समिती प्रमुख प्रा.वहागांवकर व्ही.एस. व सहाय्यक प्रा.पवार एस.बी. यांनी गुणवत्ताधारक विद्यार्थ्यांची निवड करून त्यांच्यासाठी जादा तास, वैयक्तिक मार्गदर्शन, जानेवारीत तज्ञ विषय प्राध्यापकांची व्याख्याने तसेच प्रत्येक विद्यार्थ्यांकडून सराव प्रश्नपत्रिका सोडवून घेण्यात आल्या. अशाप्रकारे विद्यार्थ्यांची गुणवत्तावाढविण्यासाठी सर्व विषय शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी व विद्यार्थी यांनी मोलाचे सहकार्य केले. उन्हाळ्यात वासंतिवर्ग इ. १२वी साठी घेणेत आले.

इ. १२वी इ. १९वीच्या विद्यार्थ्यांचे पालक मेळावे आयोजित करण्यात आले. यामध्ये पालकांना त्यांच्या पाल्याचे सहामाही परीक्षा, पूर्वपरीक्षेचे गुण सांगून व पाल्याच्या अभ्यासात प्रोत्साहन देण्यासाठी उद्बोधन करण्यात आले. तसेच चालू शैक्षणिक वर्षापासून सर्व विद्यार्थ्यांच्या पालकांना त्यांच्या पाल्यांची मार्क व उपस्थिती एस.एम.एस. द्वारे पाठविण्याचा उपक्रम चालू करण्यात आला. यासाठी प्रा.यु.एच.कांबळे यांनी व तसेच समितीतील सहकाऱ्यांनी परिश्रम घेतले.

सहल विभागामार्फत सहल काढण्यात आली यात विद्यार्थी व प्राध्यापकांचा समावेश होता. नायगांव बनेश्वर, बालाजी मंदिर, नारायणपूर, सासवड, जेजुरी या ऐतिहासिक स्थळांना भेटी दिल्या यासाठी समिती प्रमुख प्रा.पोवार ए.जी. व समितीतील सदस्यांनी विशेष परिश्रम घेतले.

महाविद्यालयात बापूजी साळुंखे जयंती निमित्त प्रभात फेरी, व्याख्यान आयोजित करण्यात आले. तसेच १२

जानेवारी स्वामी विवेकानंद जयंती प्रभात फेरी व 'जय जवान जय किसान' व्याख्यानमाला आयोजित करण्यात आली. मा.प्राचार्य डॉ.शेजवळ आर.व्ही. यांच्या कार्यकुशलतेने अनेक कार्यक्रमाचे नियोजन करण्यात आले. उदा.सावित्रीबाई फुले जयंती, महिला दिन, पर्यावरण दिन, शाहू महाराज जयंती, आण्णाभाऊ साठे जयंती, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर जयंती, विवेकानंद जयंती सप्ताह, डॉ.बापूजी साळुंखे जयंती, संस्थामाता सुशीलादेवी जयंती कार्यक्रम साजरे करण्यात आले. याचबरोबर विद्यार्थ्यांच्या सर्वांगीण विकासासाठी विविध निबंध, वक्तृत्व स्पर्धा, करियर मार्गदर्शन व्याख्याने, 'शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे' राज्यस्तरीय निबंध, चित्रकला, वक्तृत्व स्पर्धा अशा विविध उपक्रमांचे आयोजन करण्यात आले. प्रा.भोई व्ही.व्ही. यांनी राष्ट्रीय, राज्यस्तरावर विविध खेळाडू सहभागी करून विविध स्पर्धांमध्ये भरघोस यश संपादन केले. यासाठी मा.प्राचार्य व कला वाणिज्य विभागातील सर्व प्राध्यापकांचे मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले.

ज्युनिअर कला व वाणिज्य परीक्षा विभागामार्फत विभागप्रमुख प्रा.कोळी बी.एस. तसेच सहकारी प्रा.सौ.गीतांजली साळुंखे, प्रा.कोळी पी.डी. यांनी वर्षभरातील सर्व परीक्षांचे व्यवस्थित नियोजन करून सर्व चाचणी, सत्र व पूर्व परीक्षा चांगल्याप्रकारे पार पाडल्या.

ज्युनिअर कला व वाणिज्य वेळापत्रक विभागप्रमुख प्रा.बदने एल.जी तसेच सहकारी प्रा.खुर्द ए.बी. यांनी संपूर्ण वर्षभरातील तासांचे वेळापत्रक व नियंत्रण चांगल्याप्रकारे पार पाडले.

महाविद्यालयाचे कामकाज सुरळीत पार पाडण्यासाठी शिस्त कमिटी प्रमुख व इतर सर्व सदस्यांनी गैरवर्तन करणाऱ्या मुलांच्या पालकांना बोलावून शिस्त कमिटीमार्फत लेखी हमीपत्र घेऊन समज देण्यात आली.

विविध परीक्षांच्या प्रश्नपत्रिका काढण्यासाठी विद्यासमिती मार्फत प्रश्नपत्रिका शिबीर आयोजित करण्यात



आले. प्रा.यादव आर.डी., प्रा.गीतांजली साळुंखे, प्रा.कोळी, प्रा.सौ.पवार आय.पी. यांनी परिश्रम घेतले व हे शिबीर यशस्वीपणे पार पाडले.

अशाप्रकारे ज्युनिअर कला व वाणिज्य विभागातील सर्व प्राध्यापकांनी वर्षभरातील सर्व विभागांचे कामकाज अतिशय चांगल्याप्रकारे पार पाडण्यास मदत केली तसेच प्रा.प्राचार्य डॉ.शेजवळ आर.व्ही. यांचेही वेळोवेळी मार्गदर्शन व सहकार्य लाभले.

प्रा.व्ही.एस.बहागांवकर  
विभागप्रमुख

### प्राध्यापक प्रबोधिनी

सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात प्राध्यापक प्रबोधिनी अंतर्गत व्याख्यानांचे आयोजन करण्यात आले. दि.१९ सप्टेंबर २०१४ रोजी लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयातील इतिहास विभागप्रमुख प्रा.चिकमट प्रतिभा यांचे 'ऐतिहासिक सातारा' या विषयावर व्याख्यान आयोजित केले होते. सातारच्या संदर्भात ऐतिहासिक ते आधुनिक काळापर्यंत होत गेलेले बदल घटनांच्या माध्यमातून त्यांनी स्पष्ट केले.

दि.३० जानेवारी २०१५ रोजी समाजशास्त्र विषयाचे प्राध्यापक प्रा.श्री.कांबळे यु.एच. यांचे 'राजर्षी शाहू महाराजांचे जीवनकार्य, त्यांचे सामाजिक, शैक्षणिक कार्यंचे समग्र दर्शन घडविले.

वरील व्याख्यानांचे आयोजन करण्यात महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.राजेंद्र शेजवळ तसेच कला, वाणिज्य विभागप्रमुख प्रा.बहागांवकर व्ही.एस., प्रा.सौ.पवार आय.पी. यांचे मार्गदर्शन मिळाले. माझे सहकारी प्रा.पोवार ए.जी. यांचेही सहकार्य मिळाले. प्रा.कोळी पी.डी. यांनी फलकलेखन करून सहकार्य दिले.

प्रा.श्री.बी.एस.नागणे  
प्राध्यापक प्रबोधिनी प्रमुख

### वेळापत्रक व तासिका नियंत्रण- कला व वाणिज्य

सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात ज्यु.कला व वाणिज्य विभागात इ.११वी, १२वी कला अनुक्रमे ३+३ आणि वाणिज्य २+२ अशा एकूण १० पूर्ण अनुदानित तुकड्या असून एकूण १५ विषय, १९ शिक्षक व ९१८ विद्यार्थी संख्या (कला ४८९ व वाणिज्य ४३७) यांचा अंतर्भाव आहे.

या विभागाची वर्षभरातील संपूर्ण कामकाज सातत्याने व्यवस्थितपणे पार पडले. वेळोवेळी होणाऱ्या परीक्षा, सहशालेय उपक्रम व विभागीय संयुक्त कार्यक्रमाच्या आवश्यकतेनुसार विद्यार्थीहित इ. सर्व डोळ्यांपुढे ठेऊन सकारात्मक दृष्टीकोनातून तासिका व्यवस्थापन केले. या विभागाचे काम सुरळीतपणे पारपाडण्यासाठी प्रा.ए.बी.खुर्द यांचे वेळापत्रक बनविण्यासाठी आणि सहकाऱ्यांच्या रजेच्या व बदली कालावधीत सर्व सहकारी प्राध्यापक वर्गाचे विशेषतः प्रा.व्ही.एस.बहागांवकर, प्रा.सौ.आय.पी.पवार, प्रा.कोळी बी.एस., प्रा.आर.डी.यादव यांचे त्याचप्रमाणे शिपाई श्री.दीपक लाड, श्री.प्रकाश उवाळे यांचे सहकार्य मिळाले. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचेही वेळोवेळी मार्गदर्शन लाभले.

प्रा.एल.जी.बदने  
विभागप्रमुख

### निबंध व वक्तृत्व विभाग

“ईश्वराने एक गंमत केली त्याने फुलांना गंध दिला,  
फुलपाखराना रंग दिला, फळांना स्वाद दिला,  
आणि वक्त्यांना शब्द दिला.”

आणि याच शब्दांच्या जोरावर माणसाला जगण्याची सुंदर कला अवगत व्हावी, यासाठीचे सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात निबंध-वक्तृत्व विभागाने वर्षभर विविध कार्यक्रमांचे आयोजन केले.



शुक्रवार, दि. १६ जाने., २०१५ रोजी डॉ.वापूजी साळुंखे निबंध, वक्तृत्व व चित्रकला स्पर्धांचे आयोजन केले. विवेकानंद परिवारात ज्ञानग्रहण करत असताना या अशा निबंध स्पर्धामधून एखादा विद्यार्थी उत्तम लेखक बनू शकतो. एखादा उत्तम वक्ता, एखादा उत्तम चित्रकार म्हणून नावारुपाला येऊ शकतो. हीच वापूजींची मनोमन इच्छा होती. आणि याच स्वप्नपूर्तीसाठी या विभागाने स्पर्धांचे आयोजन केले. या स्पर्धांमध्ये खालील विद्यार्थ्यांना यश मिळाले.

**निबंध स्पर्धा**

- |                         |                        |
|-------------------------|------------------------|
| १) पवार वर्षारिणी सुरेश | 11 <sup>th</sup> Sci B |
| २) शिंदे वर्षा हणमंत    | 11 <sup>th</sup> Sci B |
| ३) धिटे अमृता सुरेश     | 11 <sup>th</sup> Sci A |

**वक्तृत्व स्पर्धा**

- |                           |                        |
|---------------------------|------------------------|
| १) कारडे प्रियंका महेंद्र | 11 <sup>th</sup> Sci B |
| २) सरठ सुरज सदाशिव        | 11 <sup>th</sup> Sci B |

**चित्रकला स्पर्धा**

- |                           |                        |
|---------------------------|------------------------|
| १) बर्गे प्राजक्ता प्रताप | 11 <sup>th</sup> Sci B |
| २) खलदकर तन्वी व्ही.      | 11 <sup>th</sup> Sci A |
| ३) जाधव विनायक प्रकाश     |                        |

या विभागाचे काम यशस्वीपण पार पाडत असताना विभागातील सदस्य श्री.पी.डी.कोळी व श्री.आगळे व्ही.पी. यांचे सहकार्य लाभले. तसेच ज्युनि. आर्ट्स, कॉमर्स विभागाचे प्रमुख श्री.एस.व्ही.वहागांवकर, सौ.आय.पी.पवार आणि सर्व स्टाफचे सहकार्य लाभले.

महाविद्यालयाचे खंबीर नेतृत्व मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचे विशेष मार्गदर्शन लाभले.

प्रा.गीतांजली साळुंखे  
निबंध-वक्तृत्व विभाग समितीप्रमुख

**ज्यु. सायन्स/आर्ट्स/कॉमर्स भितीपत्रिका**

क्षण जगून झालेले  
जुन्या पानात जपावे  
डोब्यातील पाण्यानेच  
नवे पान उलटावे

थोरा मोठ्यांच्या आयुष्यात आलेल्या कडूगोड आठवणींना उजाळा देण्यासाठी त्यांच्या प्रति मनात असलेली आदराची भावना व्यक्त करण्यासाठी ज्यु.सायन्स/आर्ट्स/कॉमर्सच्या विद्यार्थी-विद्यार्थिनींची आठवणीतील पाने म्हणजेच 'सदाफुली' ही भितीपत्रिका.

शब्दरुपी पानाफुलातून फुललेल्या 'सदाफुली' या भितीपत्रिकेचे उद्घाटन मा.प्र.कुलगुरु डॉ.अशोकराव भोईट यांच्या हस्ते मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या प्रमुख उपस्थितीत पार पडले.

या विभागासाठी आमच्या महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचे मार्गदर्शन लाभले. तसेच माझे सहकारी प्रा.श्रीमती हरनोळ पी.एम., प्रा.सौ.भोरे एम.ए. व इतर सर्व सहकारी यांचेही सहकार्य लाभले.

प्रा.श्रीमती शिंदे जे.एस्. प्रा.पोवार ए.जी.  
भितीपत्रिका विभागप्रमुख

**लैंगिक अत्याचार निवारण समिती**

महिलांमध्ये त्यांच्या क्षमतेच्या जाणीव निर्मितीबरोबरच जीवनाच्या प्रत्येक टप्प्यावर त्यांच्यात आत्मविश्वास निर्माण करणे म्हणजे सबलीकरण होय.

असा आत्मविश्वास सबलीकरण विद्यार्थीनींमध्ये निर्माण करण्यासाठी लैंगिक अत्याचार निवारण समिती नेहमीच काम करत असते. या समिती अंतर्गत 'महिलांविषयक कायदे' या विषयावर अॅड.सोनाली औंधकर यांचे व्याख्यान आयोजित केले गेले.



स्व-संरक्षण, आत्मनिर्भरता ही काळाची गरज असून मुलींना निर्भया वनणे कसे आवश्यक आहे यासाठी असणारे कायदे, महिला संघटना याविषयी त्यांनी बहुमोल मार्गदर्शन केले.

हे सर्व कामकाज पार पाडत असताना महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. आर.व्ही.शेजवळ यांचे विशेष मार्गदर्शन लाभले. तसेच ज्युनियर कला-वाणिज्य विभाग प्रमुख सौ.आय.पी.पवार, समितीतील सदस्य प्रा.श्रीमती नागणे बी.एस., प्रा.श्रीमती इनामदार जे.पी, प्रा.निकम एस.एस. आणि महाविद्यालयातील सर्व प्राध्यापक भगिनींचे सहकार्य लाभले.

प्रा.सौ.जी.एस.साळुंखे  
लैंगिक अत्याचार निवारण समिती

### सहल विभाग-कला व वाणिज्य

शैक्षणिक वर्ष २०१४-२०१५ या वर्षी कास, वामणोली याठिकाणी वर्षा सहलीचे आयोजन करण्यात आले. ही सहल निसर्गरम्य व नयनमनोहर अशा ठिकाणी आयोजित करण्यात आली होती. त्यानंतर २१ जानेवारी, २०१५ रोजी एक दिवसीय शैक्षणिक सहलीचे आयोजन करण्यात आले. ही सहल नायगाव, बनेश्वर, प्रतिवालाजी, नारायणपूर, सासवड, जेजुरी, मोसाव, सोमेश्वर, दुग्धप्रकल्प भेट अशा नैसर्गिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, सहकारी संस्था ठिकाणी आयोजित केली.

सहलीचे नियोजन सहल विभागप्रमुख प्रा.पोवार ए.जी. यांनी केले. या सहलीमध्ये प्रा.पी.डी.कोळी, प्रा.एल.जी.वदने, प्रा.व्ही.व्ही.भोई यांच्या सहकार्याने व प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांच्या मार्गदर्शनाखाली उत्साही वातावरणात पार पडली.

प्रा.ए.जी.पोवार  
सहल विभागप्रमुख

### विद्यार्थी संसद २०१४-२०१५

#### ज्युनिअर कला व वाणिज्य

सन २०१४-१५ या वर्षासाठी गुणवत्ता प्रमाण मानून खालील विद्यार्थ्यांची वर्गप्रतिनिधी म्हणून निवड करण्यात आली व विद्यार्थी संसद स्थापण्यात आली.

इ.११वी कला	सपकाळ शशिकांत सुरेश
इ.११वी वाणिज्य	मोरे रविराज स्मेश
इ.१२वी कला सोनटक्के	प्रमोद लहुराज
इ.१२वी वाणिज्य	सध्यद मुस्कान हमिद

प्रा.ए.बी.खुर्द  
समितीप्रमुख

### विद्यार्थी संसद प्रतिनिधी समिती

#### ज्युनियर सायन्स विभाग

शैक्षणिक वर्ष २०१४-२०१५ मध्ये ज्युनियर सायन्स विभागात गुणवत्ता प्रमाण मानून खालील विद्यार्थ्यांची वर्ग प्रतिनिधी म्हणून निवड केली व विद्यार्थी संसद स्थापन केली गेली.

वर्ग	विद्यार्थ्यांचे नाव	भिळालेले गुण
११वी सायन्स	कु.मुतालिक जान्हवी प्रभात	९७.०२%
१२वी सायन्स	चि.शेख सुहेब नईम	८३.३८%

प्रा.सौ.आर.डी.पिसे  
ज्यु.विद्यार्थी संसद समिती, चेअरमन

### सांस्कृतिक विभाग

#### कला-वाणिज्य

सन २०१४-१५ या शैक्षणिक वर्षात या विभागातर्फे अनेक उपक्रम सातत्याने राबविले. ११वी मध्ये नव्याने प्रवेशित झालेल्या विद्यार्थ्यांचे स्वागत करण्यासाठी 'नवगतांचे स्वागत' कार्यक्रम घेतला. प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांनी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करून भावी आयुष्यासाठी प्रेरित केले.



शिक्षण महर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे यांचे शैक्षणिक योगदान, त्याग, त्यांचे आदर्श आचार-विचार विद्यार्थ्यांपर्यंत पोहचवावेत व त्यांच्या कार्याचे स्मरण व्हावे म्हणून ८ ऑगस्ट २०१४ रोजी डॉ.बापूजी साळुंखे यांची पुण्यतिथी महाविद्यालयात साजरी करण्यात आली. यावेळी प्रा.सौ.गीतांजली साळुंखे व प्रा.कु.प्रतिभा चिकमठ यांनी बापूजींच्या जीवनकार्याची माहिती विद्यार्थ्यांना दिली.

४ सप्टेंबर २०१४ रोजी 'संस्थामाता श्रीमती सुशीलादेवी साळुंखे जयंती' साजरी करण्यात आली. यावेळी प्रमुख पाहुणे मा.एन.जी.गायकवाड (माजी सहसचिव, श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर) यांचे 'आठवणीतील संस्थामाता' या विषयावर व्याख्यान आयोजित केले. सुशीलादेवी साळुंखे यांनी संस्थेतील विद्यार्थ्यांना प्रेम आणि माया दिली. बापूजींच्या ज्ञानयज्ञामध्ये झोकून देत बहुजनांच्या शिक्षणासाठी त्या चंदनासारख्या झिजल्या असे प्रतिपादन त्यांनी केले.

५ सप्टेंबर रोजी शिक्षक दिनानिमित्त प्रमुख पाहुणे प्राचार्य डॉ.अशोक भोईटे (प्र.कुलगुरु, शिवाजी विद्यापीठ) यांच्या हस्ते उल्लेखनीय काम केलेल्या प्राध्यापकांचा सत्कार करण्यात आला.

प्रा.यु.एच.कांबळे  
समितीप्रमुख

## पालक शिक्षक संघ

### कला व वाणिज्य

इयत्ता १२वी चे वर्ष हे विद्यार्थ्यांच्या संपूर्ण भविष्याला दिशा देणारे वर्ष असते. विद्यार्थ्यांचा सर्वांगीण विकास यासाठी महाविद्यालयाने विविध उपक्रम आखलेले असतात. यासंदर्भात विचार विनिमय करण्यासाठी शिक्षक पालक मेळावा आयोजन केले जाते.

या शैक्षणिक वर्षात शुक्रवार, दि.१९-१२-२०१४ रोजी इ.१२वी वर्गातील विद्यार्थ्यांच्या पालक मेळाव्याचे

आयोजन करण्यात आले. यावेळी पालकांना वर्षभराच्या कामाची माहिती देण्यात आली. विद्यार्थी व पालकांच्या अडचणी समजून घेण्यात आल्या. पालकांनी विद्यार्थ्यांचा अभ्यास व समस्यांकडे लक्ष द्यावे तसेच शिक्षकांशी सुसंवाद ठेवावा असे ठरविण्यात आले. पालक मेळाव्यांना प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांनी महाविद्यालयात असलेल्या विविध सोयी सुविधांची माहिती देऊन मार्गदर्शन केले.

कला-वाणिज्य विभागप्रमुख प्रा.व्ही.एस.वहागावकर, प्रा.सौ.आय.पी.पवार तसेच सदस्य प्रा.जी.जी.निंबेकर यांचे सहकार्य लाभले तसेच सर्व वर्गीशिक्षक, इतर प्राध्यापक व शिक्षकेतर सेवक यांचीही मोलाची मदत मिळाली.

प्रा.यु.एच.कांबळे  
समितीप्रमुख

## सांस्कृतिक विभाग (ज्यु.सायन्स)

महाविद्यालयाचा २०१४-१५ सालचा सांस्कृतिक विभागाचा अहवाल आपणासमोर मांडताना विलक्षण आनंद होत आहे.

सांस्कृतिक विभागप्रमुख या नात्याने हे शिवधनुष्य फेलताना विभागातील सर्व सहकाऱ्यांचे सहकार्य सदैव सोबत राहिले म्हणून विविध कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले.

बापूजींचे शिक्षणातील योगदान, त्याग, त्यांचे आदर्श, आचार-विचार विद्यार्थ्यांपर्यंत पोहचवावेत, त्यांच्या विचारांचे स्मरण व्हावे, यासाठी '८ ऑगस्ट' रोजी शि.म.प.पू. डॉ.बापूजी साळुंखे पुण्यतिथी साजरी करण्यात आली.

९ ऑगस्ट रोजी ११ वी सायन्सच्या विद्यार्थ्यांचे म्हणजेच 'नवागतांचे स्वागत' हा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला.

४ सप्टेंबर रोजी संस्थामाता श्रीमती सुशीलादेवी साळुंखे जयंती साजरी करण्यात आली. त्यावेळी 'आठवणीतील संस्थामाता' या विषयावर व्याख्यान आयोजित केले.



खास विद्यार्थ्यांच्या आग्रहास्तव शिक्षकांप्रती आदराची भावना व्यक्त करण्यासाठी '५ सप्टेंबर' शिक्षक दिन या विभागाच्या वतीने साजरा करण्यात आला.

३ जाने. रोजी 'सावित्रीबाई फुले जयंती', ११ जाने. लालबहादूर शास्त्री पुण्यतिथी साजरी केली. वर्षभरात अनेक विचारवंतांचे जयंती व पुण्यतिथीचे दिन साजरे करण्यात आले.

१२ ते १९ जानेवारी-विवेकानंद सप्ताहानिमित्त पूर्ण सप्ताहात रोज व्याख्यानांचे आयोजन केले गेले.

वर्षभरातील सर्व कार्यक्रमास मा.प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ यांचे मार्गदर्शन लाभले तसेच सांस्कृतिक विभागातील प्रा.लोकरे सर, प्रा.कांबळे यू.एच., प्रा.कारभारी एन्.एम्. व प्रशासकीय विभाग यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा.सौ.एम्.एस्.पाटील  
सांस्कृतिक विभागप्रमुख, (ज्यु.सायन्स)

## JEE/MH-CET विभाग-विज्ञान

### बहादुरीय पॅटर्नचे उत्तुंग यश

आजचे युग हे स्पर्धेचे युग असून त्यामध्ये महाविद्यालयाचे विद्यार्थी यशस्वी व्हावेत यासाठी २०११-१२ या वर्षापासून १२वी सायन्स विभागासाठी 'सर्वांसाठी JEE/MH-CET' ही संकल्पना बहादुरीय पॅटर्न राबविण्यास सुरुवात झाली.

JEE व MH-CET च्या बदललेल्या अभ्यासक्रमाला व परीक्षेला सामोरा जाणारा विद्यार्थी घडावा यासाठी वर्षभर नियोजनाप्रमाणे JEE/CET चे अध्यापन केले. दोन चाचणी परीक्षा व पूर्ण अभ्यासक्रमावर तीन परीक्षा घेण्यात आल्या. यावर्षी विद्यासमितीने तयार केलेल्या पुस्तकांचे वाटप विद्यार्थ्यांना केले. JEE/CET ची पुस्तक निर्मितीमध्ये आमच्या महाविद्यालयातील प्राध्यापकांचा सक्रीय सहभाग होता.

दि.३१-१२-२०१४ ते ५-१-२०१५ चा दरम्यान JEE/MH-CET ची व्याख्यानमाला घेण्यात आली.

परीक्षांचा सराव व्हावा यासाठी ११वी च्या विद्यार्थ्यांच्या दोन चाचण्या व पूर्ण अभ्यासक्रमावर दोन परीक्षा घेण्यात आल्या. विद्यासमितीने तयार केलेल्या पुस्तकांचे वाटप XI च्या विद्यार्थ्यांना करण्यात आले. बहादुरीय पॅटर्नचे उत्तुंग यश-

यावर्षी MH-CET परीक्षेत वरदा घाडगे हिने ५५२/७२० मार्कस् मिळवून जिल्ह्यात प्रथम क्रमांक पटकावला. तिला नायर कॉलेज मुंबई येथे Medical साठी प्रवेश मिळाला.

तसेच JEE परीक्षेत संकेत चिहमे याने १६९/३६० मार्कस् मिळवून जिल्ह्यात तिसरा क्रमांक पटकावला. त्याला IIT पवई येथे प्रवेश मिळाला.

विभागाचे कामकाज यशस्वीरित्या पार पाडण्यासाठी प्राचार्य डॉ.शेजवळ, ज्यु.सायन्स प्रमुख, प्रा.कारभारी यांनी बहुमोल मार्गदर्शन केले. विभागाचे सदस्य प्रा.सौ.एस.के. निंबाळकर, प्रा.एस.एस.पाटील, प्रा.एन.व्ही.पाटील यांचे सहकार्य लाभले. सर्व प्राध्यापकांनी मोलाची मदत केली.

प्रा.सौ.एस.वाच.पाटणे  
JEE/MH-CET कमिटीप्रमुख

### प्राध्यापक प्रबोधिनी (विज्ञान विभाग)

सन २०१४-२०१५ या शैक्षणिक वर्षात विज्ञान विभागामार्फत काळानुरूप अधिक अद्ययावत ज्ञान प्राध्यापकांना संपादन होण्यासाठी विविध विषयांवर व्याख्यान आयोजित करण्यात आली.

दिनांक १९ सप्टेंबर २०१४ रोजी 'ऐतिहासिक सातारा' या विषयावर प्रा.चिकमत पी.सी. यांचे, तसेच दिनांक ३१ डिसेंबर २०१४ रोजी प्रा.सौ.पाटणे एम्.वाच. यांनी 'अजिंक्यतारा' याविषयी मौलिक माहिती दिली.



दिनांक २३ जानेवारी २०१५ रोजी दूरदर्शन केंद्राला भेट देऊन प्रक्षेपणाविषयी माहिती जाणून घेतली.

प्राध्यापक प्रबोधिनी विभागाचे कामकाज व्यवस्थितपणे पार पाडण्यासाठी प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ सर तसेच ज्युनिअर सायन्स विभागप्रमुख प्रा.एन्.एम्.कारभारी सरांचे वेळोवेळी मार्गदर्शन लाभले. तसेच माझे सहकारी प्रा.पाटील एस्.वी. यांचेही मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा.ए.ए.धोरात  
समितीप्रमुख

### ज्युनि. विज्ञान-शिक्षक-पालक संघ

ज्युनि. विज्ञान विभागातील विद्यार्थ्यांच्या भविष्याच्या हट्टीने इ.११वी व १२वीची दोन्हीही वर्षे अतिशय महत्वाची मानली जातात. या वर्गातील विद्यार्थ्यांना त्यांच्या पालकांना महाविद्यालयाने सुरु केलेले सर्व उपक्रम याची माहिती मिळण्यासाठी शिक्षक-पालक संघ स्थापन केला. इयत्तेनुसार पालक मेळावे घेऊन शिक्षक-पालक-विद्यार्थी यांच्यामध्ये समन्वय व सुसंवाद साधला.

या शै.वर्षामध्ये दि.२८-८-१४ रोजी इ.११वी चा शिक्षक-पालक मेळावा आयोजित केला. या मेळाव्यात इ.११वी मध्ये सर्वांसाठी CET/JEE चे अध्यापन वर्ग घेऊन वर्षभर परीक्षेचे आयोजनाविषयी पालकांना मार्गदर्शन केले.

इ.१२वी विज्ञान वर्गाचा पालक मेळावा दि.९-१२-१४ रोजी आयोजित केला. हा पालकमेळावा दोन सत्रांमध्ये घेण्यात आला. प्रथम सत्र दु.२ ते ४ पर्यंत सर्व विद्यार्थी-शिक्षक-पालक यांच्यामध्ये घेतला गेला. सर्व विद्यार्थ्यांचे सत्र १ चे गुण कळवण्यात आले. त्यानुसार विद्यार्थ्यांच्या प्राॅग्रेसिव्ह वर्गाचे आयोजन करण्यात आले व त्याचे नियोजन देण्यात आले. सत्र २ मध्ये पालकांना एकत्रित घेऊन मा.प्राचार्यांनी मार्गदर्शन केले.

ज्युनि.विज्ञानचे प्रमुख प्रा.कारभारी एन.एम. तसेच विभागाचे सदस्य-प्रा.सौ.शिंदे व्ही.एस. व प्रा.सौ.पिसे आर.डी. यांचे सहकार्य लाभले. सर्व शिक्षक व प्रशासकीय सेवकांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

प्रा.श्री.एस.ए.मुसळे  
समितीप्रमुख

### ज्युनियर सायन्स सहल विभाग

या शैक्षणिक वर्षात ज्युनियर सायन्स विभागातील विद्यार्थ्यांमध्ये सामान्य ज्ञान, पर्यावरण विषय जाणीव, अभ्यासपूरक कौशल्ये वाढीला लागवेत तसेच या शाखेतील विद्यार्थ्यांमध्ये वैज्ञानिक हट्टीकोन निर्माण व्हावा व आपल्या देशाच्या समृद्ध, सांस्कृतिक आणि ऐतिहासिक वारशाची जाणीव त्यांना व्हावी यासाठी एक दिवसीय सहलीचे आयोजन केले होते.

दि.४ व ५ जानेवारी २०१५ या कालावधीत रायगड, मुरुड-जॉजिस व दिवे आगार इ.टिकाणी सहल आयोजित केली. रायगड किल्ल्याचा ऐतिहासिक अभ्यास, मुरुड-जॉजिसाच्या सांस्कृतिक व ऐतिहासिक अभ्यास व दिवे आगार येथे पर्यावरणाचा अभ्यास अशा विविध उद्देशाने काढलेल्या या सहलीमुळे विद्यार्थ्यांच्या व्यक्तिमत्त्व विकासाला नक्कीच मदत मिळाली असेल.

सहलीचे यशस्वी आयोजनासाठी प्राचार्य डॉ.आर.व्ही.शेजवळ, ज्यु.सायन्स विभागप्रमुख प्रा.एन.एम.कारभारी यांचे मार्गदर्शन लाभले. सहल विभागातील सहकारी प्रा.सौ.आर.डी.पिसे, प्रा.के.जे.इनामदार व सायन्स विभागाच्या सर्व प्राध्यापकांनी सहकार्य केले.

प्रा.श्री.एस.ए.मुसळे  
समितीप्रमुख